लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ इकतालीसवां अंक जुलाई–सितम्बर, 2022



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का स्वागत करते हुए
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्टाफ/राजभाषा)



उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदया का स्वागत करते हुए
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्टाफ/राजभाषा)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ इकतालीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(जुलाई–सितम्बर, 2022)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली–110124

सरकारी कामकाज हिंदी में करना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो कीजिए धीरे-धीरे आपको लगने लगेगा ये तो बहुत ही आसान है।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ इकतालीसवां अंक (जुलाई–सितम्बर, 2022)

अनुक्रमणिका

		पृ.सं.
	पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5
	पाठकों के नाम संदेश	6
	आपके पत्र	7

लेख

1.	स्वतंत्र भारत @ 75 : ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भर *विनय कुमार गर्ग*	14
2.	हिंदी पखवाड़े की महत्ता *सुश्री राजकुमारी शर्मा*	20
3.	स्वच्छ भारत, संरक्षित भारत, स्वस्थ भारत *दया सागर*	23
4.	सरकारी कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन *सुश्री मीना भारद्वाज*	25
5.	सौर ऊर्जा : ऊर्जा का अक्षय स्रोत *सुश्री नेहा यादव*	28
6.	देश की सर्वमान्य भाषा हिंदी *विनोद कुमार शर्मा*	31
7.	विश्व स्तर पर हिंदी का महत्व *सुश्री सं.ग. श्रीमती*	33
8.	क्रांतिकारियों का वसंती चोला *अभय राम सिंह*	34
9.	खुशहाल जीवन जीने के मूल–मंत्र *महेश म. जयसिंघानी*	36
10.	भाषा का सवाल कितना प्रासंगिक *प्रदीप तिवारी*	38
11.	देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका *उमाशंकर दुबे*	39

	पृ.सं.
12. स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका *अशोक कुमार सिंह*	41
13. जीवन में श्री राम और श्री कृष्ण *योगेश कुमार मिश्र*	43
14. कार्यालयों में बिजली की फिजूलखर्ची और उससे संबंधित कुछ प्रश्न – क्या – के माध्यम से *सुश्री आरती शर्मा*	46
15. भारत में जनसंख्या नियंत्रण कानून की प्रासंगिकता *डॉ. लाखा राम*	47
कहानी	
16. नई सुबह *प्रशांत त्रिम्बक कपाले*	50
17. अनुभूति *बी.एस. चौहान*	52
18. चल उड़ जा रे पंछी *संजय कुमार सिंह*	56
कविताएँ	
19. आत्मनिर्भर भारत *सुश्री सुमेधा अमर*	62
20. ग़ज़ल *सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'*	63
21. एक भारत, श्रेष्ठ भारत *सुश्री अनुराधा सूद*	64
22. जीवन – एक सफर *अमित कुमार*	65
23. नवयोवना *मेहरबान सिंह नेगी*	66
24. गुलमोहर यादों के *केदार नाथ प्रसाद*	68
25. माँ *रमेश वर्मा*	69
26. गज़लें *सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम'*	70
27. मुख्यालय में *हीरा बल्लभ भट्ट*	71
यात्रा वृत्तांत	
28. आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका (भाग–4) *कमलजीत सिंह रामुवालिया*	79



स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन
''लेखापरीक्षा प्रकाश''
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

एक सौ इकतालीसवां अंक
(जुलाई–सितम्बर, 2022)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

श्री के.एस. सुब्रमण्यन
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री मीनाक्षी
सहायक प्रशासन अधिकारी

श्री हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार

रचना चयन समिति

श्री अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री मीनाक्षी
सहायक प्रशासन अधिकारी

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेशंस
जी–194, सेक्टर–2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट– पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।



संपादकीय

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ इकतालीसवां अंक (जुलाई–सितम्बर, 2022), का प्रकाशन हम सबके लिए अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है।

भारत एक बहुभाषिक तथा विविध संस्कृति वाला देश है। हिंदी ही हमारी वैभवशाली संस्कृति की वाहक है। हिंदी की महत्ता को स्वीकार करते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और वर्ष 1953 से 14 सितम्बर को प्रति वर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। हिंदी दिवस महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारतीयों के अपनी भाषा में बोलने एवं लिखने के संघर्ष का प्रतीक है। यद्यपि, भारत की हर भाषा अनमोल है और इन्हें संरक्षित और प्रफुल्लित किया जाना चाहिए। राजभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा समर्पण हमारा दायित्व है। भारत बहुभाषी देश है, परंतु इसकी संस्कृति, संस्कार, सभ्यता और आत्मा में हिंदी बसती है जो हम सभी को एकसूत्र में पिरोने का काम करती है। हिंदी विश्व की उन्नत एवं वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है। आज हर क्षेत्र में हिंदी भाषा की आवश्यकता महसूस की जा रही है। यह केवल राजभाषा ही नहीं अपितु पूरे देश की संपर्क भाषा भी है और विश्वभर में इसका प्रचलन दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है।

विभागीय रचनाकारों ने कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करने, वर्ष भर कार्यालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों को प्रदर्शित करने तथा राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने की दिशा में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन एक सार्थक और सफल कदम है। यह पत्रिका अपनी प्रकाश की किरणें बिखेरती हुई राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के अपने लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर है।

अंत में मैं पत्रिका को सुसज्जित एवं लोकप्रिय बनाने के लिए सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादन में सहयोग देने वाले सहयोगियों को पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन हेतु बधाई देता हूँ तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग को बनाए रखने की आशा करता हूँ। पत्रिका के सफल प्रकाशन, उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
भवानी शंकर
प्रधान संपादक

नई दिल्ली

पाठकों के नाम संदेश

प्रिय पाठकवृन्द,

त्रैमासिक गृह पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ इकतालिसवां अंक आपके कर कमलों में है। केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों, उपक्रमों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसारार्थ हिंदी अनुभाग कार्यरत है जिसका मुख्य उद्देश्य समूचे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने से संबंधित अधिनियम, नियम, वार्षिक कार्यक्रम तथा मुख्यालय द्वारा इस संदर्भ में जारी किए गए आदेशों, अनुदेशों से कर्मचारियों को अवगत कराना है तथा चरणबद्ध तरीके से कार्यालय में कार्यान्वित करवाना है।

यह सच है कि कार्यालयों द्वारा पत्रिकाओं के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है तथापि इस उद्देश्य की पूर्ति तभी संभव हो पाएगी जब अधिक से अधिक कर्मचारी पाठक एवं लेखक के रूप में अपना सहयोग दें। ई–पत्रिका इस कार्यालय की बेवसाइट पर अपलोड की जाती है। इस विभाग से संबंधित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों से अनुरोध है कि वे सी. ए.जी. की बेवसाइट पर ई–पत्रिका के नये और पहले के संस्करण को डाउनलोड करके या ऑन स्क्रीन उसको पढ़ सकते हैं। अतः निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर लगातार अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहें। आपके सहयोग, समर्थन तथा उत्तरोत्तर बढ़ते लगाव के लिए सभी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि पाठकों से सुझाव हमें इसी प्रकार मिलते रहेंगे और हम अपनी पत्रिका को और उत्कृष्ट बना सकेंगे।

आपका शुभाकांक्षी

(अनिल कुमार पिलानी)

संपादक

नई दिल्ली



पूर्व अंकों की तरह इस अंक में भी प्रकाशित सभी रचनाएं न केवल श्रेष्ठ हैं अपितु उच्चकोटि की हैं।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक की ई–प्रति लिंक के माध्यम से ई–मेल द्वारा प्राप्त हुई है, तदर्थ धन्यवाद। पूर्व अंकों की तरह इस अंक में भी प्रकाशित सभी रचनाएं न केवल श्रेष्ठ हैं अपितु उच्चकोटि की हैं। विशेष रूप से सुश्री राजकुमार शर्मा द्वारा रचित 'सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर में उनके जीवन भर की उपलब्धियों को संक्षेप में दर्शाया गया है, सुश्री पूनम रानी की रचना 'लोहड़ी' में भारतीय संस्कृति की झांकी दिखती है, श्री विनोद कुमार शर्मा द्वारा रचित 'सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 : अवरोध एवं भविष्य से सरकारी सूचना से संबंधित भारतीय नागरिकों के अधिकारों की जानकारी प्राप्त होती है, श्री किरण पाल सिंह द्वारा रचित 'संसदीय राजभाषा समिति की कार्यविधि और कार्य–संचालन नियमावली' से राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु संवैधानिक नियमों तथा कार्यविधियों का ज्ञान होता है, सुश्री नेहा यादव की रचना 'शहीद दिवस 23 मार्च : जरा याद करो कुर्बानी' से स्वतंत्रता संग्राम में उनके संघर्ष की जानकारी मिलती है तथा देश के प्रति उनकी निष्ठा और सर्वोच्च बलिदान से पाठकों में देश भक्ति की भावना का संचार होता है एवं सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा' की गजल 'दो गजलें' उत्कृष्ट रचना है। रचनाएं ज्ञानवर्धक पठनीय एवं प्रभावपूर्ण हैं। पत्रिका की साज–सज्जा और मुद्रण भी उत्कृष्ट है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–I,
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

विभागीय कार्यालयों द्वारा हर बार प्रकाशन हेतु रचनाएं प्रेषित करना राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में एक सराहनीय कदम है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका की साज–सज्जा एवं मुद्रण उच्चकोटि का है। क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका के गौरव को बढ़ाया है एवं विभागीय कार्यालयों द्वारा हर बार प्रकाशन हेतु रचनाएं प्रेषित करना राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में एक सराहनीय कदम है। संपादक मंडल द्वारा रचनाओं का चयन बड़ी ही कुशलता से किया गया है जो कि संपादक मंडल की गहन साहित्यिक सोच एवं हिंदी के प्रति प्रेम एवं निष्ठा को दिखाता है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढ़ेरों शुभकामनाएं। आशा है कि हमारी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

कल्याण अधिकारी (रा.भा. अनुभाग)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–I,
राजस्थान, जयपुर

विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है।

कार्यालय की हिंदी ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष सधन्यवाद। यह अंक अपने आवरण पृष्ठ, साज–सज्जा, मुद्रण

स्पष्टता के कारण बहुत आकर्षक और मनोहारी लग रहा है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। इस अंक में प्रकाशित लेख 'भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का योगदान, सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 : अवरोध एवं भविष्य, वर्तमान में हिंदी का बढ़ता प्रभाव, हिमाचल की वादियों – पहाडियों का सैर–सपाटा, नया साल नयी आशा : कोविड के साथ जिन्दगी की भाषा, अनुरोध, गोमाता के दोहे व दो गजलें विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रूचिकर एवं प्रेरणादायक हैं, जो निःसंदेह हमारे ज्ञान में वृद्धि करती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान देगी। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया, प्रधान निदेशक का लेख 'आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका', भाग–3, सुश्री मीनाक्षी, सहायक प्रशासन अधिकारी का लेख 'नो ..... थैंक्स', श्री गौरव हारिथ, वरिष्ठ अनुवादक का लेख 'अनुतान अथवा सुर लहर', सुश्री पूनम रानी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक का लेख 'लोहड़ी' तथा श्री पंकज अरोरा, लिपिक की रचना 'दो बूंद' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II,
महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका में प्रकाशित किए विभिन्न चित्र भी काफी आकर्षक और मनोरम थे। हमें इस पत्रिका से काफी रोचक जानकारी मिली।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का अध्ययन करने के दौरान पत्रिका में 'भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का योगदान' का लेख एवं कविताओं में 'नया साल नयी आशा : कोविड के साथ जिंदगी की भाषा' काफी रोचक और हमारे लिए अभूतपूर्व अनुभव के रूप में थी। इसके अतिरिक्त यात्रा वृतांत 'आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका' का तृतीय भाग एवं सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा' की 'गजल' से मन काफी प्रभावित हुआ है। पत्रिका में प्रकाशित किए गये विभिन्न चित्र भी काफी आकर्षक और मनोरम थे। हमें इस पत्रिका से काफी रोचक जानकारी मिली, जिसके अनुभव से हम अपने कार्यालय के 'मितान' पत्रिका के प्रकाशन के आगामी अंकों में परिलक्षित करने का प्रयास करेंगे।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
छत्तीसगढ़, रायपुर

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं।

ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ उन्तालीसवां अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका मे प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं। सुश्री नेहा यादव की 'शहीद दिवस 23 मार्च : जरा याद करो कुर्बानी', सुश्री मीनाक्षी की 'नो.... थैंक्स', श्री देवानन्द कुमार सिंह की 'हमरो बचपन' एवं श्री संजीव कुमार की 'वर्तमान में हिंदी का बढ़ता प्रभाव' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका को सुरूचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
पंजाब, चण्डीगढ

ई–पत्रिकाओं का प्रकाशन पर्यावरण की दृष्टि से आवश्यक एवं वर्तमान में प्रासांगिक दोनों ही हैं, अतः इस संबंध में संपादक मंडल विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक की ई–संस्करण की प्राप्ति हुई, अतः आभार स्वीकार करें। ई–पत्रिकाओं का प्रकाशन पर्यावरण की दृष्टि से आवश्यक एवं वर्तमान में प्रासांगिक दोनों ही हैं, अतः इस संबंध में संपादक मंडल विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं। सदैव की भाँति इस अंक की सभी रचनाएं उच्च स्तरीय, बहुआयामी, सुसंपादित और मन–आत्मा पर गहरा प्रभाव डालने वाली हैं। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं अच्छी हैं परंतु सुश्री राजकुमारी शर्मा, वरि.प्रशा.अधि. (से.नि.) का लेख सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर, श्री संजीव कुमार, वरि.ले.प.अधि. का लेख 'वर्तमान में हिंदी का बढ़ता प्रभाव', सुश्री नेहा यादव, कनिष्ठ अनुवादक का लेख, 'शहीद दिवस 23 मार्च : जरा याद करो कुर्बानी' और सुश्री नीतू सिंह, वरिष्ठ लेखाकार की कविता 'अनुरोध' पत्रिका में विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित करती हैं। पत्रिका के संपादक मंडल व रचनाकारों को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई। यह पत्रिका इसी प्रकार 'नभः स्पर्श दिप्तम' के प्रतिमान को साकार करती रहे। पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रागज्योति परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. उप महालेखाकार (प्रशा.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
असम, गुवाहाटी

पत्रिका में छपे चित्र इसके कलेवर में चार चांद लगा रहे हैं।

ई–मेल द्वारा त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक के ई–संस्करण की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट हैं। सुश्री मीनाक्षी की कहानी 'नो... थैंक्स' एवं श्री ललित कुमार वर्मा की रचना 'हिमालय की वादियों – पहाड़ियों का सैर–सपाटा' बहुत रोचक है। श्री योगेश कुमार मिश्र की कविता 'जीवन और तुम' जीवन दर्शन का सटीक चित्रण करती है। सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा' की 'दो गलजें' व श्री मुनीष भाटिया की 'धरती का दर्द' मन को छू लेने वाली हैं। इसी प्रकार श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया का यात्रा वृत्तांत 'आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका (भाग–3)' रोचकता की चरम सीमा पर है। पत्रिका में छपे चित्र इसके कलेवर में चार चांद लगा रहे हैं। पत्रिका के निरंतर सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई और शुभकामनाएं।

वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
राजस्थान, जयपुर

पत्रिका इसी प्रकार 'नभः स्पर्श दिप्तम' के प्रतिमान को साकार करती रहे।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक की ई–संस्करण प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें। पर्यावरण एवं तकनीक की दृष्टि से पत्रिकाओं का ई–प्रकाशन अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रशसंनीय है, इस संबंध में आपके संपादक मण्डल को अशेष बधाई। अपने पूर्व अंकों की भाँति इस नवीन अंक में संकलित सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, बहुआयामी, सुसंपादित और मन–आत्मा पर गहरा प्रभाव डालने वाली हैं। पत्रिका में बड़ी ही सुंदरता के साथ ऐनिमेशन का प्रयोग किया गया है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर स्वर साम्राज्ञी, भारत रत्न स्व. लता मंगेशकर जी का चित्र बड़ा ही सुंदर लग रहा है, जिससे पत्रिका का रूप और अधिक निखर गया है। पत्रिका के संपादक मंडल व रचनाकारों को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई। यह पत्रिका इसी प्रकार 'नभः स्पर्श दिप्तम' के प्रतिमान को साकार करती रहे, 'लेखापरीक्षा पकाश' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगन्धा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मक को बढ़ावा देती है।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक का ई–संस्करण अग्रेषित करने हेतु हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मक को बढ़ावा देती है। सभी रचनाएं सुरूचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। विशेषकर सुश्री पूनम रानी की 'लोहड़ी', श्री किरन पाल सिंह की 'संसदीय राजभाषा समिति की कार्यविधि एवं कार्यसंचालन नियमावली', श्री ललित कुमार वर्मा की 'हिमाचल की वादियों – सपाटा पहाड़ियों का सैर' तथा सुश्री नेहा यादव की 'शहीद दिवस मार्च 23 : जरा याद करो कुर्बानी' अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी को बधाईयां एवं शुभकामनाएं।

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय
चेन्नै

रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यंत सार्थक, सुंदर एवं विषयानुकूल हैं।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यंत सार्थक, सुंदर एवं विषयानुकूल हैं। 'सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशक', 'भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का योगदान', 'वर्तमान में हिंदी का बढ़ता प्रभाव', 'शहीद दिवस : जरा याद करो कुर्बानी', 'हमरो बचपन', 'नया साल नयी आशाः कोविड के साथ जिंदगी की भाषा' एवं 'धरती का दर्द' आदि रचनाएं विशेषरूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ उन्तालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में सुश्री राजकुमारी शर्मा की रचना 'सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर', सुश्री पूनम रानी की रचना 'लोहडी', श्री अभय राम सिंह की रचना 'भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का योगदान', सुश्री मीना भारद्वाज की रचना 'मानव जीवन में प्राकृतिक पर्यावरण का महत्व', श्री विनोद कुमार शर्मा की रचना 'सूचना का अधिकार अधिनियमः अवरोध एवं भविष्य', श्री किरन पाल सिंह की रचना 'संसदीय राजभाषा समिति की कार्यविधि और कार्य–संचालन नियमावली', सुश्री नेहा यादव की रचना 'शहीद दिवस : जरा याद करो कुर्बानी', श्री गौरव हारिथ की रचना 'अनुतान अथवा सुर लहर', सुश्री मीनाक्षी की रचना 'नो . .... थैक्स', श्री देवानंद कुमार सिंह की रचना 'हमरो बचपन', सुश्री कल्पना वर्मा की रचना 'कैसी ये उलझनें', श्री सय्यद शैबान फैजल की रचना 'नया साल नयी आशा : कोविड के साथ जिंदगी की नई भाषा', श्री मुनीष भाटिया की रचना 'धरती का दर्द', श्री संजय कुमार सिंह की रचना 'प्रयोगवादी कविताएं' और श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया, प्रधान संपादक महोदय जी की रचना 'आंखो देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका (भाग–3) विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर स्वर्गीय मा. लता जी का चित्र बहुत ही सुंदर है जो उनके प्रतिभा क्षेत्र की छवि प्रस्तुत करता है तथा अंतिम पृष्ठ पर शहीद भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव का चित्र हम सभी देशवासियों के लिए देश प्रेम एवं देश भक्ति का परिचायक है। पत्रिका में लोहडी मनाती महिलाओं के चित्र पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करते हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत–बहुत बधाई। पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं

शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
गुजरात, राजकोट

राजभाषा हिंदी की प्रगति यात्रा में 'लेखापरीक्षा प्रकाश' ने पथ–प्रदर्शक की महत्ती भूमिका निभाई है

त्रैमासिक हिंदी ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का उन्तालीसवां अंक प्राप्त हुआ, इस हेतु धन्यवाद एवं बधाई। पत्रिका का आवरण–पृष्ठ सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर को समर्पित अत्यंत ही आकर्षक है। साज–सज्जा, साहित्यिक'रचनाओं के चयन एवं मुद्रण की दृष्टि से भी पत्रिका प्रशंसनीय है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं रोचक एवं स्तरीय हैं। 'सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर', 'बसंत ऋतु', 'लोहड़ी', 'भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का योगदान' 'सूचना का अधिकार अधिनियम : अवरोध एवं भविष्य', 'हिमाचल की वादियों–पहाड़ियों का सैर–सपाटा' 'कैसी ये उलझनें', 'प्रयोगवादी कविताएं', 'दो गजलें' तथा 'नो..... थैंक्स आदि रचनाएं विशेषरूप से पठनीय एवं उल्लेखनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। राजभाषा हिंदी की प्रगति यात्रा में 'लेखापरीक्षा प्रकाश' ने पथ–प्रदर्शक की महत्ती भूमिका निभाई है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु पत्रिका परिवार को एक बार पुनः धन्यवाद एवं बधाई।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

उत्कृष्ट श्रेणी के संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका ''लेखापरीक्षा प्रकाश'' एक सौ चालीसवें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। ई–पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यंत सार्थक, सुन्दर एवं विषयानुकूल हैं। 'ऐसे युगपुरूष बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर जिन्हें आप नहीं जानते होंगे', 'वह महिला जिसके बलिदान ने भीमराव को डॉ. आंबेडकर में बदल दिया: रमाबाई', 'नहीं जानते होंगे भारत के आर्थिक विकास में डॉ. आंबेडकर का आधारभूत योगदान', 'क्यों भारतीय महिलाओं को डॉ. आंबेडकर का आभारी होना चाहिए? 'पंच तीर्थ' एंव 'दीक्षा भूमि नागपुर और संविधान की मूल प्रति' आदि रचनाएं विशेषरूप से मार्मिक, प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। उत्कृष्ट श्रेणी के संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

पत्रिका पूर्ण रूप से बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर के जीवन पर लिखी गई है और इसे पढ़ने के बाद यह अनुभूति होती है कि बाबासाहेब वास्तव में एक युगपुरूष थे।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका की साज–सज्जा एवं मुद्रण उच्चकोटि का है। पत्रिका पूर्ण रूप से बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर के जीवन पर लिखी गई है और इसे पढ़ने के बाद यह अनुभूति होती है कि बाबासाहेब वास्तव में एक युगपुरूष थे। सामाजिक न्याय, समानता एवं मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के लिए उनका योगदान सदैव अमिट रहेगा। जाति आधारित उत्पीड़न एवं धार्मिक पाखंड के खिलाफ हमेंशा से ही उन्होंने सक्रिय एवं प्रभावशाली आवाज उठाकर सामाजिक सद्भाव को बनाने में अहम भूमिका निभाई है। उन्हें वर्षों तक एक महान युगपुरूष के रूप में याद किया जाता रहेगा। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि हमारी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

कल्याण अधिकारी (रा.भा.अ.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–I,
राजस्थान, जयपुर

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवे अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर श्री के.एस. रामुवालिया जी का आलेख 'पंच तीर्थ', सुश्री रेखा जी का आलेख 'नहीं जानते होंगे भारत के आर्थिक विकास में डॉ. आंबेडकर का आधारभूत योगदान', सुश्री नेहा यादव जी का आलेख 'नजरअंदाज किया फिल्म बनाने वालों ने युग पुरूष डॉ. आंबेडकर को', श्री हीरा बल्लभ भट्ट जी का आलेख 'एक महान अर्थशास्त्री जिसका जिक्र बहुत कम हुआ', श्री परमजीत सिंह जी का आलेख 'दीक्षा भूमि नागपुर और संविधान की मूल प्रति' और सुश्री मीनाक्षी जी का आलेख 'उदय होता भारत और डॉ. आंबेडकर के आर्थिक विचार' अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज–सज्जा और अंतर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है। हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'आकांक्षा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता

इस अंक में सभी अतिथि साहित्यकारों ने लेखनी विधा को जीवंत तथा पठनीय बनाने का सराहनीय प्रयास किया है, जिसमे विश्व में हिंदी भाषा की महत्ता का यशोगान किया है।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ बहुत–बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट तथा संग्रहणीय हैं। इस अंक में सभी अतिथि साहित्यकारों ने लेखनी विधा को जीवंत तथा पठनीय बनाने का सराहनीय प्रयास किया है, जिसमे विश्व में हिंदी भाषा की महत्ता का यशोगान किया है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख राजभाषा संबंधित नीतियों के अनुपालन हेतु बनाए गए विविध कार्यक्रमो में यह बहुत ही उपयोगी तथा सहायक है, जिससे राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय संपर्क सूत्र तथा गौरव का एहसास होता है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II),
राजस्थान जयपुर

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवां अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। यह अंक अपने कलेवर, साज–सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्चस्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित सुश्री पूनम रानी द्वारा लिखित 'वह महिला जिसके बलिदान ने 'भीमराव' को डॉ. आंबेडकर में बदल दिया : रमाबाई', सुश्री नेहा यादव द्वारा लिखित 'नजरंदाज किया फिल्म बनाने वालों ने युगपुरूष डॉ. आंबेडकर को', श्री परमजीत सिंह द्वारा लिखित 'क्यों दी बाबासाहेब ने श्रमिकों को इज्जत की जिंदगी' और सुश्री रेखा द्वारा लिखित 'क्यों भारतीय महिलाओं को डॉ. आंबेडकर का आभारी होना चाहिए?' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक

मंच प्रदान करने में आपकी पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
तमिलनाडु, चेन्नै

मुख्यालय पत्रिका के मानदंड के अनुरूप पत्रिका का जो स्तर होना चाहिए, यह विशेषांक निःसंदेह उस कसौटी पर खरा उतरा है।

मुख्यालय की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चालीसवें अंक, जोकि एक विशेषांक है, को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ, एतदर्थ संपादक मंडल को हार्दिक धन्यवाद। डॉ. भीमराव आंबेडकर के जीवन पर प्रकाश डालता 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का यह विशेषांक, पठनीय होने के साथ–साथ संग्रहणीय, अनुकरणीय एवं संदर्भीय बन पड़ा है। यह अंक न केवल साधारण पाठकों के ज्ञान को बढ़ाने वाला है बल्कि डॉ. आंबेडकर के जीवन पर शोध कर रहे शोधार्थियों के भी ज्ञान–चक्षु खोलने वाला है। मुख्यालय पत्रिका के मानदंड के अनुरूप पत्रिका का जो स्तर होना चाहिए, यह विशेषांक निःसंदेह उस कसौटी पर खरा उतरा है। किसी महापुरूष के जीवन–दर्शन को विविधता लिए हुए पाठकों के लिए अभिव्यक्त करना एक बहुत बड़ी चुनौती होती है। एक कुशल संपादक के मार्गदर्शन में ही ऐसी चुनौती से पार पाया जा सकता है। हर्ष का विषय है कि आज पत्रिका ऐसे ही दक्ष संपादकों के हाथों में है जो अपने पाठकों की मनोवृत्ति से सुविज्ञ हैं। पत्रिका की विषयवस्तु, एक ऐसे महापुरूष 'डॉ. भीमराव आंबेडकर' का व्यक्तित्व है, जोकि उनके असाधारण कृतित्व से निर्मित है। श्री आंबेडकर की दृष्टि बहुआयामी थी जिसे किसी भौगोलिक क्षेत्र या कालखंड की परिधि में बांधा नहीं जा सकता। कदाचित इसीलिए उन्हें विश्व–मानव की संज्ञा दी जाती है। जैसाकि पत्रिका में कहा भी गया है, 'बाबासाहेब ने उन आधारभूत सामाजिक एवं मानवीय मूल्यो की बात की जो सारी दुनिया में किसी न किसी रूप में विद्यमान है'। पत्रिका में प्रकाशित अनेक लेख जहां एक ओर डॉ. आंबेडकर के बारे में अनेक विध सामान्य ज्ञान से परिचित करवाते हैं वहीं कुछ विशेष लेख – मसलन आवरण लेख 'ऐसे युगपुरूष – बाबासाहेब डॉ आंबेडकर ...', 'वह महिला जिसके योगदान ने भीमराव को डॉ. आंबेडकर में बदल दिया – रमाबाई', 'उसे जीतने के लिए यहां कोई और दुनिया नहीं है', 'भारत रत्न डॉ. आंबेडकर–ज्ञान के अथाह समंदर', 'उदय होता भारत और डॉ. आंबेडकर के आर्थिक विचार', 'रोचक प्रसंग' आदि उनके सागर सदृश गंभीर एवं आकाश सम व्यापक व्यक्तित्व को पाठकों तक पहुंचाने में कामयाब हुए हैं। प्रासंगिक छाया चित्रों का यथोचित प्रयोग भी पत्रिका को पाठकों के लिए रूचिकर बनाने में सफल हुआ है। अंत में,मुझे यह कहने में किंचित भी संकोच नहीं कि पत्रिका का यह अंक अपनी विषय–वस्तु, शैली, रूप–रंग एवं साज–सज्जा के मामले में किसी भी व्यावसायिक हिंदी पत्रिका को लजा देने वाला है। पुनरेकबार, संपादक मंडल विशेषतः प्रधान संपादक को सारगर्भित सामग्री के सफल संकलन/संपादन हेतु साधुवाद।

वेद प्रकाश फोन्दणी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली



स्वतंत्र भारत @ 75 : ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भरता



विनय कुमार गर्ग
सहायक लेखा अधिकारी
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़

आज जब हम गुलामी के उस दौर की कल्पना करते हैं, जहाँ करोड़ों लोगों ने सदियों तक आजादी की एक सुबह का इंतजार किया, तब यह एहसास और बढ़ता है कि आजादी के 75 साल का अवसर कितना ऐतिहासिक है, कितना गौरवशाली है। इस संबंध में 15 अगस्त, 2022 को हम अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे करने पर पूरा देश अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है।

सर्वप्रथम मेरा यह कर्त्तव्य बनता है कि विषय की पृष्ठभूमि के बारे में बताऊँ कि स्वतंत्र भारत @ 75 ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भरता क्या है?

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 12 मार्च 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह की शुरूआत की थी। अतः मार्च 2021 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के साबरमती आश्रम में अमृत महोत्सव की शुरूआत, पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर की। इस उपलक्ष्य में केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने 75 किलोमीटर की पदयात्रा पूरी की तथा इस महोत्सव की रूपरेखा तय करने के लिए गृहमंत्री की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय क्रियान्वयन समिति बनाई गई।

15 अगस्त, 2022 को हम अपनी आजादी के 75 वर्ष (हीरक जयंती वर्ष) पूरे कर रहे हैं, जिसके उपलक्ष्य में, 75 सप्ताह के लिए अमृत महोत्सव प्रारंभ हुआ है जो 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। यह अमृत महोत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा है।

जिसमें देश की अदम्य भावना के उत्सव दिखाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। इनमें संगीत, नृत्य, प्रवचन, प्रस्तावना पठन (प्रत्येक पंक्ति देश के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाली विभिन्न भाषाओं में) शामिल हैं। युवा शक्ति को भारत के भविष्य के रूप में दिखाते हुए गायकवृंद में 75 स्वरों के साथ–साथ 75 नर्तक भी होंगे। यह कार्यक्रम भी 15 अगस्त 2023 तक जारी रहेंगे।

आजादी का अमृत महोत्सव : देश की 75वीं वर्षगांठ का मतलब क्या है?

देश की 75वीं वर्षगांठ का मतलब है – 75 साल पर स्वतंत्रता संग्राम का महत्व, 75 साल पर हमारी विचारधारा, 75 साल पर हमारी उपलब्धियां, 75 साल पर अभियान (एक्शन) और 75 साल पर संकल्प शामिल हैं, ये पाँचों स्तम्भ आजादी की लड़ाई के साथ–साथ, स्वतंत्र भारत के सपनों और कर्तव्यों को देश के सम्मुख रखकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।

हमारे विषय के तीन प्रमुख बिंदु हैं – (1) स्वतंत्र भारत; (2) ईमानदारी तथा (3) आत्मनिर्भरता।

स्वतंत्र भारत @ 75

- आज जब हम गुलामी के उस दौर की कल्पना करते हैं, जहां करोड़ों लोगों ने सदियों तक आज़ादी की एक सुबह का इंतज़ार किया, तब ये अहसास और बढ़ता है कि आज़ादी के 75 साल का अवसर कितना ऐतिहासिक है, कितना गौरवशाली है।
- आजादी के आंदोलन के इतिहास की तरह ही आजादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा, सामान्य भारतीयों के परिश्रम, इनोवेशन, उद्यम–शीलता का प्रतिबिंब है। हम भारतीय चाहे देश में रहे हों, या फिर विदेश में, हमने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया है। हमें गर्व है हमारे

संविधान पर। हमें गर्व है हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर। लोक–तंत्र की जननी भारत, आज भी लोकतंत्र को मजबूती देते हुए आगे बढ़ रहा है। ज्ञान–विज्ञान से समृद्ध भारत, आज मंगल से लेकर चंद्रमा तक अपनी छाप छोड़ रहा है। आज भारत की सेना का सामर्थ्य अपार है, तो आर्थिक रूप से भी हम तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं।

- 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी हुकूमत की नींव उखाड़कर भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की थी। हालाँकि इस आजादी के साथ–साथ देश को बंटवारे का दंश भी झेलना पड़ा। लेकिन अब भारत को आजाद हुए सात दशक बीत चुके हैं। इन बीते सात दशकों में भारत ने विकास के कई अहम पड़ाव पार कर लिए हैं।
- स्वाधीनता संग्राम की पराकाष्ठा को प्रणाम करने वाली अंडमान की सेल्युलर जेल, मुंबई का अगस्त क्रांति मैदान, पंजाब का जलियाँ–वाला बाग, उत्तर प्रदेश का मेरठ, काकोरी और झाँसी, देश भर में ऐसे कितने ही स्थान हैं जो हमें आजादी के संघर्ष की याद दिलाते हैं और अब इस अमृत महोत्सव के आयोजन से ऐसा लग रहा है जैसे आज़ादी के असंख्य संघर्ष, असंख्य बलिदानों का और असंख्य तपस्याओं की ऊर्जा पूरे भारत में एक साथ पुर्नजागृत हो रही है।
- "आजादी का अमृत महोत्सव 130 करोड़ भारतीयों के लिए देश हित में कुछ करने का आह्वान है और 130 करोड़ मात्र एक संख्या नहीं है, यह 130 करोड़ संभावनाएं हैं, यह हमारी ताकत हैं और क्षमता के असीमित स्रोत हैं।" भारत का युवा, भविष्य का पथ प्रदर्शक है।
- भारत ने संचार के क्षेत्र में बीते सात दशकों में महत्वपूर्ण व क्रांतिकारी प्रगति की है। आज गांव–गांव तक इंटरनेट व स्मार्टफोन पहुंच चुके हैं। अब भारत का एक छोटा सा गांव भी पूरे विश्व से जुड़ गया है।
- भारत में डिजिटल इंडिया प्रोग्राम की शुरूआत की गई। जिसके माध्यम से लोग हर सुविधा व जानकारी घर बैठे–बैठे ले सकते हैं। चाहे वो किसी सरकारी योजना की जानकारी हो या किसी अन्य विषय पर। बिजली, पानी की बिल भरना अब लोगों के लिए बहुत आसान हो गया, जिसके लिए पहले वह घंटों लाइन में लगा करते थे।
- अगर तकनीक और प्रौद्योगिकी की बात करें तो स्वतंत्रता के बाद से भारत ने इन दोनों ही क्षेत्रों में आशातीत उन्नति व प्रगति की है जिसके कारण हम अपने देश में भारी मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक्स, बड़े से बड़े हेलीकॉप्टर, जहाज इत्यादि का देश में ही निर्माण कर रहे हैं जिसको देखकर आगे आने वाले बच्चों को प्रेरणा भी मिलती है।
- 24 सितंबर 2014 को भारत में ही निर्मित मंगलयान को एक ही बार में सफलतापूर्वक मंगल ग्रह की कक्षा में स्थापित कर भारत ने सभी देशों को यह दिखा दिया कि भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी में बड़े–बड़े देशों से पीछे नहीं है।
- कोविड के बाद भारत वैश्विक मंच पर प्रेरक शक्ति के रूप में उभरा है और टीकाकरण अभियान की गति और परिणाम बहुत आशाजनक हैं। हाल ही में भारत ने 100 करोड़ टीके के अभूतपूर्व लक्ष्य को हासिल किया है जिससे दुनिया हमारी ओर आश्चर्य से देख रही है।
- अब जबकि भारत हर क्षेत्र में नए–नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है ऐसे में हम सभी भारतीयों का यह नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है कि हम भी अपने–अपने क्षेत्र में नए–नए आदर्श व कीर्तिमान स्थापित करें और आजादी के बलिदानियों की शान को आंच न आने दें, जिससे देश की आन–बान बढ़ेगी।
- हमारे वेदों का वाक्य है – मृत्योः मुक्षीय मामृतात्। अर्थात् हम दुःख, कष्ट, क्लेश और विनाश से निकलकर अमृत की तरफ बढ़ें, अमरता की ओर बढ़ें। यही संकल्प आज़ादी के इस अमृत महोत्सव का भी है।

ईमानदारी

- ईमानदारी सबसे मूल्यवान गुणों में से एक है जो आपको एक बेहतर व्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है। यह वह बुनियादी गुण है जिसे एक सफल, पूर्ण और सुखी जीवन

जीने के लिए विकसित करना चाहिए। अखंडता का अर्थ है अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदार और सच्चा होना। पूरी तरह से ईमानदार व्यक्ति बनने के लिए प्रतिबद्ध होने से आप जो कुछ भी करेंगे उसमें आपको सम्मान, खुशी और जीत हासिल होगी। यदि दूसरे शब्दों में अखंडता को समझे, तो अखंडता एक ऐसा व्यक्तित्व है जो खंडित न हो सके अर्थात कितनी ही विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी, विघटनकारी शक्तियों के झांसे में ना आएं और अपने नैतिक आचरण का पालन करें।

- ईमानदारी क्या है? – आप जो कुछ भी करते हैं उसमें अपने नैतिक मूल्यों पर टिके रहना आपके चरित्र का निर्माण करता है। ईमानदारी आपको अपने मूल्यों और संकल्पों पर दृढ़ रहने में मदद करती है। यह अखंडता भी है जो अन्य सभी मूल्यों में सुधार करती है जिसमें साहस, बुद्धि और दृढ़ता शामिल है।

- ईमानदारी का महत्व – हमारे दैनिक जीवन में कई ऐसे अवसर भी आते हैं जहां हमारे नैतिक चरित्र का लगातार परीक्षण किया जाता है। अपने स्वयं के निर्णय लेने के समय हम अपने साथियों से प्रभावित होते हैं। ऐसे परिदृश्य में, यह समझना महत्वपूर्ण है कि क्या सही है और हम किसके साथ खड़े हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी की जरूरत है। यह एक अनिवार्य गुण है जो विवाह को मजबूत बनाता है, पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाता है, सफल व्यावसायिक संबंध बनाता है।

- सत्यनिष्ठ व्यक्ति को सच्चा और ईमानदार माना जाता है। उनकी उपस्थिति की हर जगह प्रशंसा होती है और समाज में अपने लिए एक सम्मानित स्थान स्थापित करते हैं। महत्वपूर्ण निर्णय लेने के समय उनका योगदान लाभप्रद होता है। वह सभी के लिए प्रेरणा स्रोत बनते हैं। उसके व्यक्तित्व में करिश्मा होता है और वह अपने मजबूत और अटूट चरित्र से दूसरों को प्रभावित करने लगता है।

- सत्यनिष्ठ व्यक्ति हमेशा धार्मिकता के लिए खड़ा होता है और न्याय की तलाश करता है। वह चीजों को पूर्णता के साथ करेगा और सभी अवसरों पर उत्कृष्टता हासिल करने का प्रयास करेगा।

- उम्र, लिंग और जाति के बावजूद, ईमानदारी एक महान गुण है जिसे हर व्यक्ति को धारण व विकसित करना चाहिए। यदि आप माता–पिता हैं, तो आप अपने बच्चों को प्रारंभिक अवस्था में ही इसके महत्व के बारे में पढ़ाना शुरू कर सकते हैं। इससे उन्हें जिम्मेदार बनने में मदद मिलेगी और वही गुण उनकी आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाएंगे।

- ईमानदारी को बेहतर समझने के लिए, इसके आवश्यक घटक समझने होंगे, जैसे :

- **चरित्र** : ईमानदारी का व्यक्ति के चरित्र से गहरा संबंध है। जब आप ईमानदारी से काम करते हैं, तो यह आपके चरित्र का निर्माण करता है। आपको एक वास्तविक, प्रमाणिक और भरोसेमंद व्यक्ति के रूप में माना जाता है। खुद के प्रति ईमानदार होने से शुरू करें। जीवन के प्रत्येक अवसर पर हमेशा सही काम करें। कुछ समय पश्चात यह आपका स्वभाव बन जाएगा।

- **वादे** : कई बार लोग वादे तो करते हैं लेकिन उन्हें पूरा नहीं कर पाते। सत्यनिष्ठ व्यक्ति, हमेशा अपने वादों और प्रतिबद्धताओं को रखता है और उन्हें प्राप्त करने की दिशा में काम करता है। इससे दूसरों की नजरों में आपकी अहमियत बढ़ती है और आपके चरित्र का निर्माण होता है।

- **उच्च नैतिक मानक** : सत्यनिष्ठा वाले व्यक्ति को उच्च नैतिक मानकों के अनुसार जीने के लिए देखा जाता है। वे जो कुछ भी करते हैं, या बात करते हैं, वे हमेशा अपनी नैतिकता से चिपके रहते हैं। यही वजह है जो उन्हें समाज में विश्वास और प्रतिष्ठा दिलाती है।

- ईमानदारी "न्यायसंगत" व्यवहार की मांग करती है, और ईमानदारी विशेष रूप से उन परीक्षण समयों में। अगर आप हमेशा सच्चे और खुद के प्रति ईमानदार हैं, तो आप किसी से झूठ नहीं बोल सकते।

- **कार्य की उच्चतम गुणवत्ता** : उच्च सत्यनिष्ठा वाले लोगों का एक

लक्षण यह है कि वे जो भी करते हैं उसमें उच्चतम स्तर का कार्य करते हैं। ऐसे लोग जो कुछ भी करते हैं उसमें खुद के प्रति हमेशा ईमानदार होते हैं, और घर पर या कार्यस्थल पर खुद का सबसे अच्छा संस्करण लाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।

- निम्नलिखित उपाय आपको अपने अंदर ईमानदारी विकसित करने में मदद करेंगे –
- सार्वजनिक और निजी जीवन में आप जो कुछ भी करते हैं (सरल से बड़े कार्यों तक) उन्हें न्यायपूर्वक/सच्चाई से करने का अभ्यास करें।
- अपने और सबके प्रति प्रतिबद्ध (committed), ईमानदार (honest) और भरोसेमंद (trustworthy) आचरण करना।
- ईश्वर पर विश्वास रखें।
- अपने आप को ऐसे लोगों से जोड़ें जो ईमानदारी को महत्व देते हैं।
- प्रामाणिक (authentic) बनें।
- हमेशा अपनी बात या वादे निभाएं।
- अपनी सफलताओं के साथ–साथ असफलताओं को भी जिम्मेदारी से और शालीनता से स्वीकार करें।
- जीवन में कभी भी परिस्थितियों को अपने कार्यों और निर्णयों को बदलने न दें।
- खुद को अनुशासित करें।
- सभी लोगों के साथ समान आदर का व्यवहार करें।
- कभी भी पीछे से बात न करें, न ही किसी व्यक्ति की पीठ के पीछे गपशप करें।
- एक मजबूत और अटूट चरित्र का निर्माण करें।
- सफलता प्राप्त करने हेतु कभी भी शॉर्टकट का सहारा न लें।

आत्मनिर्भरता

- हम बचपन में अपने बुजुर्गों से सुनते आ रहे हैं कि यदि कामयाब बनना है तो अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, मतलब आत्मनिर्भर हो जाओ। यही बात राष्ट्र के लिए भी उचित है कि जो राष्ट्र जितना जल्दी आत्मनिर्भर बनेगा, दुनिया में उस राष्ट्र का सम्मान उतना ही बढ़ेगा।
- भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गया था। वर्तमान में हम भारत की स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव यानि 75वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। पर क्या हम गर्व से कह सकते हैं कि हम वास्तव में स्वतंत्र हैं? मुझे लगता है, नहीं। कोई भी देश या कोई भी व्यक्ति तभी स्वतंत्र कहला सकता है जब वे दूसरों पर आश्रित ना हों।
- जब किसी देश की आत्मनिर्भरता के बारे में बात की जाती है तो इसका मतलब यह है कि किसी देश के आयात उसके निर्यात से कम होने चाहिए। तभी हम कह सकते हैं कि वह देश आत्मनिर्भर है।
- बीते कुछ वर्षों में भारत ने हर क्षेत्र में विदेशों पर अपनी निर्भरता को खत्म करने के उद्देश्य से भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाने की तरफ अपने कदम बढ़ा दिए हैं। अब भारत हर रोज आत्मनिर्भर होने की तरफ छोटे–छोटे लेकिन मजबूत कदम बढ़ा रहा है।
- हम क्यों स्वतंत्रता के इतने साल बाद भी दूसरे देशों में बनाई हुई चीजों पर निर्भर हैं? हमारे बच्चों के हाथ में खेलने वाले खिलौने, हमारे युवाओं के हाथ में सारा टाइम रहने वाले फोन और लैपटॉप, यह सब दूसरे देशों से क्यों आते हैं? खासकर चीन से।
- क्या हम इन सभी को अपने देश में नहीं बना सकते? क्या हमारे देश के नौजवानों के पास इतनी काबिलियत नहीं है? आंकड़ों से पता लगता है कि अधिकतर भारत के अनुभवी, तेज़ दिमाग वाले लोग बड़ी–बड़ी विदेशी कंपनियों के शिखर पर हैं। भारत के लोग दूसरे देशों में जाकर उनके लिए नौकरी कर रहे हैं यानी कि दिमाग भारत का और नाम दूसरे देश का हो रहा है।
- दुनिया निवेश, नवाचार या किसी उद्योग की स्थापना के लिए भारत की ओर देख रही है और 75 वर्ष पर भारत नए विचारों और निवेश, मांग निर्यात, आकांक्षाओं और स्टार्ट–अप का केंद्र बन रहा है।

- क्या वजह है भारत के नौजवान डॉक्टर अमेरिका जैसे दूसरे देशों में जाकर बस जाते हैं और उन देशों का नाम रोशन करते हैं। गूगल जिसे सारा विश्व जानता है उस के सीईओ – सुन्दर पिचाई जोकि मूल रूप से एक भारतीय हैं। हमारे देश के युवा जो भारत में ही रहकर नई–नई खोजें क्यों नहीं करते? नई तकनीक क्यों नहीं बनाते?

- इसका मुख्य कारण है हमारे देश की धूल खाती नीतियां। पिछले कुछ सालों से सरकार कोशिश कर रही है कि भारत के लघु और मध्यम वर्गीय उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सके। इसी दिशा में सन 2014 में भारत सरकार द्वारा बनाया गया मेक इन इंडिया कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के द्वारा सरकार ने विदेशी कंपनियों को भारत में आकर निवेश करने के लिए आमंत्रित किया। हाल ही में भारत सरकार शिक्षा के मूल–चूल परिवर्तन करने हेतु नई शिक्षा नीति लेकर आ रही है जिसमें विद्यार्थियों की व्यवहारिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जा रहा है।

- भारत को तेल और ईंधन के लिए बाहरी देशों पर निर्भर रहना पड़ता है इसलिए गत 10 वर्षों में भारतीय सरकार अल्टरनेटिव ईंधन पर तेजी से काम कर रही है जिससे कि हम अपने ही देश में ईंधन और बिजली का उत्पादन कर सके और आत्मनिर्भरता की ओर तेज़ी से कदम बढाएं।

- पिछले कुछ वर्षों से चीन में निर्मित वस्तुओं की भारत में बहुत अधिक मांग हो गई थी जिसके कारण भारत में ज्यादातर सामान चीन से आता था। चीन ने सोचा कि भारत उस पर निर्भर है इसलिए चीन ने अपनी विस्तारवादी सोच के तहत, एलएसी पर युद्ध जैसे हालात पैदा कर दिए, लेकिन भारत ने चीनी सामान का बहिष्कार करके और चीनी ऐप्स को बैन कर यह साबित कर दिया है कि भारत आत्मनिर्भर है और किसी दूसरे देश पर अपनी जरूरतों के लिए निर्भर नहीं है।

- 75 साल पहले हमने आजादी पाने के लिए काम किया था, अब हमें आत्मनिर्भर बनने के लिए मिशन मोड में काम करना होगा। देश को तेजी से विकास और समृद्धि के रास्ते में ले जाने का हमारे पास इससे बेहतर अवसर नहीं होगा। क्योंकि भारत को महान बनाने के लिए देश के लिए आत्मनिर्भरता ही विजन है।

- भारत ने हालांकि इन 74 सालों में हर क्षेत्र में काफी विकास किया है। भारत ने बैलगाड़ी से लेकर चंद्रयान–2 तक का सफल अकेले अपने दम पर तय किया है।

- आजादी के बाद भारत तेजी से विश्व शक्ति बनकर उभरा है। भारत की अर्थव्यवस्था आज एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इस कारण सामाजिक और आर्थिक रूप से कई बदलाव भी हुए हैं।

- भारत सरकार द्वारा स्टार्टअप के माध्यम से युवाओं को आत्म–निर्भर बनाने की योजना चलाई जा रही है जिसका मुख्य उद्देश्य भारत के युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित करना, नए–नए इनोवेटिव आइडिया के जरिए नए–नए व्यवसायों को स्थापित करना। इसके लिए युवाओं को अच्छी खासी आर्थिक सहायता भी दी जा रही है।

- युवा अपने देश में ही रह कर अपने उद्योग धंधों को स्थापित करें। जिससे भारत में रोजगार पैदा हो सके और अधिक से अधिक वस्तुओं का निर्माण भारत में ही हो सके, ताकि हमारी दूसरे देशों पर निर्भरता खत्म हो जाए। और भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत हो सके।

- भारत ने आईटी के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करके पूरे विश्व को चकित कर दिया है और विश्व ने भारतीयों की प्रतिभा का लोहा माना है।

- भारत कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन चुका है। उत्पादन के मामले में भारत ने कई देशों को पीछे छोड़ दिया है। भारत दालों का सबसे बड़ा उत्पादक है। चीनी का यह दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और कपास का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत पशुधन के मामले में भी सम्पन्न राष्ट्र है। जिस कारण भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध और मक्खन उत्पादक भी है।

- भारत ने अपनी सैन्य शक्ति में अभूतपूर्ण विस्तार किया है। अत्याधुनिक हथियारों, उपकरणों के साथ–साथ राफेल से भी हमारी सेना सुसज्जित हो गई है। दुनिया की सबसे तेज क्रूज मिसाइल "ब्रह्मोस" को सैन्य रक्षा प्रणाली में शामिल किया गया है, जिसे भारत और रूस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है।

- भारत ने औद्योगिक निर्माण क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। ये सब भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में ही उठाए गए हैं। विश्व का सबसे बड़ा दुपहिया वाहनों का उत्पादक देश भारत ही है।

- भारत की गिनती अब दुनिया के औद्योगीकृत देशों की श्रेणी में की जाती है। सड़कों, बंदरगाहों के अलावा विश्वस्तरीय निर्माणों में भी भारत ने आत्मनिर्भरता हासिल कर देश की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की है।

सार

- भारत को अगर एक महाशक्ति के रूप में उभरना है तो उसे हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना ही होगा।

- सन 2020 में जब पूरा विश्व कोरोना संकट से जूझ रहा था उस समय भारत के लिए और भी बहुत सी परेशानियां थी – चीन द्वारा सीमाओं पर बढ़ रही युद्ध की आशंका, बढ़ती बेरोजगारी, आसमान छूती महंगाई आदि चौतरफा समस्याओं से संघर्षरत भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उस समय आत्मनिर्भर भारत अभियान की योजना प्रस्तुत की। उनका मानना है कि इन सभी तमाम समस्याओं से तभी बचा जा सकता है जब हमारा देश आत्मनिर्भर बने।

- कोरोना काल में ये हमारे सामने प्रत्यक्ष सिद्ध भी हो रहा है। मानवता को महामारी के संकट से बाहर निकालने में वैक्सीन निर्माण में भारत की आत्मनिर्भरता का आज पूरी दुनिया को लाभ मिल रहा है। आज भारत के पास वैक्सीन का सामर्थ्य है तो वसुधैव कुटुंबकम के भाव से हम सबके दुख दूर करने में काम आ रहे हैं और ऐसे समय में भारत ने बहुत ही कम समय में 100 करोड़ टीके के अभूतपूर्व लक्ष्य को हासिल कर लिया है। आज दुनिया के देश भारत का धन्यवाद कर रहे हैं, भारत में भरोसा दिखा रहे हैं। यही नए भारत के सूर्योदय की पहली छटा है, यही हमारे भव्य भविष्य की पहली आभा है।

- आत्मनिर्भर भारत अभियान की मुहिम को और अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए अगस्त 2020 में रक्षा मंत्रालय ने 101 डिफेंस आइटम्स के निर्यात पर रोक लगा दी है। ऐसा इसलिए किया गया ताकि इन सभी चीजों को अपने देश में ही बनाया जाए। इससे रोज़गार के अवसरों में बढ़ोतरी होगी।

- भारत एक बार फिर आत्मनिर्भर बनेगा, विश्व को नई दिशा देगा। हमें इस दिशा में भी स्वच्छता अभियान का सहारा लेना होगा, किंतु इस अभियान में हमें अपने देश के बाजारों से विदेशी सामान रूपी गंदगी हटाकर, सही मायने में स्वच्छता अभियान मनाना होगा और यही हर नागरिक का संकल्प होगा, हर संस्था का संकल्प होगा, हर संगठन का संकल्प होगा देश को आगे ले जाने का। आजादी के दीवानों को सच्ची श्रद्धांजलि देने का यही रास्ता होगा।

- मुझे लगता है कि आत्मनिर्भर भारत में मेरा कर्त्तव्य है कि अपने देश में निर्मित चीजों का ज्यादा से ज्यादा प्रचार करें जिससे कि हम उन्हें दूसरे देशों तक भी पहुंचा सके। हमें दूसरे देशों में बनाई हुई चीजों का सहारा ना लेना पड़े। इससे हमारे देश का सम्पूर्ण विकास होगा। यह केवल सरकार का दायित्व नहीं है यह जितनी सरकार की जिम्मेदारी है उतनी ही नागरिकों की भी जिम्मेदारी है, क्योंकि सरकारें तो आती–जाती रहेंगी, मगर जो अटल है वो है देश के 130 करोड़ देशवासी, जिन्होंने अगर ठान लिया तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है।

- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता व ईमानदारी तीन अलग–अलग विषय नहीं हैं अपितु इन तीनों का आपस में अटूट नाता है, क्योंकि बिना ईमानदारी व आत्मनिर्भरता के स्वतंत्रता का स्वप्न अधूरा है। सभी नागरिकों को इस प्रयास में अपना शत–प्रतिशत सहयोग देना होगा तभी हम शान से कह पायेंगे – 'ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भर भारत – स्वतंत्र भारत'।

हिंदी पखवाड़े की महत्ता



सुश्री राजकुमारी शर्मा
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (सेवानिवृत्त)
एम–143, साउथ सिटी–I, गुरूग्राम (हरियाणा)

भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। तब से लेकर इस दिवस की स्मृति में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है जबकि हिंदी पखवाड़ा 1 सितम्बर से 14 सितम्बर तक अथवा 14 सितम्बर से 28 सितम्बर तक मनाया जाता है। भारत सरकार के सभी कार्यालयों, उपक्रमों, उद्यमों, संस्थाओं में हिंदी पखवाड़े का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। भारत सरकार के केन्द्रीय गृह मंत्री जी का संदेश प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को प्रकाशित किया जाता है।

इस सम्बन्ध में इस बात पर भी चर्चा करना आवश्यक है कि आखिर प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़ा मनाए जाने का उद्देश्य क्या है। इसको आयोजित करने का उद्देश्य यह है कि हिंदी भाषा को अपने देश के साथ–साथ पूरे विश्व में इसका प्रचार–प्रसार किया जाए। इसका लक्ष्य है कि भारतीय उपमहाद्वीप के सभी लोग हिंदी को समझें तथा विदेशों में भी इसका प्रचार–प्रसार हो। हिंदी को जनमानस की भाषा बनाना ही ऐसे आयोजन का मुख्य लक्ष्य है।

हिंदी पखवाड़े का आयोजन कार्यालयों में बड़े हर्षोल्लास के साथ किया जाता है। इसे एक राष्ट्रीय पर्व की तरह मनाया जाता है। इसे मनाने के लिए कार्यालयीन कार्मिक बेसब्री से इंतजार करते हैं। कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन प्रतिवर्ष या तो 1 से 14 सितम्बर तक अथवा 14 से 28 सितम्बर तक किया जाता है। 14 सितम्बर को भारत के माननीय गृह मंत्री जी का संदेश भी कार्यालयों में पढ़कर सुनाया जाता है। संदेश में कार्मिकों के लिए प्रेरणादायी भाषण दिया जाता है तथा उन्हें अपना कार्य अधिकाधिक हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है। पखवाड़े के दौरान कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जिनमें भाग लेने के लिए अधिकाधिक कार्मिकों को प्रोत्साहित तथा प्रेरित किया जाता है। नियत दिवस तथा समय पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। कई कार्यालयों में प्रतियोगिताओं का आयोजन अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए अलग–अलग किया जाता है। उनकी उत्तरपुस्तिकाओं की जांच के आधार पर अथवा उनके निष्पादन के आधार पर उनको अंक प्रदान किए जाते हैं। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार भी दिए जाते हैं। पुरस्कार में नकद राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाते हैं। कई कार्यालयों में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कारों के अतिरिक्त सांत्वना पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं जिसका लक्ष्य प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक कार्मिकों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना होता है। इस प्रकार पूरा कार्यालय एक खुशनुमा माहौल में हिंदी पखवाड़े का आयोजन करता है। विभिन्न कार्यालयों द्वारा अलग–अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इनमें से कुछ प्रतियोगिताएं इस प्रकार हैं :

1. हिंदी टिप्पण तथा प्रारूपण प्रतियोगिता : इस प्रतियोगिता में कार्मिकों को कुछ विषयवस्तु दी जाती है जिसके बारे में उनको टिप्पण लिखना होता है और एक मसौदा (पत्र लेखन) भी उनको तैयार करना होता है। शीर्ष तीन स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार के लिए चयनित किया जाता है।

2. हिंदी में अनुवाद प्रतियोगिता : इस प्रतियोगिता के तहत प्रतिभागियों को अंग्रेजी का पैरा/वाक्यांश/शब्द हिंदी अनुवाद करने के लिए दिए जाते हैं। उत्तर पुस्तिकाओं को जांचने के बाद मूल्यांकन के आधार पर टॉप आने वाले तीन प्रतिभागियों का प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार के लिए चयन किया जाता है।

3. राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता : इस प्रतियोगिता में राजभाषा अधिनियम, नियम, राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम तथा समय–समय पर भारत सरकार द्वारा जारी आदेशों के सम्बन्ध में प्रश्न दिए जाते हैं। प्रश्नों का सही उत्तर प्रतिभागियों द्वारा दिया जाना होता है। अंकों के आधार पर टॉप तीन प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय विजेता के रूप में घोषित किया जाता है तथा तद्नुसार पुरस्कृत किया जाता है।

4. हिंदी टंकण प्रतियोगिता : इस प्रतियोगिता में क्लर्क, टंकक तथा डीईओ ही भाग लेने के लिए पात्र होते हैं। प्रतिभागियों को हिंदी का एक पैरा टंकण के लिए दिया जाता है। टंकण करने के लिए फोंट का प्रकार (जैसे मंगल आदि) साईज (जैसे 14), लाइनों के बीच में अंतर (डबल स्पेस), समय–सीमा (जैसे 10 मिनट) आदि सम्बन्धी निर्देश अभ्यर्थियों को टैस्ट प्रारम्भ होने से पहले ही दे दिए जाते हैं। एक निर्धारित मापदंड के आधार पर प्रत्येक अभ्यर्थी को उसके निष्पादन के आधार पर अंक प्रदान किए जाते हैं तथा टॉप तीन अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय विजेता घोषित किया जाता है।

5. वाद–विवाद प्रतियोगिता : वाद–विवाद प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को एक विषय दिया जाता है जिसके ऊपर उनको पक्ष में अथवा विपक्ष में अपना तर्क रखना होता है। प्रतियोगिता में नियुक्त किए गए निर्णायकों के निर्णय के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है तथा सर्वोत्तम तीन प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय विजेता के रूप में घोषित किया जाता है।

6. कवि सम्मेलन : कई कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े के दौरान कवि सम्मेलन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इसमें कार्यालय के कवि प्रतिभागी भाग लेते हैं। कभी–कभी कार्यालय से बाहर से भी कवि आमंत्रित किए जाते हैं। इस प्रकार इस प्रतियोगिता में भी प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

7. हिंदी निबंध प्रतियोगिता : इस प्रतियोगिता में दो अथवा तीन विषय दिए जाते हैं जिनमें से किसी एक विषय पर हिंदी में निबंध लिखना होता है। निबंध लिखने के लिए शब्दों की सीमा भी निर्धारित की जाती है। निर्धारित समय सीमा के अन्दर निबंध लेखन प्रतियोगियों में से सर्वोत्तम घोषित तीन विजेताओं को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

8. वर्ग–पहेली प्रतियोगिता : इस प्रतियोगिता में वर्ग–पहेली को सुलझाने का कार्य किया जाता है। अन्य प्रतियोगिताओं की तरह इसमें भी प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

हिंदी पखवाड़े के दौरान उपरोक्त प्रतियागिताओं के अलावा कहीं–कहीं पोस्टर प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती हैं। हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए पखवाड़े के प्रारंभ से अंत तक हिंदी के बैनर, पोस्टर तथा अन्य सामग्री दर्शनीय स्थलों पर (जो दूर से भी पढ़ी जा सके) तथा कार्यालय के नोटिस बोर्डों पर भी सभी सूचनाएं लगाई जाती हैं। इसके अलावा कई कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई जाती है। इसमें हिंदी से संबंधित मैगजीन, पुस्तकें तथा अन्य सामग्री भी कार्यालय के कार्मिकों के लिए प्रदर्शन हेतु सुव्यवस्थित ढंग से सही स्थान पर सजाई जाती

हैं। कार्यालयों में ऐसे कार्मिकों को भी प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है जिन्होंने वर्ष के दौरान (1 अप्रैल से अगले वर्ष के 31 मार्च तक) सर्वाधिक कार्य हिंदी में किया हो। कई प्रोत्साहन योजनाएं भी भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही हैं जिनके विजेताओं को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़े/दिवस के दौरान सम्मानित किया जाता है। इन पुरस्कारों में हिंदी पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कार, राजभाषा गौरव पुरस्कार, राजभाषा शील्ड इत्यादि शामिल हैं।

इस प्रकार संविधान सभा द्वारा सौंपे गए संवैधानिक और प्रशासनिक उत्तरदायित्वों तथा संविधान की भावना के अनुरूप तथा प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना की नीति के साथ, राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार करने और इसके प्रयोग को बढ़ाने के भारत सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किए जाते हैं। इसी क्रम में वर्ष 2022 में आयोजित किए गए हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ 14–15 सितम्बर 2022 को सूरत (गुजरात) में किया गया। जिसमें भारत सरकार के माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री की अध्यक्षता में हिंदी दिवस का आयोजन भव्य एवं गरिमामयी स्वरूप से किया गया। इस आयोजन में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/सम्बद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों/बैंक/उपक्रमों/निगम/बोर्डों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि एक भाषा के रूप में हिंदी न केवल भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की परिचायक है। सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ–साथ हिंदी विश्व की वैज्ञानिक भाषा है जिसके समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

इसी संदर्भ में कबीरदास जी का दोहा बिल्कुल सही चरितार्थ होता है :

"अब तो मिलना चाहिए, हिंदी को सम्मान।
पूर्ण राष्ट्रभाषा बने, ऐसा लो संज्ञान।
हिंदी रस रसना चखे, करे दिलों पर राज।
मधुर–मधुर से भाव हैं, हिंदी है सरताज।"



स्वच्छ भारत, संरक्षित भारत, स्वस्थ भारत



दया सागर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

अगर हमारा वातावरण शुद्ध है और हमारे पास पर्याप्त संसाधन है तो यह हमारे लिए ही अच्छा है। स्वच्छता और संरक्षण मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। इस लेख में लेखक ने स्वच्छ भारत, संरक्षित भारत एवं स्वस्थ भारत निर्माण करने पर बल दिया है।

स्वच्छता और संरक्षण मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। मनुष्य अपने वातावरण को स्वच्छ और संरक्षित रखने का प्रयास करता है, क्योंकि स्वच्छता और संरक्षण से ही सुंदर और स्वस्थ वातावरण का निर्माण होता है। इसीलिए मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है, लेकिन ऐसा भी कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक पशु है। सामाजिक प्राणी वो है जो अपनी उन्नति व आवश्यकता की पूर्ति करने के साथ–साथ समाज की आवश्यकता और हितों का भी ध्यान रखते हैं और अपने वातावरण को स्वच्छ और संरक्षित रखते हैं। लेकिन सामाजिक पशु वो है जो अपना ख्याल तो रखते हैं लेकिन उन्हें बाकी किसी की कोई परवाह नहीं होती। वातावरण से उन्हें कोई मतलब नहीं होता। खाओ पीओ और कचरा फैलाओ। कोई उन्हें समझाए तो भी वो समझना नहीं चाहते।

ऐसे ही हम जब किसी गरीब या जरूरतमंद की मदद करते हैं तो इसलिए नहीं करते कि हमारे पास बहुत अधिक धन है और हम बांटना चाहते हैं अपितु उनकी कुछ सहायता कर सके इसलिए कभी–कभी लोगों की मदद कर देते हैं। लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं कि सभी भिखारी हमारे चारों तरफ इकट्ठा हो जाए और हम सभी की मदद करने लगे ये व्यवहारिक रूप से संभव नहीं। इसी प्रकार हर व्यक्ति को हर विषय समझाना और बताना संभव नहीं है, इतनी समझ तो सभी में होनी चाहिए कि हम अपने नगर को किस तरह स्वच्छ, संरक्षित और सुंदर बना सके।

मैंने कोविड के दौरान और उससे पहले भी लोगों को साफ़ सफाई रखने, जल संरक्षण, विद्युत संरक्षण और धूम्रपान न करने के बारे में जागरूक किया ताकि वातावरण सुंदर बने और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सके। कई बार तो लोग इन बातों का समर्थन करते हैं लेकिन कई बार लोग अपनी गलती नहीं मानते और ऐसी हरकतें जानबूझकर करते हैं, जिससे वातावरण अशुद्ध हो। हम ऐसे मनुष्यों को तो समझा सकते हैं जिससे अज्ञानता, भावावेष या मजबूरी की वजह से कोई भूल हो जाए लेकिन जो योजना बनाकर ऐसे कार्य करते हैं, उन्हें कोई नहीं समझा सकता शायद उनका भरण–पोषण ही इस वजह से हो रहा है। फिर भी ये हमारा कर्तव्य है कि अगर हम सफाई नहीं कर सकते तो कम से कम गंदगी ना फैलाए। ऐसा करना भी देश को स्वच्छ रखने में योगदान ही है।

इसके अलावा मैंने अपने नगर में पहल करके जल और विद्युत की बरबादी रोकने के लिए संबंधित विभाग को ई–समाधान पोर्टल के माध्यम से सूचना देकर जगह–जगह हो रही जल और विद्युत की बरबादी को बंद करवाया। ऐसा करने में मेरा कोई व्यक्तिगत हित नहीं बल्कि पूरे नगर के लोगों का हित निहित है क्योंकि बिना जल के जीवन की कल्पना करना असंभव है और आजकल पीने योग्य पानी की हर जगह कमी है व बिजली के लिए कोयले की

कमी है और भविष्य में और अधिक कमी होने वाली है।

वैसे जो ज्यादातर लोग पढ़े लिखे हैं, सभी को इन सब चीजों का ज्ञान है। अगर हमारा वातावरण शुद्ध है और हमारे पास पर्याप्त संसाधन हैं तो ये हमारे लिए ही अच्छा है। लेकिन अगर वातावरण अशुद्ध रहेगा और हमारे संसाधन खत्म हो जायेंगे तो हम सभी को इसके दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे। जैसे अगर कोई बीड़ी, सिगरेट या गुटके का प्रयोग करता है तो उसे इसका प्रत्यक्ष नुकसान तो होता ही है, इसके अलावा वो लोग जगह–जगह पर इनसे उत्पन्न गन्दगी फेंककर/थूककर वातावरण को भी दूषित करते हैं। उस गन्दगी को तो हम साफ़ कर सकते हैं लेकिन इनके अत्यधिक प्रयोग से होने वाली बीमारी को ठीक करना बहुत मुश्किल हो जाता है। उस बीमारी के कारण लोगों की जान तक चली जाती है, ये चिंता का विषय है।

सरकार के द्वारा भी जगह–जगह पर ऐसे सूचना पट्ट लगाए गए हैं, लेकिन फिर भी लोग सार्वजनिक जगह पर और सार्वजनिक रास्तों में धूम्रपान करते हैं, गंदगी करते हैं या थूकते हैं। उन्हें लगता है वो कहीं और गंदगी फैला रहे हैं, इससे उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन वो गंदगी उनके पैरों के माध्यम से या किसी और व्यक्ति के माध्यम से उनके ही घर पहुँच जाती है। कोविड के दौरान इस कारण ज्यादा संक्रमण फैला और इसी संक्रमण से लोगों की जानें गई। लोगों ने अपने सगे संबंधियों को खो दिया। ऐसी स्थिति बड़ी ही दुःखदाई होती है।

इस विषय पर मुझे बाबा भारती की कहानी याद आती है। जिसमें बाबा भारती के पास एक सुंदर घोड़ा था। एक डाकू वो घोड़ा चुराना चाहता था। उसने एक बीमार का रूप बनाया और सामने आ रहे बाबा भारती को कहा मैं बहुत बीमार हूँ तथा चलने में असमर्थ हूँ, कृपया मुझे घोड़े पर बैठा लो। बाबा भारती बड़े दयालु थे। उन्होंने उसे घोड़े पर बैठा लिया। जैसे ही डाकू घोड़े पर बैठा, उसने बाबा भारती को धक्का दिया और घोड़ा ले जाने लगा। बाबा भारती ने उससे कहा कि किसी को ये मत बताना कि तुमने असहाय बनकर सहायता मांगी और घोड़ा चुरा लिया। अगर तुमने ये बताया तो कोई भी किसी असहाय की मदद नहीं करेगा।

इसी प्रकार अगर कोई इस बारे में पहल करके सफाई या संसाधनों को संरक्षित करने का कार्य करते हैं तो उनकी मदद करनी चाहिए और उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए। अगर उन्हें हतोत्साहित किया जायेगा तो देश की बेहतरी के लिए कौन कार्य करना चाहेगा और इसी वजह से लोग इन सब बातों को नजरअंदाज करने लगे हैं।

अगर हम सफाई नहीं कर सकते और संसाधनों को संरक्षित नहीं रख सकते तो कम से कम हम गंदगी ना फैलाएं और प्राकृतिक संसाधनों को बरबाद ना करें। ये वातावरण और संसाधन हमारे लिए ही हैं और इनमें होने वाले किसी भी बदलाव से सभी भारतीयों पर और विश्व पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ने वाला है।

अतः हम सभी का कर्तव्य है कि हम जहाँ रहते हैं, उस जगह को स्वच्छ और संरक्षित रखें ताकि स्वस्थ भारत का निर्माण किया जा सके तथा संसाधनों की कमी और संक्रमण से होने वाली मृत्यु को रोका जा सके।



सरकारी कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन



सुश्री मीना भारद्वाज
सहायक लेखाधिकारी
कार्या. महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

भारत सरकार की राजभाषा नीति/नियमों के अनुसरण में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए समारोहों का आयोजन किया जाता है। ऐसा ही एक आयोजन हिंदी पखवाड़ा समारोह के रूप में किया जाता है। यह समारोह केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों, उपक्रमों तथा अन्य संस्थानों में प्रतिवर्ष या तो 1 से 14 सितम्बर तक अथवा 14 सितम्बर से 28 सितम्बर तक आयोजित किया जाता है। इसे एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्रता मिलने के दो वर्ष बाद 14 सितम्बर 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में दर्जा प्रदान किया गया। प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को सभी केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी जहां भारत की राजभाषा है वहीं यह विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक भाषा है।

हिंदी पखवाड़े का आयोजन करने का उद्देश्य यह है कि हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार पूरे विश्व में हो। हिंदी भाषा को न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लोग इसके महत्त्व के बारे में जानें। कहने का तात्पर्य यह है कि यह जनमानस की भाषा बने। विश्व स्तर पर हिंदी भाषा सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं की सूची में तीसरे स्थान पर आती है। हिंदी पखवाड़े जैसे समारोह आयोजित करने का तात्पर्य हिंदी भाषा का और अधिक प्रचार–प्रसार करके इसे लोकप्रिय बनाना है।

वर्ष 2022 के दौरान भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के आदेशानुसार भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/बोर्डों से अनुरोध किया गया कि हिंदी दिवस का शुभारंभ 14 सितम्बर 2022 को सूरत, गुजरात से हो और समापन 29 सितम्बर, 2022 को संबंधित कार्यालय में हो। इसी के क्रम में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/अधीनस्थ कार्यालयों आदि के प्रतिनिधियों ने 14–15 सितम्बर, 2022 को सूरत, गुजरात में हिंदी दिवस के भव्य समारोह में भाग लिया तथा हिंदी पखवाड़े का समापन अपने–अपने कार्यालयों में 29 सितम्बर 2022 को किया।

केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े को एक त्योहार की तरह मनाया जाता है। जगह–जगह रंग–बिरंगे पोस्टर, बैनर कार्यालयों में लगाए जाते हैं। कार्यालयों में, हिंदी भाषा के लिए एक उत्साहवर्धक वातावरण देखा जा सकता है। राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार करने और इसके प्रयोग को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किए जाते हैं।

हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं जिनमें कार्यालयों के अधिकाधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया जाता है। कई कार्यालयों में प्रतियोगिताएं अधिकारी तथा कर्मचारी वर्ग के लिए अलग–अलग आयोजित की जाती हैं। प्रत्येक प्रतियोगिता में अभ्यर्थियों के निष्पादन के आधार पर मूल्यांकन करने के पश्चात प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय घोषित किए जाने वाले विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं।

हिंदी पखवाड़े के महत्त्व के बारे में अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कोविड–19 महामारी के चलते भी कई सरकारी कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े के दौरान ऑनलाईन माध्यम से प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसी प्रकार ऑनलाईन माध्यम से ही पुरस्कारों की घोषणा भी की गई। इन प्रतियोगिताओं में उन सभी अभ्यर्थियों को ऑनलाईन भाग लेने के लिए उत्साहित किया गया जो कार्यालय आ रहे थे अथवा जिनको घर से कार्य करने का आदेश था। कहने का अर्थ यह है कि कोविड–19 महामारी के चलते हुए भी हिंदी पखवाड़ा समारोह की प्रतियोगिताओं का आयोजन ऑनलाईन माध्यम से जारी रहा।

कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताएं निम्न प्रकार हैं :

1. हिंदी में टिप्पण और मसौदा लिखने की प्रतियोगिता
2. हिंदी में टंकण प्रतियोगिता
3. हिंदी निबंध प्रतियोगिता
4. वाद–विवाद प्रतियोगिता
5. राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता

उपरोक्त प्रतियोगिताओं का कार्यालय में आयोजन करने के लिए समितियां बनाई जाती हैं जिनका कार्य प्रतियोगिताओं के प्रश्न–पत्र तैयार करना, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना, प्रतियोगिताओं का सही ढंग से आयोजन करना, प्रत्येक प्रतियोगिता के परिणाम तैयार करना तथा परिणाम घोषित करना होता है। सभी कार्य गोपनीय होता है।

इसके अलावा हिंदी पखवाड़े के दौरान अलग–अलग संस्थानों द्वारा विभिन्न प्रकार के समारोहों का आयोजन भी किया जाता है जिसके द्वारा लोगों में हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जाती है। इन समारोहों में निम्नलिखित शामिल हैं :

1. हिंदी कवि सम्मेलन/हिंदी साहित्य सम्मेलन : ऐसे कवि सम्मेलन/साहित्य सम्मेलनों में भारत सरकार की तरफ से हिंदी पुस्तक और हिंदी कविता लिखने वाले बेहतरीन लेखकों को पुरस्कृत किया जाता है। इसमें अतुलनीय कार्य करने वाले कवियों/साहित्यकारों को पुरस्कार से सरकार द्वारा सम्मानित किया जाता है।

2. हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी: कई सरकारी कार्यालयों/संस्थानों/विभागों द्वारा अपने यहां हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई जाती है जिसमें हिंदी भाषा से संबंधित साहित्य की झलक एक स्थान पर देखने को उपलब्ध होती है।

3. केन्द्रीय कार्यालयों को हिंदी सर्वाधिक कार्य करने के लिए पुरस्कार/राजभाषा शील्ड : हिंदी दिवस के अवसर पर गृह मंत्रालय, भारत सरकार उन मंत्रालयों/विभागों/संस्थानों को राजभाषा शील्ड जैसे पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है जिन्होंने वर्ष के दौरान अपना सर्वाधिक कार्य हिंदी में किया हो।

इसी प्रकार कई मंत्रालयों/विभागों में भी अपने मंत्रालय/विभाग के उन कार्मिकों को पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है जिन्होंने पूरे वर्ष के दौरान सर्वाधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में किया हो। ऐसे पुरस्कार संबंधित कार्मिकों के अभिलेखों की पूर्ण जांच करने के बाद ही प्रदान किए जाते हैं।

मूलरूप में ऐसे समारोह आयोजित करने का लक्ष्य यह होता है कि अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इसके अतिरिक्त ऐसे कार्यक्रमों का यह उद्देश्य होता है कि हिंदी में मौलिक कार्य जैसे टिप्पण/मसौदे, पत्राचार आदि को बढ़ाया जाए। इन समारोहों के माध्यम से कार्मिकों को अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

हिंदी भाषा में कार्य करना न केवल हमारा नैतिक कर्त्तव्य है बल्कि यह हमारा संवैधानिक तथा प्रशासनिक उत्तरदायित्व भी है कि हम राजभाषा नियम/राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी किए गए अनुदेशों/आदेशों का अनुपालन करें। इस कार्य के निर्वहन

को हमें दिल से करना चाहिए न कि इसे एक बाध्यता समझना चाहिए।

हिंदी के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए हमें उन महापुरुषों के विचारों को भी ध्यान में रखना होगा जिन्होंने हिंदी भाषा के सम्मान में अपनी बात रखी। इनमें से कुछ के विचार इस प्रकार हैं :

1. देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिंदी राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है – "सुभाषचन्द्र बोस"

2. मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिंदी भाषा के अध्ययन में लगावें; हम यही समझें कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है – "विनोबा भावे"

3. जीवन के छोटे से छोटे क्षेत्र में हिंदी अपना दायित्व निभाने में समर्थ है – "पुरुषोत्तमदास टंडन"

4. हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय हृदय से बातचीत करता है – "महात्मा गांधी"

उपरोक्त के अलावा सरकारी कार्यालयों/संस्थानों में हिंदी की प्रगति के लिए विभिन्न स्लोगनों का प्रयोग किया जाता है जो हिंदी भाषा के उत्तरोत्तर विकास में सहायक सिद्ध हुए हैं। ऐसे स्लोगनों में कुछ नीचे दिए गए हैं :

1. सबको करती एक समान
   हिंदी भाषा बड़ी महान।

2. बिन मातृभाषा के साहित्य भी वीरान रहेगा,
   हिंदी रहेगी तभी हिन्दोस्तान रहेगा।

3. जो जन–जन को मिलाती है,
   वह हिंदी भाषा कहलाती है।

4. हिंदी हमारी भाषा ही नहीं,
   अभिलाषा भी है।

5. भारत की शान है हिंदी,
   हर भारतीय की पहचान है हिंदी।

अंत में यही कहा जा सकता है कि जब तक हम दिल से इस दिशा में, अग्रसर नहीं होंगे तब तक सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों को मूर्तरूप नहीं दिया जा सकता। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम अपनी भाषा का सम्मान करें तथा अपने जीवन में अपनाए।



सौर ऊर्जा : ऊर्जा का अक्षय स्रोत



सुश्री नेहा यादव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
मुख्यालय

सौर ऊर्जा एक सुरक्षित पर्यावरण, अनुकूल और जीवन जीने का किफायती तरीका है। यह ऊर्जा का एक अक्षय स्रोत है जो वायुमंडल में प्रदूषण का कारण नहीं है। जितना संभव हो, हम सभी को सौर ऊर्जा पर आधारित उपकरणों का उपयोग करना चाहिए और हमारी पृथ्वी को बचाना चाहिए।

जैसे–जैसे मानव सभ्यता प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर उन्नत स्वरूप बनाती गई, वैसे ही ऊर्जा की खपत भी बढ़ती ही गई। आदिकाल में जनसंख्या कम थी और व्यक्ति की आवश्यकताएं सीमित, जिसके कारण कृत्रिम रूप से उत्पादित ऊर्जा की कभी आवश्यकता ही महसूस नहीं की गई परंतु पिछले कुछ दशकों में जैविक रूप से सुलभ ऊर्जा के भंडारों का उत्तरोतर दोहन इस द्रुतगति से हुआ है कि आगामी एक सदी में ऊर्जा के समस्त परम्परागत स्रोत समाप्त हो जाने की संभावना है।

यदि इसी प्रकार से ऊर्जा के परम्परागत साधनों का उपयोग बढ़ता गया, तो भविष्य में भयानक ऊर्जा संकट का सामना करना पड़ सकता है। मानव ऊर्जा के परम्परागत स्रोतों में वृद्धि नहीं कर सकता, यह जैविक प्रक्रिया द्वारा लाखों करोड़ों वर्षों में बनते हैं। अतः विकल्प के तौर पर पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा तथा बायोगैस के विकल्प तलाशे गये। सौर ऊर्जा जिन्हें सोलर एनर्जी भी कहा जाता है, सस्ती, सर्वसुलभ, निरापद, निरंतर उपयोग में लाई जाने वाली अक्षय ऊर्जा है।

सौर ऊर्जा क्या है?

सौर ऊर्जा, ऊर्जा का वह माध्यम है जिसे सूर्य से प्राप्त किया जाता है और जिससे स्थानिक विशेषताएं यथा मौसम, जलवायु आदि प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। सूर्य ऊर्जा प्रदान करता है जो पृथ्वी पर जलवायु को प्रभावित करता है और जीवन के सभी रूपों के निर्वाह में सक्षम बनाता है। यह ऊर्जा का एक प्राकृतिक स्रोत है और स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है। दैनिक जीवन में हम सौर ऊर्जा के कई अनुप्रयोग करते हैं साथ ही इस ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा के रूप में रूपांतरित कर अन्य उपयोगों हेतु प्रयोग में लिया जा सकता है।

सौर ऊर्जा के उपयोग

सौर ऊर्जा से प्राप्त होने वाले लाभ/फायदों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है, पहला व्यक्तिगत लाभ तथा दूसरा पर्यावरणीय लाभ। घरेलू अनुप्रयोगों में सौर कुकर, सौर गर्म पानी की व्यवस्था, एयर कंडीशनर, सौर वाहन शामिल हैं, जबकि सौर ऊर्जा के औद्योगिक अनुप्रयोगों में बिजली उत्पादन शामिल है।

अब तक हमने ऊर्जा के कई वैकल्पिक स्रोतों को पहचान लिया है, जैसे परमाणु या पवन ऊर्जा आदि, परंतु ये उन्नत तकनीक, उच्च खर्च एवं प्रदूषण बढ़ाने वाले होते हैं, वहीं सौर ऊर्जा इस मामले में सर्वसुलभ, सस्ती एवं पर्यावरण हितैषी है इससे ऊर्जा निर्माण की प्रक्रिया में किसी प्रकार के रासायनिक उत्पाद या अवशिष्ट भी नहीं निकलते हैं जिससे पर्यावरण दूषित हो, इसीलिए इसके उपयोग से पर्यावरण स्वच्छ रहता है।

सौर ऊर्जा का दूसरा पहलू है आसान पहुँच। विद्युत ऊर्जा को देश के सुदूर इलाकों तक पहुंचाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसमें अपार जनशक्ति एवं धन का अपव्यय होता है। वहीं सौर

ऊर्जा की उपलब्धता बेहद सरल है, चाहे मरुस्थल हो या पर्वत या कोई द्वीप समूह, यह सर्वस्थानिक सुलभ है। सरकार के घर–घर बिजली पहुंचाने के लक्ष्य को सौर ऊर्जा संयंत्रों की मदद से पूर्ण किया जा सकता है। इससे अधिकांश लोगों तक न केवल बिजली सुविधाएं पहुंचाई जा सकती है, बल्कि लागत में भी बचत होती है।

विश्व के लगभग सभी देशों में व्यापक स्तर पर ऊर्जा के इस नवीकरणीय स्रोत को नई संभावनाओं के साथ अपनाया जा रहा है। इसका सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह ऊर्जा निकट भविष्य में कभी भी समाप्त नहीं होगी। इस प्रकार यह कहना गलत नहीं होगा कि आधुनिक युग की समस्याओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप सौर एनर्जी ऊर्जा का अच्छा व सस्ता विकल्प होने के कारण एक आधुनिक समाधान है।

यदि हम सौर ऊर्जा से होने वाले नुकसान या हानियों की बात करें तो संभवतः कोई बड़ा नुकसान नहीं है, परंतु इसकी अपनी कुछ सीमाएं हैं जो इसके उपयोग को सीमित करती हैं। पहली सीमा यह है कि इसका अधिकतम उपयोग सूर्य की रोशनी अर्थात् दिन के समय ही किया जा सकता है, जब सूरज की किरणें स्पष्ट रूप से धरती तक पहुँच रही हों। सर्दियों के मौसम या मानसून के दिनों में जब सूर्य बादलों के पीछे छिप जाता है, ऐसी स्थिति में सौर पैनल से ऊर्जा प्राप्ति संभव नहीं होती है। ऐसी स्थिति में, हमें ऊर्जा के अन्य स्रोतों पर निर्भर होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, बड़े सौर पैनल को स्थापित करने में अधिक खर्च की आवश्यकता पड़ती है, साथ ही इन उपकरणों का रखरखाव भी सावधानी से करना होता है।

भारत में सौर ऊर्जा

भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है, जहां पूरे वर्ष के अधिकतर दिन धरती पर धूप आती है और ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत में सौर ऊर्जा का भविष्य स्वर्णिम है। बिजली उत्पन्न करने के लिए पारम्परिक संसाधनों जैसे कोयला, पेट्रोलियम, जीवाश्म आदि का उपयोग करना हर दिन महंगा होता जा रहा है और बढ़ती महंगाई के कारण लोगों के लिए बिजली खर्च भी एक महत्वपूर्ण समस्या बन गयी है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए लोग बिजली उत्पादन के लिए सौर ऊर्जा के प्रति जागरूक हो रहे हैं एवं राज्य तथा केंद्र सरकारें भी सौर ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। भारत में सौर ऊर्जा बहुत तेज़ी से उभरकर सामने आ रही है और घरों के अलावा लोग कार्यालयों, खेतों आदि में भी सौर ऊर्जा से उत्पन्न बिजली का प्रयोग कर रहे हैं। हालांकि बिजली की बढ़ती कीमत ही एकमात्रा कारण नहीं है कि लोग सौर ऊर्जा के प्रति जागरूक हो रहे हैं बल्कि समय के साथ–साथ लोगों में पर्यावरण के लिए भी जागरूकता बढ़ गई है। बिजली उत्पादन के लिए प्रयोग होने वाले पारम्परिक संसाधनों के कारण ग्लोबल वार्मिंग यानी धरती के तापमान में बढ़ोतरी होती है जिससे पर्यावरण को क्षति हो रही है।

सौर ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार प्रयासरत है। आइए जानते हैं कि सरकार द्वारा इस दिशा में उठाये गए महत्वपूर्ण कदम क्या हैं –



अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा परियोजनाएं

1. अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा परियोजनाएं, जिन्हें अल्ट्रा मेगा सौर पार्क के रूप में भी जाना जाता है, भारत सरकार के नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा नियोजित सौर ऊर्जा परियोजनाओं की एक श्रृंखला है।

2. दिसंबर 2014 में, भारत सरकार ने कम से कम 25 सौर पार्क और अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा परियोजनाओं की स्थापना के लिए एक योजना आरंभ की, जिसमें 20 गीगावॉट से अधिक स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता जोड़ी गई। केंद्र सरकार इन सौर परियोजनाओं के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

भारत के प्रमुख सोलर पॉवर प्लांट

1. भादला सोलर पार्क (2,245 मेगावाट) – यह राजस्थान के भादला गाँव में है और सबसे अधिक क्षमता वाला सोलर पार्क है।

2. शक्ति स्थल सौर ऊर्जा परियोजना (2,050 मेगावाट) – यह कर्नाटक राज्य के पावगाड़ा में स्थापित है। भादला के बाद दूसरा नंबर इसका है।

3. अल्ट्र मेगा सोलर पार्क (1,000 मेगावाट) – यह आंध्र प्रदेश के कुरनूल में बनाया गया है।

4. रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर प्लांट – यह मध्य प्रदेश में स्थित है।

5. कामुथी सोलर पॉवर प्लांट – यह तमिलनाडु में है।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, पेरिस 2015

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद द्वारा 30 नवंबर 2015 को स्थापित, इंटरनेशनल सोलर अलायंस (आईएसए) का उद्देश्य सौर ऊर्जा को स्केल करना, सौर वित्त, प्रौद्योगिकियों, नवाचार, अनुसंधान और विकास की मांग के एकत्रीकरण के माध्यम से सौर ऊर्जा उत्पादन की लागत को कम करना है।

कुसुम योजना

देश भर में किसानों को सिंचाई के समय बिजली के संकट से जूझना पड़ता है और कभी आवश्यकता से अधिक या कम बरसात होने के कारण किसानों की फसल को गंभीर नुकसान भी होता है। ऐसे में कुसुम योजना की मदद से किसानों को खेती के लिए सौर ऊर्जा के माध्यम से निर्बाधित बिजली मिलेगी जिससे वे बेहतर खेती करने में सक्षम हो सकेंगे।

सोलर सब्सिडी स्कीम

इसके अलावा केंद्र सरकार ने सौर ऊर्जा के अधिकतम उपयोग के लिए सोलर सब्सिडी स्कीम की शुरूआत भी की है, जिसमें देश भर में लोगों को सौर ऊर्जा से बिजली उत्पन्न करने के लिए सरकार द्वारा सब्सिडी मिलेगी।

ई–चार्जिंग स्टेशन

सरकार की इन योजनाओं के अलावा ऑटोमोबाइल जगत में विभिन्न प्रचलित कंपनियां हैं जिन्होंने सौर ऊर्जा को अपनाना शुरू कर दिया है तथा सौर ऊर्जा पर चलने वाले वाहन बनाने की शुरूआत और ई–चार्जिंग स्टेशन की स्थापना आरंभ कर दी है। राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा को बेहतरीन बनाने के उद्देश्य से भारत के ऑटोमोबाइल क्षेत्र ने सौर ऊर्जा पर चलने वाले वाहन भी बाज़ार में पेश किये हैं। इन वाहनों को चार्ज करने के लिए ई–चार्जिंग स्टेशन की स्थापना की गई है जहाँ सौर उपकरणों से बिजली उत्पन्न की जाती है। सौर ऊर्जा पर चलने वाले वाहनों से महंगे पेट्रोल के खर्च से बचा जा सकता है तथा यह प्रदूषण कम करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

इन सभी योजनाओं और नीतियों के मद्देनज़र यह कहा जा सकता है कि भारत में सौर ऊर्जा का भविष्य उज्ज्वल है।

निष्कर्ष

सौर ऊर्जा, ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत होने के साथ–साथ अगली पीढ़ी का भविष्य भी है। यह एक सुरक्षित, पर्यावरण अनुकूल और जीवन जीने का किफायती तरीका है। इसके साथ ही, यह ऊर्जा का एक अक्षय स्रोत है जो वायुमंडल में प्रदूषण का कारण नहीं है। जितना संभव हो, हम सभी को सौर ऊर्जा पर आधारित उपकरणों का उपयोग करना चाहिए और हमारी पृथ्वी को बचाना चाहिए।

देश की सर्वमान्य भाषा हिंदी



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)
13, स्वास्तिक प्लाजा
देहरादून–248001

हमारे देश के संविधान के अनुसार हिंदी देश की राजभाषा है। देश के लगभग 55 करोड़ लोग हिंदी भाषी हैं। यदि हम पूरी दुनिया के नजरिये से देखें तो एक अनुमान के अनुसार लगभग 80 करोड़ लोग ऐसे हैं जो हिंदी बोल या समझ सकते हैं। आज भारत में ही नहीं अपितु संयुक्त राष्ट्र में भी हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है। हिंदी की तेजी से बढ़ती लोकप्रियता का अनुमान मात्र इतने से ही लगाया जा सकता है। वर्ष 1947 में अंग्रेज हमारे देश से चले गये लेकिन अंग्रेजीयत हमारे देश में आज भी जीवित है। आज हमें अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुए लगभग 75 वर्ष हो गये लेकिन हम अंग्रेजी का मोह आज तक नहीं त्याग सके तथा एक प्रकार से आज भी अंग्रेजी के गुलाम हैं। यह कहने में कोई संकोच नहीं कि जिस खुले दिल से पूर्ण विश्वास के साथ राजभाषा के रूप में सरकारी कामकाज में हिंदी को स्वीकार करने की आवश्यकता है, हम आज भी उससे अपने आप को कहीं दूर पाते हैं। हालांकि एक सच यह भी है कि राजभाषा अपना दायरा लगातार बढ़ा रही है तथा राजभाषा विभाग द्वारा इस सम्बन्ध में जो भी आवश्यक कदम हैं, सभी गंभीरतापूर्वक उठाये जा रहे हैं। देश की सभी क्षेत्रीय भाषाओं में समन्वय स्थापित करने तथा देश के हिंदी भाषी राज्यों में अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी द्वार खोले जाने हेतु हर संभव प्रयास किए जाने की आवश्यकता है ताकि लोगों को अन्य क्षेत्रीय भाषाएं सीखने के लिए प्रेरित किया जा सके जिससे कि देश की सभी भाषाओं के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित हो सके।

जहां तक सरकारी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने का प्रश्न है, सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। निश्चित रूप से समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में करने में कोई कठिनाई नहीं है। हिंदी भाषी राज्यों की राज्य सरकारों द्वारा मूल रूप से सरकारी कामकाज हिंदी में किया जा रहा है जो इस बात का प्रमाण है कि यदि दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कार्य किया जाए तो समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में करने में कहीं कोई कठिनाई नहीं है। इसके लिए समस्त कार्यालय प्रमुखों का दायित्व है कि वे केंद्र सरकार के कार्यालयों में सरकारी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्मिकों को प्रेरित करें तथा यथाआवश्यक प्रोत्साहन प्रदान करें। इसके साथ ही राजभाषा नीति संबंधी नियमों/आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु जहां भी सख्त होने की आवश्यकता है, आवश्यकतानुसार कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित कराया जाना चाहिए।

सरकारी कामकाज सहज एवं सरल हिंदी भाषा में किया जाना चाहिए। जनता की भाषा में कार्य होने से आम जनता सरकारी नीतियों/कार्यक्रमों को

सरलता से समझ सकेगी तथा इससे सरकार एवं जनता के बीच की दूरी कम होगी। इसके लिए आम जीवन में प्रचलित शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए। आम जनता सरकार की बात को जितना अधिक स्पष्टता से समझेगी, देश में विकास की गाड़ी भी उतनी अधिक तीव्रता से दौड़ेगी। हमारे देश में न्याय प्रणाली के भारतीयकरण एवं जनता की भाषा में न्याय प्रदान करने के लिए भी चर्चा की गई है। हाल ही में सम्पन्न मुख्यमंत्रियों एवं हाईकोर्ट के न्यायाधीशों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए हमारे देश के प्रधानमंत्री ने न्याय को स्थानीय भाषा में उपलब्ध कराने पर खासा जोर देते हुए कहा है कि हमारे देश की बड़ी आबादी न्यायिक प्रक्रिया और फैसलों को नहीं समझ पाती इसलिए न्याय जनता से जुड़ा होना चाहिए तथा जनता की भाषा में होना चाहिए। सम्मेलन में माननीय उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश द्वारा भी न्याय प्रणाली के भारतीयकरण पर जोर दिया गया है। इससे देश में एक नई उम्मीद जगी है। ऐसा कदम हिंदी के साथ ही साथ देश की समस्त भारतीय भाषाओं की तरक्की में भी सहायक सिद्ध होगा। इसके साथ ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को उनकी पसंद की भाषा में शिक्षा प्रदान करने पर भी कार्य किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत पढ़ाई को अब अंग्रेजी के साथ ही साथ सभी भारतीय भाषाओं में भी कराने पर जोर दिया गया है। हमारी सरकार सभी भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने तथा शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने हेतु प्रयासरत है। इससे हिंदी के साथ ही साथ हमारे देश की समस्त भाषाएं भी समृद्ध होंगी। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि हिंदी भाषा सभी भाषाओं को साथ लेकर चलती है तथा किसी भी भारतीय भाषा एवं क्षेत्रीय भाषा से उसका कोई विरोध नहीं है। यदि भारतीय भाषाएं समृद्ध एवं मजबूत होंगी तो हमारे देश की सर्वमान्य भाषा अर्थात राजभाषा हिंदी भी समृद्ध एवं मजबूत होगी। इससे देश में सद्भाव स्थापित होने के साथ ही विकास के नये द्वार भी खुलेंगे। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को हम आधे–अधूरे विश्वास के साथ नहीं अपितु पूर्ण विश्वास के साथ अपनाकर खुले दिल से स्वीकार करें।

हिंदी भाषा

हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में दूसरी आधिकारिक भाषा अंग्रेज़ी है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है। हिंदी भाषा का वर्णन भारतीय संविधान के भाग 17 एवं 8वीं अनुसूची में अनुच्छेद 343 से 351 में है।

मुख्य बिन्दु - भाषा का अर्थ एवं परिभाषा, बोली, विभाषा और भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा और राज्यभाषा, 'हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति तथा उसके विविध अर्थ, 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग, भाषा के रूप में 'हिन्दी' के विविध अर्थ, 'हिन्दी भाषा' का उद्भव/उत्पत्ति और विकास, भाषा के अर्थ में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग व विकास, हिन्दी भाषा के विविध रूप, हिंदी भाषा के उद्भव और विकास का इतिहास, हिन्दी भाषा के साहित्य का विभाजन या वर्गीकरण आदि।

विश्व स्तर पर हिंदी का महत्त्व



सुश्री सं.ग. श्रीमती
सेवानिवृत हिंदी अधिकारी
नं. 135, एजीज ले आउट
न्यू बीईएल रोड, बेंगलूर, कर्नाटक

हिंदी भाषा पूरे विश्व में प्रचारित हुई है। 13वीं सदी में अमीर खुसरों महान ज्ञानी थे। वे जन्म से भारतवासी नहीं थे। महान विद्वान, भाषाविद् और महान आत्मा थे। उन्होंने भारत को हृदय से प्यार किया। उन्हें यह महसूस हुआ कि यदि इस देश में ज्ञान–विज्ञान का प्रसार करना है और यदि यहाँ के निवासियों से प्रेम, सहानुभूति तथा सद्भाव का रिश्ता जोड़ना है तो व्यापक क्षेत्र में प्रचलित हिंदी भाषा का सहारा लेना अनिवार्य है। अमीर खुसरो ने हिंदी में मनोरंजक साहित्य की रचना की। 'बधिक बारी' नामक शब्दकोश तैयार करके फारसी, संस्कृत तथा हिंदी का भंडार पूरित किया। सामासिक संस्कृति की संवाहिका बनने योग्य सिद्ध किया हिंदी ने। महान कवि कबीर, जायसी, रसखान आदि कवियों ने और ज्ञानेश्वर, नामदेव, गुरुनानक, चैतन्य महाप्रभु, रामानंद जैसे संतों और महात्माओं ने सामासिक संस्कृति को परिपुष्ट किया। यही कारण है कि हिंदी अपने जन्म से ही विभिन्न क्षेत्रों, प्रदेशों, धर्मों, वर्गों और जातियों के बीच संपर्क भाषा बन गई। सांस्कृतिक पुर्नजागरण के आंदोलन, स्वाधीनता के पहले ही शुरू हुआ। सांस्कृतिक पुर्नजागरण, राष्ट्रीय आंदोलन और राष्ट्रवाणी हिंदी में अन्योन्यात्र संबंध है। ब्रह्म समाज के जनक राजा राम मोहन राय ने 1829 में बंगदूत पत्र निकाला जिसमें हिंदी को प्रमुख स्थान दिया। वे खुद वेदांत का हिंदी में भाष्य लिखकर उस पत्रिका में प्रकाशित करते थे। हिंदी की आवश्यकता थी आर्य समाज, ब्रह्म समाज और थियोसोफिकल सोसायटी को। गांधी जी को अफ्रीका और मॉरिशस में एहसास हो गया था कि विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी ही संपर्क सूत्र का काम कर सकती है। अफ्रीका के मजदूरों की कॉलोनी में, भारत के उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम से आने वाले मजदूर वास करते थे। वे आपस में संपर्क रखने के लिए टूटी–फूटी हिंदी बोलते थे। मॉरिशस में भी यही स्थिति थी। गांधी जी ने अपने रचनात्मक कार्य के लिए हिंदी को अभिन्न अंग बना लिया था।

महाराष्ट्र के लोकमान्य तिलक ने राष्ट्रभाषा की आवश्यकता महसूस की थी और कहा था कि हिंदी ही संपूर्ण देश की राष्ट्रवाणी बनने योग्य है। तिलक जी के आह्वान पर तमिलनाडु के महान कवि सुब्रह्मण्य भारती ने अपनी पत्रिका के माध्यम से हिंदी पाठ का प्रकाशन आरंभ किया था। हिंदी का संबंध भारत की सामासिक संस्कृति से, राष्ट्रीयता से और जातीय विकास के इतिहास से तो है, किन्तु क्षेत्रीय राजनीति की संकीर्णता से इसका विरोध है।

हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि वह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल–सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

हिंदी की लोकप्रियता को लेकर दुनिया भर में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य दुनियाभर में हिंदी का प्रचार–प्रसार करना है। अंतर्राष्ट्रीय भाषा के तौर पर हिंदी को स्थापित करने का भी उद्देश्य है। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर भारत समेत दुनिया के अनेक देशों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इसकी शुरूआत साल 2006 में हुई, पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह ने सन् 2006 में विश्व हिंदी दिवस की घोषणा की।

विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं। विश्व हिंदी सम्मेलन, सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है जिसमें विश्व भर से हिंदी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी तथा हिंदी प्रेमी जुटते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना ही सम्मेलन का उद्देश्य है। आईए, हम सब हिंदी के प्रचार–प्रसार में हाथ जोड़े।



क्रांतिकारियों का वसंती चोला

अभय राम सिंह
ग्राम मोहम्मदपुर
पोस्ट मरहट (खुटहन)
जिला जौनपुर (उ.प्र.)

वसंत एक यौवन है, तरुणाई है, उल्लास है जिसका उत्कर्ष होली है। हिरण्यकश्यप एक राजा थे जिसका पुत्र प्रहलाद विष्णु भक्त था। वह अपनी बहन होलिका के उकसाने पर अपने पुत्र प्रहलाद को निरन्तर प्रताड़ित करता था जिसके फलस्वरूप भगवान विष्णु ने नरसिंह रूप धारण कर हिरण्यकश्यप का वध कर दिया। अत्याचार को मिटाने के लिए वसंत ऋतु के अन्त में होलिका दहन का प्रचलन है। वस्तुतः वसन्त ऋतु अत्याचार का विनाश कर नवीनता और उल्लास का एक पर्व है। यह नए संवत् के आगमन की प्रतीक्षा की तत्परता है।

क्रांति का रंग वासंतिक एवं केसरिया है जो अदम्य साहस, शौर्य और आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत–प्रोत है। प्रसिद्ध कवियित्री सुभद्राकुमारी चौहान की निम्न पंक्तियाँ वीरता और वसंत की अनुपूरक हैं –

वीरों का कैसा हो वसंत,
आ रही हिमालय से पुकार,
है उदधि गरजता बार–बार,
प्राची पश्चिम भू नभ अपार,
सब पूँछ रहे हैं दिग दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत।
फूलों सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,
वधु वसुधा पुलकित अंग अंग,
है वीर देश के किन्तु कन्त,
वीरों का कैसा हो वसंत।
कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लंके तुझमें क्यों लगी आग,
ए कुरुक्षेत्र अब जाग जाग,
बतला अपने अनुभव अनन्त,
वीरों का कैसा हो वसंत।
हल्दी घाटी के शिला खण्ड,
ए दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचण्ड,
राणा ताना का कर घमण्ड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,
वीरों का कैसा हो वसन्त।

भारतीय क्रांतिकारियों ने हँसते–हँसते अपने रक्त से भारत माता का तिलक किया है। इन्होंने अंग्रेजों एवं देशज शत्रुओं से खून की होली खेलते हुए अपना वसंती चोला देश पर न्योछावर कर दिया। सन् 1965

में आई फिल्म 'शहीद' का अमर गीत "मेरा रंग दे बसंती चोला" आज भी लोकप्रिय एवं अनुकरणीय है।

वर्ष 1927 में बलिदानी राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान और उनके अन्य साथी काकोरी ट्रेन कांड में पकड़े जाने के कारण कारागार में थे। इन क्रांतिकारियों द्वारा रचित "भगत सिंह का अन्तिम गान" शीर्षक के रूप में वर्ष 1931 के साप्ताहिक 'अभ्युदय' के अंक में निम्नवत् प्रकाशित हुआ था –

मेरा रंग दे वसंती चोला,
इसी रंग में गांधी जी ने नमक पर धावा बोला,
इसी रंग में वीर शिवा ने माँ का बंधन खोला,
मेरा रंग दे वसंती चोला।
इसी रंग में भगत दत्त ने छोड़ा बम का गोला,
मेरा रंग दे वसंती चोला।

इसी रंग में पेशावर में पठानों ने सीना खोला,
मेरा रंग दे वसंती चोला।
इसी रंग में बिस्मिल–अशफाक ने
सरकारी खजाना खोला,
मेरा रंग से वसंती चोला।

इसी रंग में वीर मदन ने गवर्नमेंट पर धावा बोला,
मेरा रंग दे वसंती चोला।
इसी रंग में पद्मकान्त ने माडर्न पर धावा बोला,
मेरा रंग दे वसंती चोला।

रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक, भगत सिंह आदि क्रांतिकारियों की खून की होली से प्रभावित होकर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' "खून की होली जो खेली" लिखी थी जो गया से प्रकाशित हुई थी। इस कविता के कुछ अंश निम्नवत् हैं –

युवक जनों की है जान,
खून की होली जो खेली।
पाया है लोगों में मान,
खून की होली जो खेली।
रंग गए जैसे पलाश,
कुसुम किंशुक के सुहाए
कोकनद के पाए प्राण,
खून की होली जो खेली।

भारत के ध्वज में पहला रंग केसरिया है जो शुभ संकल्प, ज्ञान, तप, संयम और वैराग्य का रंग है। एक पारंपरिक गीत में होली गाती हुई ग्राम बाला को किसी और रंग का नहीं बल्कि के केसरिया चुनरी ही पसंद है–

मोरे बाँके साँवरिया,
मोहे ला दे केसरिया चुनरिया,
ओ रंगरेजरा न धानी गुलाबी,
मेरी रंग दे चुनरिया केसरिया।

गीतकार शैलेंद्र ने एक नगमा लिखा था जिसकी पंक्तियाँ निम्नवत् हैं –

मेहनतकश इंसान जाग उठा,
लो धरती के ख्वाब जगे। ...
वो मिट्टी सोना हो जाए,
जिसमें हमारा हाथ लगे। ...

इस नगमें में शैलेन्द्र जी ने यह पैगाम दिया है कि अपनी मेहनत से इंसान अपनी तरक्की की राह प्रशस्त कर सकता है। हमारे क्रांतिकारियों ने वासंती चोला पहनकर भारत देश को स्वतंत्र कराया है। इनके मार्ग दर्शन से ही हम अपनी स्वाधीनता और स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने में सिद्धहस्त हो सकेंगे।

खुशहाल जीवन जीने के मूल–मंत्र



श्री महेश म. जयसिंघानी
कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा
मध्य रेल, मुम्बई–400001

जीवन मनुष्य को ईश्वर का एक अनमोल वरदान है। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह इसे शानदार तरीके से जिए। लेकिन मनुष्य कुछ ऐसी गलतियाँ कर बैठता है कि जिससे वह जीवन का आनन्द नहीं ले पाता। जीवन जीने के कुछ मूल–मुत्र नीचे दिए गए हैं, जिन्हें अपनाकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को खुशहाल बना सकता है –

जीवन अपने तरीके से जीना : अक्सर हम यह सोचते रहते हैं कि 'लोग क्या कहेंगे' और इसी कारण हम अपनी बहुत सी इच्छाएं दबा लेते हैं। हम सोचते रहते है कि 'ऐसे करने से लोग क्या कहेंगे', 'ऐसे कपड़े पहनने से लोग क्या कहेंगे' इत्यादि। इस व्यर्थ की सोच के कारण हम जीवन अपने हिसाब से नहीं जी पाते और जीवन में यह अफसोस रह जाता है कि काश मैंने जीवन को अपने तरीके से जिया होता। जबकि सच्चाई तो यह है कि जिन लोगों की हम परवाह करते हैं कि वे हमारे बारे में क्या सोचेंगे, उन्हें कई बार हमारी परवाह ही नहीं होती। इसलिए 'लोग क्या सोचेंगे' की परवाह किए बिना जीवन को अपने तरीके से जीने में ही जीवन का सच्चा आनंद है। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि हम समाज द्वारा तय किए गए मानदंडों का उल्लंघन करें। हमें समाज द्वारा तय किए गए मानदंडों का पालन तो करना ही चाहिए, लेकिन व्यर्थ की सोच से कि 'लोग क्या कहेंगे' से बचना चाहिए। यह खुशहाल जीवन जीने के मूल–मंत्रों में से एक है।

अपने परिवार को समय देना : कई बार हम अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग सिर्फ कामों में या यूं ही व्यर्थ में बिता देते हैं और अपने परिवार को समय नहीं दे पाते हैं तथा यह समय बीत जाने पर अफसोस करते हैं कि काश मैंने अपने परिवार को, अपने बच्चों



को समय दिया होता। लेकिन 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' वाला हाल हो जाता है। अर्थात् समय बीत जाने के बाद पछताने से कोई लाभ नहीं होता है। बीता हुआ समय लौटकर वापस नहीं आता। इसका मतलब यह नहीं है कि अपना काम न किया जाए, बल्कि काम को योजनाबद्ध तरीके से किया जाए और परिवार के साथ बिताने के लिए भी वक्त अवश्य निकाला जाए।

अपनों के समक्ष अपनी भावनाओं की स्वच्छंद अभिव्यक्ति करना : ऐसा कई बार होता है कि हम अपनी भावनाओं को अपनों के समक्ष झिझक की वजह से यह सोचकर व्यक्त नहीं कर पाते कि 'कहीं उस व्यक्ति को खराब न लग जाए', 'अभी नहीं बाद में बता देंगे' आदि। लेकिन बाद में वह उपयुक्त समय कभी नहीं आता जब अपनी भावनाओं को दूसरों के समक्ष प्रकट किया जाए और यह मन में दबी रह जाती हैं। इसलिए भविष्य के लिए टालने से अच्छा है कि अपनी भावनाएं बेझिझक बता दी जाए, वरना अफसोस ही रह जाएगा कि काश मैंने अमुक बात अमुक व्यक्ति को बता दिया होता।

अपने दोस्तों से संपर्क में रहना : अक्सर हम व्यस्तता बताकर अपने दोस्तों के संपर्क में नहीं रह पाते। यह ठीक है कि दोस्त पढ़ाई, रोजगार इत्यादि के कारण हमसे दूर चले गए हों, लेकिन आज के इस संचार प्रौद्योगिकी के समय में कोई भी ज्यादा दूर नहीं है। हम अपने दोस्तों को ऑडियो कॉल कर सकते हैं, वीडियो कॉल कर सकते हैं, संदेश (मैसेज) भेज सकते हैं। अगर हम ऐसा नहीं करते तो धीरे–धीरे दोस्तों से हमारी दूरी बढ़ती चली जाती है और एक ऐसा समय आता है कि हम उन्हें खो देते हैं और इस बात का हमें बाद में अफसोस होता है।



अपने आप को खुश रखना : हमें इस बात का पता होता है कि हमें किस चीज से खुशी मिलती है, फिर भी हम वह काम नहीं करते। हम यह सोचते हैं कि हमारी खुशी किसी अपने से जुड़ी है और हम अपनी खुशियों की कुर्बानी दे देते हैं। बाद में हमें यह अफसोस होता है कि काश हमने अपनी खुशी के लिए ऐसा किया होता। ये चीजें मामूली होती हैं, इसके बावजूद हम अपनी खुशी के लिए ऐसा नहीं कर पाते।

अपने आप पर विश्वास रखना : आत्मविश्वास प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में जरूरी होता है। इसके बिना जीवन में उन्नति संभव नहीं है। कई बार आत्मविश्वास की कमी के कारण हम कोई कार्य यह सोचकर नहीं कर पाते कि कहीं यह गलत न हो जाए। हम जीवन में जोखिम उठाने से डरते हैं। जबकि यह बात सर्वविदित है कि जीवन में जोखिम उठाये बिना लाभ मिलना संभव नहीं है। जोखिम न उठाने के कारण हमें नुकसान उठाना पड़ता है और बाद में हमें यह अफसोस होता है कि काश ऐसा किया होता तो सही होता।

जीवन में इन मूल–मंत्रों को अपनाकर हम अपना जीवन खुशहाल बना सकते हैं। अतः इन्हें बेझिझक हमें जीवन में अपनाना चाहिए।

भाषा का सवाल कितना प्रासंगिक

प्रदीप तिवारी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा
सिविल लाईन, नागपुर

भाषा आभ्यन्तर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यह हमारी अस्मिता, विकास एवं सामाजिक सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है। पहली बार जब अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया तब इसका उद्देश्य था कि सांस्कृतिक एवं भाषायी विविधता को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर महत्व प्रदान किया जाए। भाषा समृद्धि एवं स्वाभिमान का प्रतीक है जिस रास्ते पर चलकर सशक्त राष्ट्रीयता का निर्माण होता है। वैश्वीकरण के प्रभाव ने भाषायी विविधता पर प्रहार किया है जिसका परिणाम यह है कि भारत की लगभग 40 प्रतिशत आबादी को उस भाषा में शिक्षा नहीं मिलती जिसमें वे बोलते एवं समझते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से सरकार ने इस बात को संज्ञान में लिया है।

भारतीय भाषाओं की विविधता अद्भुत है। क्षेत्र विशेष का प्रभाव भाषा पर साफ झलकता है। अनेक भाषाओं में बोलियों के विविध स्तर प्राप्त होते हैं। हर भाषा का अलग संसार है, अलग–अलग साहित्य है जिसकी श्रीवृद्धि उस भाषा के विशेष सृजनकर्ता करते हैं। सच पूछिए तो राष्ट्रीय हिंदी एवं प्रांतीय हिंदी में कोई भेद नहीं है। यह राजनीति का शौक है कि पुराने झगड़े को कैसे जिंदा रखा जाए। स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, सुब्रमणियम अय्यर, गोपालकृष्ण गोखले और श्री अरविन्द – सांस्कृतिक नवोत्थान के इन नेताओं में से कोई भी व्यक्ति जन्म से हिंदी भाषी नहीं था, किंतु उन्होंने देश–भाषाओं में से हिंदी को ही इस योग्य समझा कि राष्ट्रभाषा के रूप में उसका प्रचार किया जाए। जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर ने तो यहाँ तक कहा कि सभी भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी होनी चाहिए।

भाषा केवल आँकड़ों का खेल नहीं होना चाहिए क्योंकि आँकड़ों का मूल्य व्यवहारिक रूप में बहुत कम होता है। आज भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 42–43 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा हिंदी है। यह संख्या लगभग 60 करोड़ के आस–पास होगी। भारत के बाहर हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या भी कुछ कम नहीं है, यह आँकड़ों में लगभग 13 करोड़ के आस–पास है। यदि वैश्विक पटल पर देखें तो अमेरिका के 32 संस्थानों में हिंदी का अध्ययन, अध्यापन होता है, वहीं ब्रिटेन के तीन तथा जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों में हिंदी भाषा एवं साहित्य के रूप में स्थापित है। चीन ने 1942 से हिंदी अनुवाद के लिए अतिथि प्राध्यापकों को आमंत्रित करता आ रहा है। यदि वैश्विक पटल पर हिंदी स्थापित हुई है तो उसके पीछे बाजार का हाथ है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप बाजार का स्वरूप विश्व–व्यापी हुआ है जिसने भाषाओं की एकरूपता पर प्रहार किया – जैसा देश वैसा भेष – वैसी भाषा चरितार्थ हुई।

हिंदी भाषा ने सीमा का अतिक्रमण किया लेकिन भारत के प्रांतों की सीमाएँ इसके लिए अभेद्य रहीं। समय–समय पर कुछ राज्यों से हिंदी विरोध की खबरें आमबात हो चुकी हैं, जो गलती श्री एन.टी. रामाराव एवं श्री करुणानिधि कर चुके हैं यदि वही गलती समकालीन सरकारें दुहराती रहीं तो भारत की एकता के लिए समीचीन प्रतीत नहीं होता है। यह बिलकुल ठीक है कि किसी के ऊपर कोई भाषा थोपी नहीं जानी चाहिए, इसके बरक्स किसी भाषा के प्रति उपेक्षा का भाव भी नहीं होना चाहिए। लोकतंत्र में बहुमत की शक्ति अल्पमत की अपेक्षा ज्यादा होती है तो जिम्मेदारियाँ भी कुछ कम नहीं होती हैं। भारत की भाषिक अस्मिता, सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान है। एक सामासिक भारत के लिए बहुत सारे अवसर एवं चुनौतियाँ हैं इससे परे होना आधुनिक भारत की जरूरत है नहीं तो धर्म के नाम पर विग्रहित होने वाला भारत भाषाओं के नाम पर क्षत–विक्षत हो जाएगा।

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका

श्री उमाशंकर दूबे
लेखापरीक्षक
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

मनुष्य स्वभाव से एक प्रगतिशील प्राणी है। भौतिक सुख–सुविधाओं की तृप्ति के बावजूद भी मनुष्य के मन और मस्तिष्क में विविध प्रकार की मानसिक अतृप्ति बनी रहती है, जिसे पूर्णता प्रदान करने हेतु वह साहित्य, नृत्य, संगीत, चित्रकला, वास्तुकला आदि को अपनाता है तथा उसे निरंतर परिष्कृत करता है। अपने उन्नत संस्कृति के निमित्त वह अपने दैनिक क्रियाकलापों में धर्म, दर्शन और कलाओं का भी समावेश करता है।

भाषा और संस्कृति के अंतर्संबंध की बात करें तो भाषा को संस्कृति का अभिन्न अंग माना गया है। प्रसिद्ध मानवविज्ञानी एडवर्ड बर्नेट टायलर के शब्दों में 'संस्कृति, मानव जीवन और व्यवहार के एक वृहद क्षेत्र को शामिल करती है, तथा भाषा स्पष्ट रूप से इसका एक हिस्सा है, शायद इसका सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा।' भाषा और संस्कृति के अन्योन्याश्रय संबंध को इस प्रकार से समझा जा सकता है कि जहां एक ओर भाषा को संस्कृति के हिस्से के रूप में प्रसारित किया जाता है तो वहीं दूसरी ओर संस्कृति भी भाषा के माध्यम से ही अपने विविध आयामों के साथ प्रसारित होती है। प्राचीन आर्यभाषा संस्कृत से निकलकर वर्तमान स्वरूप तक पहुंचने में हिंदी को हजारों वर्षों की यात्रा तय करनी पड़ी है। पाली, प्रकृति, अपभ्रंश तथा अवहट्ट चरणों से गुजरते हुए हिंदी ने स्वयं को शाब्दिक तथा भाषाई आधार पर परिष्कृत किया। हिंदी के वर्तमान स्वरूप का उद्भव 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से प्रारंभ हुआ जो मानकीकरण के विभिन्न आयामों से गुजरने के पश्चात आज राजभाषा के गौरव से अलंकृत है। राष्ट्र के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका को हम निम्नवत चरणों में समझने का प्रयास करते हैं :–

(क) सांस्कृतिक विस्तार में प्राचीन हिंदी का योगदान : अपने आरंभिक कालखंड में हिंदी की सबसे प्राचीन भाषा पाली मानी जाती है, जो बौद्ध संस्कृति के प्रचार–प्रसार के केंद्र बिंदु में रही। बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध त्रिपिटक साहित्य पाली भाषा में ही लिखे गए जिसमें बुद्ध के उपदेशों का संकलन है। इसके अतिरिक्त अशोक के कुछ अभिलेख तथा तत्कालीन अन्य साहित्य भी पाली भाषा में पाए गए हैं। पाली के पश्चात प्रकृति भाषा ने आदिकाल के बौद्ध तथा जैन साहित्य निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जहां 'अर्धमगधी प्राकृत' जैन साहित्य की प्रमुख भाषा रही वहीं 'शौरसेनी प्राकृत' मथुरा के आसपास विकसित होकर विभिन्न बोलियों यथा ब्रजभाषा, कौरवी, हरियाणवी आदि का आधार बनी। इसके पश्चात् आर्य भाषा की तीसरी अवस्था अपभ्रंश मानी जाती है जो सातवीं शताब्दी के आसपास उत्तर पश्चिमी भारत में गुर्जर, आभी, जाट आदि समुदायों के बीच लोकप्रिय रही। इस रूप में अपभ्रंश मुख्यतः एक मिश्रित भाषिक परंपरा की बोली मानी जाती है। प्राचीन हिंदी की अंतिम अवस्था अवहट्ट मानी जाती है, जो 9वीं से 11वीं शताब्दी के बीच प्रचलन में रही। इस प्रकार हिंदी ने अपने आरंभिक काल में भी विभिन्न साहित्यिक माध्यमों से संस्कृति के प्रचार–प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

(ख) सांस्कृतिक विस्तार में मध्यकालीन हिंदी का योगदान : हिंदी की विकास यात्रा में मध्यकाल की सर्वमान्य अवधि 1350 ईस्वी से 1850 ईस्वी तक मानी जाती है। अपने मध्यकाल में हिंदी ने मुख्यतः अवधी, ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के रूप में भारतीय संस्कृति को विस्तार दिया। जहां अवधी भाषा ने सूफी तथा राम काव्यधारा को पल्लवित और पुष्पित किया वहीं ब्रजभाषा ने कृष्ण भक्तिधारा तथा रीतिकाव्य के संप्रेषण का माध्यम बनी। अवधी भाषा के प्रधान कवि तुलसीदास जी ने महाग्रंथ 'रामचरितमानस' की रचना कर विश्व को एक विशाल सांस्कृतिक विरासत भेंट की। इसी

कालखंड में प्रसिद्ध अवधी कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने पद्मावत सहित कुल 14 ग्रंथों की रचना की। सूरदास और मीरा ने संपूर्ण कृष्ण भक्ति काव्य को ब्रजभाषा में रचित कर इसके मिठास और भावप्रवणता को सदैव के लिए अमर कर दिया। एक ओर जहां सूरदास और मीरा ने ब्रजभाषा में भक्ति पक्ष को उद्घाटित किया तो वहीं रहीम ने मानवीय पक्ष के विविध आदर्शों को दोहावली के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाने का कार्य किया।

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में खड़ी बोली के रूप में हिंदी ने विभिन्न सांस्कृतिक पक्षों के प्रचार–प्रसार में प्रमुख भूमिका निभायी। मध्य देश के पूर्वी भाग में सिद्ध संप्रदाय तथा पश्चिमी भाग में नाथ संप्रदाय के प्रचार–प्रसार में क्रमशः सिद्ध साहित्य तथा नाथ साहित्य का प्रमुख योगदान रहा जो खड़ी बोली में लिखे गए थे। इसी काल–खंड में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली के पहले प्रमुख कवि होने की उपलब्धि हासिल की तथा कबीर दास, मलूक दास, गुरु नानक देव, शंकर देव आदि कवियों ने सधुकड़ी बोली का प्रयोग करते हुए भारत की मिश्रित संस्कृति को विस्तारित करने का कार्य किया। इस प्रकार, मध्यकाल में हिंदी ने विविध सांस्कृतिक पक्षों यथा भक्ति, दर्शन तथा प्रेम को उद्घाटित कर सामाजिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उत्थान हेतु विभिन्न माध्यमों से अपना अमूल्य योगदान दिया।

(ग) सांस्कृतिक विस्तार में आधुनिक हिंदी का योगदान : हिंदी के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक काल का तात्पर्य 1850 ईस्वीं के पश्चात् की हिंदी से है। इस कालखंड में हिंदी आधुनिकता के रथ पर सवार होकर विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों की साक्षी बनी। 19वीं सदी के मध्य में विभिन्न समाज सुधार आंदोलनों में हिंदी की प्रमुख भूमिका रही। इस दौर के प्रमुख सामाजिक व्यक्तित्वों ने हिंदी को ही अपनी प्रचार सामग्री का माध्यम बनाया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने खड़ी बोली में सत्यार्थ प्रकाश की रचना की तथा आर्य समाज के मूल सिद्धांतों को प्रकाशित किया। इसी प्रकार राजा राममोहन राय ने भी पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी को जन–जन तक पहुंचाया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्थ में भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्य आगमन हिंदी के विकास में एक अहम योगदान रखता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने नाटक, आलोचना, कहानी, निबंध और उपन्यास जैसी विधाओं के साथ हिंदी के पद्य और गद्य रचनाओं को जन–जन तक पहुंचाया। भारत की विविधता वादी संस्कृति के विभिन्न पक्षों को साहित्यिक माध्यमों से अभिव्यक्त किया जाने लगा। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में छायावाद का उद्भव हुआ। इस दौरान पंत, प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा की रचनाओं ने भावना, कल्पना तथा प्रतीकात्मकता को अपने लेखन का मुख्य तत्व बनाया। छायावादी रचनाओं ने तत्कालीन भारतीय संस्कृति के सौंदर्य तथा स्वच्छंदतावादी पक्ष को उद्घाटित करते हुए समाज के विभिन्न अमूर्त आयामों पर प्रकाश डाला। इसी कालखंड में प्रेमचंद ने अपनी कहानियों तथा उपन्यासों के माध्यम से भारत की ग्रामीण संस्कृति के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित किया। प्रेमचंद ने समाज के कटु सत्य को अपनी लेखनी का हिस्सा बनाया तथा सामंतवाद व ब्राह्मणवाद पर कुठाराघात किया। इस प्रकार हिंदी 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में व्यापक सामाजिक चेतना का माध्यम बनी।

गांधीजी की दृष्टि में अंग्रेजी का प्रचलन राजनीतिक–सांस्कृतिक गुलामी का परिणाम था। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने वर्धा एवं मद्रास में राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएं स्थापित की। इस प्रकार हिंदी के प्रसार को बल मिलने लगा और कई राष्ट्रीय हस्तियां तन–मन से हिंदी की सेवा में जुट गई। काका कालेलकर, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, बिनोवा भावे आदि के नाम इस दृष्टि से अग्रगण्य हैं। वर्ष 1929 ईस्वीं में सुभाष चंद्र बोस ने प्रांतीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में हिंदी प्रचार की भूमिका पर बल दिया। आजादी के पश्चात् संपूर्ण भारत में हिंदी के प्रयोगवादी दृष्टिकोण ने विश्व समुदाय को आकर्षित किया। अज्ञेय, मुक्तिबोध, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता आदि की रचनाओं ने भौतिकवाद के असली चेहरे को उद्घाटित किया तथा आधुनिक संस्कृति के पक्ष–विपक्ष पर प्रकाश डाला।

निष्कर्षतः हिंदी ने भारतीय संस्कृति के आत्मा की भांति विभिन्न कालों में अपना योगदान दिया। सर्वाधिक प्रचलित भाषा होने के नाते इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ तथा आज भारत सहित विश्व के लगभग 30 से अधिक देशों के करीब 100 विश्वविद्यालयों में इसके अध्यापन तथा शोध के कार्य संचालित हैं। हिंदी की प्रगति निश्चित तौर पर हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की प्रगति है।

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका

अशोक कुमार सिंह
सहायक संप्रेक्षा अधिकारी
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

विजित देश की चेतना को धूमिल करने के लिए विजेता देश अपनी भाषा उस पर थोप देता है। उस भाषा के बोझ तले वहाँ के लोगों की चिंतन क्षमता घट जाती है और उनकी मानसिकता इतनी रुग्ण हो जाती है कि वे अपनी भाषा की विशेषताओं को समझने का प्रयास भी नहीं करना चाहते। इस कारण उनका मौलिक चिंतन घट जाता है। हमारे देश पर इसी उद्देश्य से अंग्रेजी भाषा को थोपा गया। परंतु स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हमारे देश के नेताओं को आभास हो गया था कि हिंदी ही वह संपर्क–सूत्र है, जिसके माध्यम से सभी दिशाएँ मिलकर राष्ट्रीय एकता का जयघोष कर सकते हैं।

सन 1900 से पहले भारतेन्दु युग में हिंदी अपने पैरों पर खड़ी हो रही थी। उत्तर भारत के विविध क्षेत्रों की बोलियों के समुच्चय के रूप में हिंदी अपना स्थान बना रही थी। हिंदी में जनवादी विचारधारा के प्रसार के कारण भारतीय समाज के पुराने ढांचे से संतुष्ट न होकर व्यापक सुधार की भावना का उदय हो रहा था। समवेत स्वर में सभी के मन में यह धारणा बन रही थी –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल ।।

आजादी के आंदोलन के दौरान हमारे देश के नेताओं में अपनी बात और विचारधारा को सम्पूर्ण देश में फैलाने की आवश्यकता महसूस हुई। अपी बात को संपूर्ण देश में फैलाने के लिए हिंदी के सिवाय कोई विकल्प नहीं था। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, दयानन्द सरस्वती और सी. राजगोपालाचारी जैसे नेता हिंदी के माध्यम से जन–जन तक अपनी बात पहुंचाना चाहते थे। वर्ष 1918 ईस्वीं में हिंदी साहित्य सम्मेलन के इंदौर अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए गांधीजी ने राष्ट्रभाषा हिंदी का समर्थन किया – 'मेरा यह मत है कि हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए।'

इसी अधिवेशन में यह पारित किया गया कि प्रतिवर्ष 6 दक्षिण भारतीय युवक हिंदी सीखने को प्रयाग भेजे जाएं और 6 उत्तर भारतीय युवक को हिंदी का प्रचार करने के लिए दक्षिण भारत भेजा जाएं। इंदौर सम्मेलन के बाद गांधीजी ने हिंदी के कार्य को राष्ट्रीय व्रत बना दिया। गांधीजी की प्रेरणा से मद्रास एवं वर्धा में राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएँ स्थापित की गई। सन 1925 के कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित हुआ कि कांग्रेस और कांग्रेस की महासमिति का काम–काज आमतौर पर हिंदी में चलाया जाएगा।

देश की आजादी के आंदोलन के दौरान सभी नेता यह अच्छी तरह महसूस कर रहे थे कि हमारे न्यायालयों में जिस भाषा का प्रयोग होता है, वह भाषा जनता नहीं समझती है। जब जनता के मुद्दे पर बहस होती है, तो बहस उसी भाषा में होनी चाहिए; जिसे जनता समझे। इस विषय में गांधीजी का मत था कि न्यायालय में जनता की भाषा में ही बहस होनी चाहिए। इस दृष्टि से हिंदी ही उपयुक्त भाषा है।

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में जिस प्रकार से जनता से जुड़कर आंदोलन की धार तीव्र से तीव्रतर होती गई, वैसे–वैसे देश के नेताओं का ध्यान हिंदी भाषा पर टिक जाता। इसका कारण जनता से जुड़ने के लिए जनसभा ही एकमात्र माध्यम था। इसी सोच के कारण गांधी जी ने कहा –

मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हों, मैं उससे उसी तरह चिपटा रहूँगा। जिस तरह से बच्चा अपनी माँ की छाती से। वही मुझे जीवनदायी दूध दे सकती है। मैं अंग्रेजी को भी उसकी जगह प्यार करता हूँ, लेकिन अगर अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है, जिसकी वह हकदार नहीं है, तो मैं उससे सख्त नफरत करूँगा। यह बात मानी हुई है कि अंग्रेजी सारी दुनिया की भाषा बन गई है, इसलिए मैं उसे दूसरी जबान के तौर पर जगह दूँगा। लेकिन विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में, स्कूलों में नहीं। वह कुछ लोगों के सीखने की चीज हो सकती है, लाखों करोड़ों की नहीं। आज जब हमारे पास प्राथमिक शिक्षा को भी मुल्क में लाजमी बनाने के जरिए नहीं हैं तो हम अंग्रेजी सिखाने के जरिए कहाँ से जुटा सकते हैं? रूस ने बिना अंग्रेजी के विज्ञान में इतनी उन्नति की है। दूसरी तरफ हम आज अपनी मानसिक गुलामी की वजह से यह मानने लगे हैं कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। मैं इस चीज को नहीं मानता।

स्वतंत्रता आंदोलन की गति देने में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। जनता में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने में पत्र–पत्रिकाओं का विशेष योगदान है। कवियों ने जनमानस को युगीन परिस्थितियों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया।

"हम क्या थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ मिलकर विचारें ये समस्यायें सभी ।।"

हिंदी की ऐसी कविताओं ने जनता को उत्सर्ग और बलिदान की भावना से अपनी खोई हुई अस्मिता को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। हिंदी कविता के माध्यम से लोगों में देश–प्रेम की भावना का अनूठा संचार हुआ, जिसने अंग्रेज राज की चूलें हिलाकर रख दी।

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेलों हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

वीर रस की कविताओं ने सामान्य जनता में नई चेतना और नव उमंग का संचार किया। शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर', मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवियों के कारण आजादी के आंदोलन को नई दिशा मिली। भारतीय जनता के मन में कर्तव्य–बोध का एक ऐसा बीज अंकुरित हुआ, जिसने सबको आंदोलित कर दिया।

बहुसंख्यक जनता की भाषा के रूप में हिंदी ने नेताओं के लिए राष्ट्रीय भावना के प्रसार और आंदोलन को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गैर–हिंदी राज्यों एवं दक्षिण भारत के नेताओं की इसमें बड़ी भूमिका रही। यही वजह है कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गैर–हिंदी राज्यों में बहुत सारी संस्थाएँ स्थापित की गई, जहाँ पर हिंदी भाषा का शिक्षण और कई पाठ्यक्रम संचालित हुए। हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में अनेक अहिंदी भाषी नेताओं का भी महत्वपूर्ण योगदान है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई गति और नई दिशा प्रदान की। सचमुच भौगोलिक विविधता के बावजूद हिंदी ने राष्ट्रीय आंदोलन में एक ऐसे संपर्क–सूत्र का निर्माण किया, जिसमें सभी दिशाएँ मिलकर राष्ट्रीय एकता का जयघोष करने लगीं।



जीवन में श्री राम और श्री कृष्ण



योगेश कुमार मिश्र
हिंदी अधिकारी
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
असम, गुवाहाटी

जीवन में जब हम किसी से प्रभावित हो जाते हैं तब हमारी सोच, ध्यान और चिंतन–मनन उसी की परिधि में घूमते रहते हैं जब हम स्वयं को परमात्मा से जोड़ते हैं फिर उस समय तो वह सर्व शक्तिमान हमारे जीवन में इस तरह भर जाता है कि कहिए ही मत। मेरे जीवन पर श्रीराम और श्री कृष्ण का बहुत प्रभाव रहा है। इनका भजन हो, जप और चिंतन हो या इनके प्रति मेरे समर्पण की सभी उद्यम निःश्रेयस की ओर है।

श्रीराम से जुड़ी पहली घटना

श्रीराम लंका पर चढ़ाई के लिए तैयार थे। समुद्र के किनारे डेरा डाल दिया गया था। हनुमान जी लंका में विभीषण जी से मिल चुके थे, वे श्रीराम के प्रभाव और भक्तवत्सला का परिचय भी दे चुके थे ... विभीषण भी राम जी को उनके दर्शन के पूर्व से भजते रहे थे। भक्त प्रवर विभीषण ने रावण को बहुत समझाया – परिणाम से डराया, पर उसने बात तो नहीं मानी उल्टे विभीषण को लात मार कर देश निकाला दे दिया।

भगवान का दर्शन करके वे कृतार्थ तो थे लेकिन पता नहीं राम जी को क्या सूझा कि सागर का जल मंगा कर उनका



राज्याभिषेक कर दिया। अपमान से जलते हुए महाराज विभीषण को एक ऐसे व्यक्ति राजतिलक कर रहे थे जो स्वयं राज्य से रहित हैं ... जिनका नगर में जाना निषिद्ध है, जिनकी भार्या अपहरण की जा चुकी है, जो कषाय वेष में तपस्वी की भांति जीवन जी रहे हैं, जिनके पास सेना के नाम पर बंदर–भालू हैं ...

तो सत्य तीन तरह का होता है ... एक सुना हुआ, एक देखा हुआ और तीसरा भुगता हुआ ... अनुभव भी ऐसा ही होता है ... वे श्रीराम के भक्त हैं पर क्या उन्हें उनके बल वैभव का सहज अनुमान है ...? लखन लाल जिनसे कई बार उलझ चुके हैं ... चाहे भरत पर आक्रमण की बात हो या अवध छोड़ने की बात ... इन्हीं सब से तंग आकर वे अलगे जन्म में बड़े भाई बने ... हालांकि कृष्ण जी को देख उनको अफसोस ही हुआ होगा कि बेकार बड़े बने ... जीवन का आनंद तो भगवान इसी अवतार में ले रहे हैं। जब शेष अवतार लखनलाल जी संदेह में पड़ जा रहे हैं तो विभीषण जी को क्यों न हो!

जब विभीषण का अभिषेक हो रहा है उस समय उन्हें कैसा लग रहा होगा ... वे श्रीराम को कितना जानते थे ...

लेकिन वे रावण को भली भांति जानते थे उसके पराक्रम को अपनी आंखों से देखा था ... दूसरी तरफ श्रीराम जी ने अपना प्रताप नहीं दिखाया था ... कुछ महिमा थी भी तो सुना हुआ सत्य था, देखा हुआ या अनुभव किया हुआ नहीं था।

मैं इन सब बातों का आधार भी दूंगा ... आप सोच सकते हैं कि भला विभीषण को संदेह कैसे हो सकता है।

जो राज्य रावण को दस माथा दे कर मिला था वही राज्य श्रीराम उन्हें सकुचा कर दे रहे थे ... पर यह सब उन्हें औपचारिकता ही लग रहा होगा ... इसका आधार है लंका काण्ड ... राम रावण की लड़ाई चल रही है ... रावण पूरे अस्त्र–शस्त्र, कवच, ढाल, तलवार से सुसज्जित ... रथ आदि से पूर्ण ...

श्री राम रथ विहीन ...

रावण रथी विरथी, रघुवीरा ... आखिर विभीषण के मन में यह आया कैसे ... जब ब्रह्म मान रहे हैं फिर या प्रश्न यह संशय क्यों ...

इसी प्रसंग को एक वाद–विवाद प्रतियोगिता में उठाया गया ... जहां राम भक्त और राम विभक्त दोनों उपस्थित थे ...

मुझे याद आती कोलकाता की ... जहां यह प्रतियोगिता चल रही थी।

सत्य निष्ठा पर बहस हो रही थी ... वाद विवाद प्रतियोगिता में मैं और मेरे अन्य कार्यालय के साथी भाग ले रहे थे ... सब अपने–अपने चरम पर तर्क कर रहे थे ... जयप्रकाश जी मूर्धन्य वामपंथी विद्वान थे ... संस्कार से श्रीराम विरोधी थे ... लेकिन श्रीराम के चरित्र का आश्रय लेकर अपना पक्ष मजबूत कर रहे थे ... राम विरोधी राम का समर्थक हुआ जाता था ... और मैं राम जी का चाकर ... उनके इस तरकश के तीर को राम जी का विरोधी बन कर काट डाला ... आज मैं वह प्रसंग सार्वजनिक नहीं करूंगा ...

जयप्रकाश जी इस वाद–विवाद में प्रथम आए और मैं द्वितीय आया ...



होना भी यही चाहिए था रामभक्त को प्रथम आना ही चाहिए था यह धर्म की जय थी ... लेकिन जयप्रकाश जी जीत कर भी प्रसन्न नहीं थे ... उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उन्हें श्रीराम के भक्त द्वारा रगड़ दिया जाएगा ... वे बाद में भी कपार ठोक रहे थे ... उन्हें प्रथम आने की कोई खुशी नहीं थी ...

राम जी ऐसे ही हैं शरण आने पर राज्य देते हैं विरोध करने पर मुक्ति ... मानो कुछ न कुछ मिलब्बे करी ...

अब दूसरी घटना श्री कृष्ण की

द्रोपदी ने सर्वप्रथम अपने बाहुबली पतियों को पुकारा ... वह कौरवों का अपमान ही इस निश्चिंतता में करती है कि उसके पांच पति दृढ़ता से पीछे खड़े हैं। ये पांच पति साधारण योद्धा नहीं थे अपने–अपने क्षेत्रों में विश्वजयी थे, अपराजेय थे।

दु:शासन जब पांचाली को भारी सभा में खींच कर लाया उस समय वह एक वस्त्र में थी।

एक वस्त्र में क्यों थी ... वह रजस्वला थी ... खुले हुए केश थे ... एकांत सेवी थी ... उसी दशा में उसे खींच कर लाया गया था।

द्रोपदी के चीर हरण में भीष्म मौन थे ... शर सैया, अपमान और घुटन मिली जबकि इसके अलावा वे पूरे जीवन निष्पाप थे ...

जटायु के पास केवल एक पुण्य था वह सीता हरण के विरोध में खड़े हुए। बदले में राम की गोद में प्राण त्यागने का सुअवसर मिला साथ में श्री भगवान ने उनका अपने हाथों से अंतिम संस्कार किया ... जो सद्गति उनके पिता दशरथ जी को भी नहीं मिली वह जटायु को मिली ...

हम कब बोलते हैं यह तो गौर करने लायक है ही कब–कब चुप रह जाते हैं वह भी बड़े महत्व का है।

द्रोपदी ने बारी–बारी से पांचों पतियों को पुकारा और दोनों हाथों से अपने कपड़े

संभालती रही। फिर सभासदों को पुकारा ... सब मौन रहे कुछ एक सभा से हट गए ...

अब केवल अपनी भुजाओं का बल था ... पर सौ हाथियों के बल वाली उन्मत कामुक भुजाओं के समक्ष द्रोपदी की भुजा कितनी टिकती हालांकि वह भी याज्ञसेनी थी ...

अब वह उस सखा को पुकारती है जो सारे ब्रह्मांड का सखा है ...

'त्वमेव बंधुश्चसखा त्वमेव'

वह भी कहीं सुदूर युद्ध में रत था ... पुकारने में भी हे द्वारकाधीश जैसे भारी भरकम शब्द थे, गुरु संबोधन थे ... इतने ताम झाम में कैसे आते श्री कृष्ण ... कोई अपना कह के तो पुकारे ...

अब एक हाथ वस्त्र से छूट चुका था एक हाथ से पुकार रही थी ... अभी भी एक हाथ का सहारा था ... वह गोविंद बुलाती है, गोपाल बुलाती है ... खूब लड़ती है खूब बुलाती भी है ... कान्हा नहीं आए ... और जोर से और जोर से ...

वह कहती है ... मेरे कृष्ण ... उसकी भृकुटी के मध्य में उसके नेत्र गोलक स्थित हो जाते हैं ... वस्त्रों से हाथ छूट जाता है और दोनों हाथों का उर्ध्वाकार कर हे नाथ ... हे सखा ... हे यादव ... हे कृष्ण पुकारती है ... दोनों हाथों का छूट जाना ही कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण था ... और अब निःवस्त्र करने का सिलसिला चला ... दुःशासन खींचता गया ... साड़ी खत्म ही नहीं होती थी ... प्रार्थना की मुद्रा में द्रोपदी घूमती जाती थी ...

2020 लॉकडाउन के दौरान एक तंत्रिका तंत्र के वैज्ञानिक का मेरे मैसेंजर में संदेश आया ... क्या मेरी कुंडली देखेंगे ... हमने उनकी कुंडली देखी और उनका नंबर मांगा ...

वे महिला थीं नंबर देने में हिचकिचा रही थीं ... हमने कहा इतना समय नहीं है कि आपको संदेश कर के सब बताऊं अगर मन हो तो 8334806091 पर बात कर लीजिएगा

दूसरे ही पल मुझे आवेश आया और कुछ बातें उन्हें चार पांच बिंदुओं में बताया ... वो हैरान रह गईं ... इतना सटीक विश्लेषण ...

तब से लेकर आज तक वो बड़े संघर्ष में रहीं ... चंडीगढ़ में भी मिलना जुलना होता रहा ... कभी कभार घर भी आतीं ... ऐसे–ऐसे मुश्किल में बेचारी पड़ीं हर बार मुझसे बात करके वह पता नहीं एकदम तृप्त हो जाती ... पीछे कई समस्या थी उनके।

एक फूल सरीखा बेटा है उनका ... प्यार से उसे कान्हा कहती हैं ... पिता जी उनके माता पीतांबरा अर्थात बगलामुखी के अन्यतम साधक हैं ... वो स्वयं लंदन से पढ़ाई की हुई हैं और बेहद तेज मस्तिष्क की मालकिन हैं ...

एक महीने पहले उनकी जॉब छूट गई ... तंग हाल था उनका पर मेरे पेशकश करने पर भी मुझसे कोई मदद नहीं ली ... बोलीं आपको आखिरी में पुकारूँगी, मुझे अपने स्वाभिमान की रक्षा स्वयं करने दीजिए।

लगातार विपरीत परिस्थिति से लड़ते हुए अपने बालक को अभाव झेलते देख, आर्थिक तंगी, पारिवारिक कलह के कारण अंत में अपनी हाथ काट लीं ... खैर वो किसी तरह से बच गईं तो चंडीगढ़ से उनका फोन आया ... मैंने उन्हें बहुत समझाया ... और बोला ...

धैर्य, धैर्य, धैर्य ... व्यवहार में जमीन, लक्ष्य में आसमान, हृदय में प्रेम ... उत्फुल रह और रख साहस ... धैर्य, धैर्य और धैर्य ...

उन्होंने कहा मेरे कृष्ण!! कब तक ... आखिर द्रोपदी को कब तक परीक्षा देनी है ...

हमने कहा बात मान लेंगी??? बहन!

बोली हां

हमने कहा 09 जून तक ...

सुबह संध्या गायत्री में बैठा था ... द्रोपदी का कॉल आया ...

मल्टी नेशनल कम्पनी है ... 14 लाख का पैकेज ... योगेश जी कल 12 बजे रात से पहले ही मेल आ गया था ... 09 नहीं बीता था ... सुर्ख नेत्रों से आंसू ... गला भर्राया हुआ ...

हमने कहा हे मुरलीधर ... द्रोपदी के दोनों हाथों के उठने की आशा क्यों करते हो ... हर बार जरूरी है ...

कृष्ण सबके हैं ... कृष्ण सब में हैं

जग में सुंदर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।

कार्यालयों में बिजली की फिजूलखर्ची और उससे संबंधित कुछ प्रश्न – क्या – के माध्यम से



सुश्री आरती शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या. महानिदेशक लेखापरीक्षा
(कृषि, खाद्य व जल संसाधन)
नई दिल्ली–110002

वैसे तो कार्यालयों में बिजली की फिजूलखर्ची के अनेक उदाहरण मिलते हैं जो कर्मचारियों की उदासीनता का परिचायक है पर इनमें से एक अति प्रमुख बिजली की फिजूलखर्ची का उदाहरण देखने को मिलता है जिसमें बिजली एवं अन्य संसाधनों का बहुत ज्यादा व्यय होता है, वही उदाहरण इस लेख में वर्णित हैं।

कई कर्मचारी ए.सी. चलाकर अपने कमरे का दरवाज़ा खोल कर काम करते हैं। और जाते समय बंद नहीं करके जाते। ऐसा नहीं कि इससे होने वाले नुकसान से वे अवगत नहीं हैं। पर फिर भी वे ऐसा करते हैं। और एक गैर जिम्मेदाराना व्यवहार दर्शाते हैं। इसी संबंध में कुंठित करदाता द्वारा इस वर्ग से कुछ प्रश्न।

माननीय कर्मचारी

1. क्या आप अपने घर में भी ऐसा ही करते हैं?

2. क्या आप जानते हैं कि जो बिजली आप बरबाद कर रहे हैं, वह बिजली कितने परिवारों के लिए बिजली की आपूर्ति कर सकती है?

3. क्या आप बिजली की फिजूल खर्ची से सार्वजनिक कोष पर भार नहीं डाल रहे?

4. क्या आप सार्वजनिक संसाधन के प्रति अपनी उदासीनता नहीं दिखा रहे?

5. क्या आप बिजली की बचत के प्रति संवेदनशील नहीं हो सकते?

6. क्या आप इस बात से अवगत हैं कि कोयले की खपत से बनी यह बिजली कितनी महंगी है?

7. क्या आपको ज्ञान है कि जितनी कोयले की खपत होती है उतना ही वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ता है?

8. क्या आप जाते हैं कि ए.सी. के कंप्रेसर पर प्रतिकूल असर पड़ने से, वह जल्दी खराब हो सकता है? और उसकी रिपेयर या नई खरीद करनी पड़ सकती है जिसका भार आपको नहीं करदाता को उठाना है?

9. क्या आप जानते हैं कि आपका यह गलत व्यवहार औरों के लिए भी गलत उदाहरण बन सकता है?

10. बिजली की बचत संबंधित पाठ आपको विद्यार्थी स्तर पर भली भांति कंठस्थ थे पर जब अमल करने का समय आया, सारा ज्ञान नदारद हो गया। क्या यह ठीक कर रहे हैं आप?

11. क्या आप जाते हैं कि ...

चलिए छोड़िये आशा करते हैं कि इन दस प्रश्नों ने आपके मानसपटल पर दस्तक दी होगी और आपकी अंतरात्मा झकझोर दी होगी। कृपया अब बिजली की फिजूलखर्ची न करें जब कमरे में न हों तो एक बंद करके जाएं और हां, ए.सी. के चलते दरवाज़ा खोल के कतई काम न करें। विद्यालय के भूले हुए पाठ को याद करें और बिजली की बचत करें।

आपके शुभेच्छु

करदाता द्वारा वित्त पोषित सार्वजनिक संसाधन

भारत में जनसंख्या नियंत्रण कानून की प्रासंगिकता



डॉ. लाखा राम
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चंडीगढ़

जनसंख्या से तात्पर्य मानव की संख्या से है। भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। भारत में जनसंख्या विस्फोट ने एक गंभीर संकट का रूप धारण कर लिया है। राष्ट्र के सुनहरे भविष्य को दृष्टिगत रखकर जनसंख्या को सीमित करना हम सबका परम कर्तव्य है। भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने से पहले सरकार को इसके दुष्प्रभावों को लेकर लोगों में व्यापक जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है।

जन्म दर को कम करके जनसंख्या वृद्धि में कटौती करने को ही आम तौर पर जनसंख्या नियंत्रण माना जाता है। स्वतंत्र भारत में दुनिया का सबसे पहला जनसंख्या नियंत्रण हेतु राजकीय अभियान वर्ष 1951 में आरंभ किया गया किंतु इससे जनसंख्या नियंत्रण में सफलता नहीं मिल सकी। वर्ष 1975 के आपातकाल के दौरान बड़े स्तर पर जनसंख्या नियंत्रण के प्रयास किये गए। इन प्रयासों में कई अमानवीय तरीकों का उपयोग किया गया। इससे न सिर्फ यह कार्यक्रम असफल हुआ बल्कि लोगों में नियोजन और उसकी पद्धति को लेकर भय का माहौल उत्पन्न हो गया जिससे आगामी कई वर्षों तक जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों में बाधा उत्पन्न हुई। इस दौरान सत्तारूढ़ सरकारों ने इस ज्वलनशील मुद्दे को नहीं छुआ। वर्तमान मोदी सरकार भी देश के नागरिकों पर जबरन परिवार नियोजन थोपने के विचार की विरोधी है। ऐसे में शीघ्र ही एक राष्ट्रव्यापी जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने की उम्मीद नहीं की जा सकती है।

भारत प्राचीन समय से ही दुनिया के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों में शुमार रहा है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ पर 1901 में भारत की जनसंख्या 23.8 करोड़ और 1941 में 31.86 करोड़ थी। 1981 की जनगणना के अनुसार यह 68. 3 करोड़, 1991 तक भारत की जनसंख्या 84.4 करोड, 2001 में 102.87 करोड़ और वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 121.01 करोड़ हो गई जो कि उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और आस्ट्रेलिया की मिलाकर कुल जनसंख्या से भी अधिक है। विश्व के सबसे बड़े महाद्वीप अफ्रीका की संपूर्ण आबादी से भी 10 करोड़ अधिक है।

वर्तमान में दुनिया की 17.5 प्रतिशत आबादी भारत में वैश्विक सतह क्षेत्र के केवल 2.45 प्रतिशत, कृषि योग्य भूमि के 2 प्रतिशत और जल संसाधनों के 4 प्रतिशत के साथ निवास करती है। विश्व का हर छठा व्यक्ति भारतीय व हर पांचवां व्यक्ति चीन का है। इस तरह भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवां और जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद दूसरा स्थान है। विश्व की सबसे घनी आबादी वाले चीन में जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर भारत की वार्षिक दर से कम है। अमेरिका, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं जापान जैसे देशों का विश्व जनसंख्या में क्रमशः तीसरा, चौथा, पांचवां, छठा, सातवां तथा दसवां स्थान है। इन सभी देशों की संयुक्त जनसंख्या (121.02 करोड़) भारत की जनसंख्या के लगभग समान है। उल्लेखनीय है कि भारत की आबादी पिछले 50 सालों में हर 10 साल में 20 फीसदी की दर से बढ़ रही है। भारत में

साल 1975 से लेकर 2010 के दौरान जनसंख्या दोगुनी होकर 1.2 बिलियन हो गई। संसार के चार देश चीन, भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में ही संसार की 41 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। दुनिया की 90 प्रतिशत जनसंख्या 10 प्रतिशत क्षेत्र पर और 60 प्रतिशत आबादी 10 सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों में ही निवास करती है। इन 10 में से 6 एशिया में हैं। यह उम्मीद है कि भारत 2027 तक चीन को पछाड़कर विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश हो जाएगा तथा 2050 तक भारत की आबादी 1.7 बिलियन तक हो जाएगी। यही जनसंख्या वृद्धि दुनिया में अविकसित, गरीब और विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ी बाधा बनती है।

हालांकि भारत की जनसंख्या वृद्धि दर हमेशा बहुत ऊंची नहीं रही। वर्ष 1901 से 1951 के बीच औसत वार्षिक वृद्धि दर 1.33 प्रतिशत से अधिक नहीं रही जो कि एक साधारण वृद्धि दर कही जा सकती है। वर्ष 1911 से 1921 के बीच वृद्धि दर ऋणात्मक –0.03 प्रतिशत रही। इसका कारण 1918–19 के दौरान इंफ्लूएंजा महामारी के भीषण तांडव की वजह से 1.25 करोड़ यानी देश की कुल जनसंख्या के लगभग 5 प्रतिशत लोग कालग्रस्त हो गए। 1931 से पहले जन्म और मृत्यु दर दोनों ही ऊंची रही लेकिन इस संक्रमण वर्ष के बाद मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आई। 1951 से 1981 के बीच की अवधि को भारत में 'विस्फोटक अवधि' के रूप में जाना जाता है। इस दौरान औसत वार्षिक वृद्धि दर 2.2 प्रतिशत तक ऊंची रही। पिछले दशक (2001–2011) में भारत की जनसंख्या में 18.2 करोड़ की वृद्धि हुई जो ब्राजील की कुल जनसंख्या के लगभग समान है।

जनसंख्या एक संसाधन है। विश्व के सभी संसाधनों में मानवीय संसाधन का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी देश की उन्नति एवं अवनति में जनसंख्या का हाथ होता है। भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण भूमि एवं अन्य संसाधनों पर काफी दबाव महसूस किया जाता रहा है। जनसंख्या के अनुपात में संसाधनों की वृद्धि सीमित है। इस स्थिति में जनसांख्यिकीय लाभांश जनसांख्यिकीय अभिशाप में बदलता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर के मुद्दों पर प्रकाशित मानव विकास सूचकांक 2020 में 189 देशों की सूची में भारत 131वें पायदान पर है। वैश्विक भूख सूचकांक 2020 में 107 देशों की सूची में भारत 94वें स्थान पर है। विश्व बैंक द्वारा तैयार 174 देशों के वार्षिक मानव पूंजी सूचकांक 2020 में भारत का 116वां स्थान है। यह सूचकांक मानव पूंजी के प्रमुख घटकों स्वास्थ्य, जीवन प्रत्याशा, स्कूल में नामांकन और कुपोषण पर आधारित है।

फिलहाल, भारत अपनी तेजी से बढ़ती जनसंख्या को विकास की सीढ़ी नहीं बना पाया है, इसलिये भारत को अभी जनसंख्या पर नियंत्रण करना बहुत जरूरी है। वर्तमान में जनसंख्या नियंत्रण कानून का मामला माननीय सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन है। माननीय सुप्रीम कोर्ट में जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग करने वाले याचिकाकर्ता अश्विनी कुमार उपाध्याय ने कहा है कि देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन, कृषि भूमि, पेयजल और अन्य मूलभूत जरूरतों की उपलब्धता की तुलना में जनसंख्या लगातार चिंताजनक स्थिति निर्मित करते हुए दिखाई दे रही है। याचिका में यह भी मांग की गई है कि जनसंख्या नियंत्रण समवर्ती सूची में है, इसलिए माननीय सुप्रीम कोर्ट केंद्र सरकार को निर्देश दे कि वह नागरिकों के गुणवत्तापरक जीवन के लिए कड़े और प्रभावी नियम, कानून और दिशानिर्देश तैयार करे। हालांकि, इस दिशा में देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी की सरकार की ओर से 22 फरवरी 2000 में गठित वेंकटचलैया आयोग ने भी प्रभावी जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने की सिफारिश की थी। इस 11 सदस्यीय संविधान समीक्षा आयोग (वेंकटचलैया आयोग) ने दो वर्ष के परिश्रम के बाद 31 मार्च 2002 को प्रस्तुत प्रतिवेदन में सविधान में आर्टिकल 47–ए जोड़ने और जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने का सुझाव दिया था, मगर 2004 के चुनाव में एनडीए सरकार के सत्ता से बाहर होने से यह कानून नहीं बन सका।

हाल ही में, अश्विनी उपाध्याय ने पी.एम. ओ. में जनसंख्या नियंत्रण को लेकर दिए गए प्रेजेंटेशन में भी (16 अगस्त, 2019 को) कहा कि अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में भारत की दयनीय स्थिति का मुख्य

कारण भी जनसंख्या विस्फोट है। इसलिए वर्तमान मोदी सरकार को दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय देते हुए राष्ट्र हित में कठोर कानून बनाकर व उसका प्रभावी क्रियान्वयन करके ही भारत जैसे विविधताओं व जटिलताओं से भरे देश में भी एक सीमा तक जनसंख्या नियंत्रण को संभव बनाया जा सकता है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी जनसंख्या की भयावहता को समझते हुए (11 जुलाई 2021 को) विश्व जनसंख्या दिवस के मौके पर सूबे में नई जनसंख्या नीति 2021–2023 की घोषणा की और इस नीति का ड्राफ्ट तैयार करके वेबसाइट पर अपलोड कर दिया है। भारत की 138 करोड़ की आबादी में उत्तर प्रदेश का योगदान 25 करोड़ का है। यहां आबादी का घनत्व तो राष्ट्रीय औसत से दोगुना है, लेकिन प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत का आधा भी नहीं है। 15 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से भाषण देते हुए कहा था कि भारत में जो जनसंख्या विस्फोट हो रहा है, वो आने वाली पीढ़ी के लिए अनेक संकट पैदा करेगा। लेकिन ये भी मानना होगा कि देश का एक जागरूक वर्ग इससे होने वाली समस्याओं को समझते हुए अपने परिवार को सीमित रखता है। ये लोग एक तरह से देशभक्ति का ही प्रदर्शन करते हैं।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है जहाँ हर किसी को अपने व्यक्तिगत जीवन के विषय में निर्णय लेने का अधिकार है। भारत में कानून का सहारा लेने के बजाय जागरूकता अभियान, शिक्षा के स्तर को बढ़ाकर तथा गरीबी को समाप्त करने जैसे उपाय करके जनसंख्या नियंत्रण के लिये प्रयास करने चाहिये। परिवार नियोजन से जुड़े परिवारों को आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये तथा ऐसे परिवार जिन्होंने परिवार नियोजन को नहीं अपनाया है उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से परिवार नियोजन हेतु प्रेरित करना चाहिये। हालांकि आबादी पर काबू पाने के लिए देश में 1996 से काहिरा मॉडल लागू है जिसके तहत आबादी को नियंत्रित करने के लिए आम जन को बाध्य नहीं करके शिक्षा को बढ़ावा देकर छोटे परिवार को अपनाने के लिए सचेत किया जाता है। यह फार्मूला पूरी दुनिया अपना रही है।

हालांकि जनसंख्या की स्थिरता के लिए औसत वृद्धि दर 2.1 प्रतिशत होनी चाहिए जबकि चीन में 1.6 प्रतिशत से नीची हो गई जिससे बुजुर्गों की संख्या ज्यादा और नौजवान की आबादी कम हो गई जो चिंताजनक है। चीन से सबक लेते हुए भारत की स्थितियों में तो अविलंब ऐसे कानून की जरूरत है। आज दुनिया के सबसे युवा देशों में शुमार किया जाने वाला भारत तीन दशक बाद युवा नहीं रहेगा। जनसंख्या उम्रदराज होनी शुरू होगी, तो उत्पादकता घटेगी। उत्पादकता घटेगी, तो अगले तीन दशकों में हुई तरक्की पर भी लगाम लगेगी और कुछ सालों के लिए एक ठहराव आ जाएगा।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारत की अपार जनसंख्या को बेहतर स्वास्थ्य, आर्थिक उन्नति एवं विकासोत्पादन के समुचित साधन उपलब्ध कराकर राष्ट्र की सर्वोच्च संपत्ति बनाया जा सकता है। आज भारत में मानव संसाधन विकास एवं कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जिससे देश के विकास में मानव संसाधन को सक्रिय योगदान देने के योग्य बनाया जा सके।



नई सुबह



प्रशांत त्रिम्बक कपाले
प्रभारी हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)–2
महाराष्ट्र, नागपुर

मेरे नित्य दिनश्चर्या में सुबह का घूमना मुझे रोज़ नित नई ऊर्जा देता है। मानो सुबह की शीतल हवाएं मुझे दिन में शुभारंभ के साथ रोज़ नई–नई प्रेरणा देता है। घर के पास स्थित सोनेगांव तालाब के किनारे कभी कोई नया पंछी देखने को मिल जाता है। मैंने पाया है रोज़ का दिन अलग होता है और उस के साथ मिलने वाला सृष्टि में नित्य परिवर्तन अगर महसूस किया जाए तो ज़िंदगी में थकान और बोरियत कभी नहीं होगी और ज़िंदगी नित नई महसूस होगी।

आज मैंने सुबह भ्रमण के लिए साईकिल का सहारा लिया। तालाब के किनारे थोड़ा दूर एक पुरातन मंदिर है उससे आगे बबुल का वन है। कुछ दिनों से वहाँ कुछ हलचल दिख रही थी इसलिए मैंने आज साईकिल को उस ओर दिशा दीं। मैंने पाया कुछ लोग बबुल की शाखाओं की छटनी कर रहे थे। कुछ महिलाएं कटे हुए बबुल की शाखाओं को इकट्ठा कर बाँध रहे थे शायद शाम के भोजन की तैयारी हो सकती है।

थोड़ी दूर ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले एक गाँव में कुछ नवनिर्मित मकान बने हुए थे। सामने ज़िला परिषद की कन्या शाला थी। शाला के प्रांगण में कई नीम के वृक्ष लगे हुए थे। ग्रीष्म के मौसम में हरे–हरे पेड़ शीतलता प्रदान करते हैं। सामने एक पुरातन कुआँ था उसके पास बरगद, पीपल के पेड़ लगे हुए थे।

शाला के प्रांगण में नीम के वृक्ष के नीचे कुछ साफ़ जगह पर एक छरहरी कन्या 'कल्याणी', उम्र 18–20 साल अपनी दो सहेलियों के साथ दौड़, योगासन–व्यायाम कर रही थी। मुझे इस नई जगह की खोज करते हुए तथा उत्साहित वातावरण को देखते हुए आनंद की अनुभूति हुई। अब तो मेरे भ्रमण के दिनश्चर्या में यह स्थान अनायास जुड़ गया था।

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर मैं अपने कुछ मित्रों को लेकर यह स्थान दिखाने ले गया। आज मैंने पाया वह परिसर काफ़ी साफ़ सुथरा दिख रहा था। कल्याणी की कुछ सहेलियाँ और मित्र परिवार ने इस क्षेत्र में बहुत परिवर्तन किया है। मार्ग पर थोड़ी–थोड़ी दूरी पर गड्ढे खोदे गए तथा आम, नीम, जामुन, पीपल, बरगद, बहावा, गुलमोहर के पौधों का 'वृक्षारोपण' किया जा रहा है। कुछ लोग आम की गुठलियाँ भी बोने के लिए लाए थे। शाला के प्रांगण में 'वसुंधरा क्लब' के बैनर लगाए गए थे तथा लगाए जाने वाले पेड़ों की जानकारी दी गई थी तथा वृक्षारोपण और पेड़ से मिलने वाले फ़ायदों को सचित्र समझाया गया था। यह सत्य है कि गत वर्षों में हमने कोरोना महामारी के दौरान पाया की मरीजों को ऑक्सीजन दिलवाने के लिए परिवार वालों को कितनी मशक्क्त करनी पड़ती थी। इस सफल वृक्षारोपण के महान कार्य से आने वाले भविष्य में वातावरण में प्राणवायु का स्तर निश्चित ही बढ़ेगा।

15 अगस्त को कुछ स्कूली बच्चों को लेकर तथा क्षेत्र के पार्षद को साथ लेकर कल्याणी स्कूल पहुंची तथा स्कूल के प्रांगण में पार्षद के हाथों झंडा

फहराया गया तथा स्कूल के परिसर में बड़ी मात्रा में वृक्षारोपण करवाया, स्कूली बच्चों के लिए कसरत के कुछ उपकरण लगवाने की मांग सामने रखी गई थी जिसे पार्षद ने तत्वतः मंजूरी दे दी। साथ ही स्कूल के आने–जाने के लिए पक्की सीमेंट मार्ग की मांग की गई जिसे पार्षद ने अगले बजट में करवाने के लिए हामी भर दी। मैं इस सब प्रगति का चश्मदीद गवाह तो था ही साथ–साथ मुझे खुशी हो रही थी कि इंसान चाहे तो क्या नहीं करवा सकता।

जाड़े का मौसम सामने था अब परिसर में काफी सुधार हो गया था दिसम्बर के माह में अतिरिक्त बजट मंगवाया गया तथा स्कूल के नवीकरण के लिए बजट पारित होने की आहट मिली जिसका कार्य स्कूली सत्रांत के बाद अप्रैल से किया जाना प्रस्तावित था। 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित 'युवा दिवस' समारोह के दौरान कल्याणी ने स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा के अनावरण के समय पार्षद से कसरत के उपकरण की बात छेड़ी। उस वक्त भारत सरकार, खेल–कूद तथा युवा कल्याण मंत्रालय के माध्यम से देश में खेल–कूद को बढ़ावा देने के लिए 'ग्रीन जिम' को देश के शहर/ग्रामीण अंचल के रिहायशी इलाकों में लगवाने की योजना आई। 'कल्याणी' ने इस योजना के लिए फिर पार्षद के माध्यम से मांग रखी तो मार्च के माह में वह मंजूर भी हो गई। अप्रैल–मई के माह में ग्रीन जिम के उपकरण भी आ गए। अब स्कूल की ईमारत भी तैयार हो रही थी सोनेगांव से स्कूल तक सीमेंट का रास्ता भी तैयार हो रहा था।

1 जुलाई से पाठशाला शुरू होना तय था। गुरूपूर्णिमा के दिन स्कूल का उद्घाटन तथा ग्रीन जिम का हस्तांतरण होना निश्चित हुआ। परिसर में लाईम से मार्किंग की गई। नगर पालिका के मेयर, क्षेत्र के पार्षद, आमदार, क्षेत्र के खासदार को कार्यक्रम हेतु बुलाया गया। स्कूल को खूब सुंदर सजाया गया, हार लड़ी, जगमगाजी रोशनी की गई। वातावरण में चैतन्य था। कार्यक्रम के आयोजन के शुरूआत में स्कूली बच्चों द्वारा 'वंदेमातरम' गान हुआ।

फिर पार्षद का तथा अध्यक्षी भाषण हुआ। सभी ने कल्याणी की काफी तारीफ की। इस कल्याणी के द्वारा मांग करने पर इस क्षेत्र का विकास हुआ है, कल्याणी ने इस क्षेत्र की तकदीर ही बदल दी।

अंत में कल्याणी को आभार प्रदर्शन के लिए बुलाया गया। कल्याणी ने सभी को धन्यवाद देते हुए इस विकासशील क्षेत्र के परिवर्तन के लिए सरकारी योजना तथा उसे कार्यान्वयन के लिए प्राप्त सभी अधिकारी तथा जनसेवक/जनप्रतिनिधि/समितियों का आभार व्यक्त किया तथा सरकारी क्षेत्र में उसे मिले अतुलनीय सहयोग की हृदय से प्रशंसा की। भाषण के बीच में अध्यक्ष महोदय ने आभार प्रदर्शन कार्यक्रम को अल्पविराम देते हुए कल्याणी के भविष्य की योजना के बारे में पूछा। इस मंच के माध्यम से कल्याणी ने सभा को धन्यवाद देते हुए अपनी बात रखते हुए अपने भविष्य की योजना बताई। उसने कहा मैं महाराष्ट्र के अकाल पीड़ित क्षेत्र मराठवाड़ा से हूँ। मैंने गरीबी तथा अकाल को बचपन से बहुत करीब से देखा है। मेरे क्षेत्र में बारिश बहुत कम होती है, आपने पढ़ा होगा नागपुर से मराठवाड़ा क्षेत्र को टैंकर ट्रेन द्वारा पानी पहुँचाया गया है। मैंने अब यह ठान लिया है कि मैं शहर–गांव के हर क्षेत्र को हरा–भरा करना चाहती हूँ, जिसकी शुरूआत मैंने कुछ वर्ष पूर्व मराठवाड़ा के चार जिलों से की है और ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगवाकर बारिश के पानी को जमीन में ही रोकना मेरा मकसद है। साथ ही मेरा भारत के युवा–युवती को स्वस्थ रखने का इरादा है और यह मेरा मिशन है। मेरा अगला कदम होगा शहर तथा ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव लाना और मैं इस कार्य हेतु आप सभी से आशीर्वाद चाहूँगी। मेरी ज़िंदगी का अगला पड़ाव है पालघर जिले के पिछड़े हुए क्षेत्र मोखाड़ा तालुका का ग्रामीण भाग। तालियां बजती रही, यह शाला, यह 'ग्रीन जिम' कल से आपकी है, इसका रखरखाव करो और इस पूर्ण क्षेत्र को हरा–भरा बनाओ, मैं आप सभी को स्वस्थ देखना चाहती हूं। फिर वह (रुंधे हुए गले से) बोल रही थी 'आप सभी मुझे बहुत याद आओगे। फिर मिलते हैं, धन्यवाद। तालियां काफी देर तक बार–बार गूंजती रही।

इस आभार प्रदर्शन कार्यक्रम के पश्चात कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

अनुभूति



बी.एस. चौहान
1809, महागुन मेपल
प्लॉट एफ–26, सेक्टर–50
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आनंद अपने परिवार सहित सोनीपत डिस्ट्रिक्ट के नाहरी गांव में अपने परिवार के साथ रहता था। दस वर्ष पहले उसके पिताजी ने रेडीमेड गारमेंट्स का एक छोटा सा बिज़नेस प्रारम्भ किया और रोहिणी के सेक्टर–9 में रहने लगा। आनंद को अपने बचपन के मित्रों और सहपाठियों की बहुत याद सताती थी। दिल्ली यूनिवर्सिटी के शिवाजी कॉलेज से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आनंद एक छोटी सी नौकरी कर रहा था। जो उसे बिलकुल भी पसंद नहीं थी। वास्तव में ज़िन्दगी से जैसे ऊब रहा हो।

इधर पिताजी के व्यवसाय में बहुत बड़ा आर्थिक घाटा हो गया और उनका कारोबार जमीन पर आ टिका। पिताजी का व्यवहार आनंद के प्रति रूखा होता गया। इससे आनंद की निराशा और झुंझलाहट और बढ़ गई। वह परिवार से, समाज से यहाँ तक की देवी देवताओं से भी विद्रोह कर बैठा। सोचने लगा – इस समाज ने और देवों ने मुझे कुछ भी नहीं दिया है। फिर मैं इनका सम्मान ही क्यों करूँ? इसी झुंझलाहट में उसने एक दिन घर त्याग दिया और एक अनजान गंतव्य के सफर के लिए, कुछ आवश्यक सामान बांधकर रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। घर छोड़ते हुए उसे इस बात का भी एहसास नहीं था कि उसे जाना कहाँ है। अपने इस कदम के बारे में उसने किसी को भी नहीं बताया था। केवल माँ की आशांकित वेदना को ध्यान में रखते हुए उनके नाम एक पत्र लिखकर उनके ड्रेसिंग टेबल पर रख दिया। पत्र में लिखा था "माँ, मैं इस शहर से बाहर जा रहा हूँ। उचित समय पर लौट आऊंगा अतः मेरी बिलकुल भी चिंता मत करना।"

आनंद ने अपना ज़रूरी सामान जिसमें कैमरा, चैक बुक और क्रेडिट कार्ड सम्मिलित थे और कुछ कपड़े एक सूटकेस में पैक किये और शाम ढलने के पश्चात एक अज्ञात मंज़िल के लिए निकल पड़ा। क्योंकि दिमाग में कोई पहले से निश्चित योजना नहीं थी और उसका दिमाग कुछ काम नहीं कर रहा था, वह पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। लगभग साढ़े नौ बज चुके थे। उसे केवल मसूरी एक्सप्रेस में ही एक कन्फर्म सीट मिल पाई। दस बजे आकर ट्रेन में अपनी सीट ग्रहण की। सहयात्रियों से वार्तालाप करने के पश्चात उसने लैंड्सडोन जाने का मन बना लिया। यह जगह उत्तराखंड के पौढ़ी–गढ़वाल जिले में है और समुद्र तल से 5840 फुट की ऊंचाई पर है।

अगले दिन प्रातः छह बजे, कोटद्वार उतर कर आनंद एक बस से लैंड्सडोन पहुँच गया और वहां से एक टैंपो में बैठ कर नौडी गांव चला गया। वहां कोई परिचित व्यक्ति तो उसका था नहीं। जो भी पहले मिला उसी से उसने कुछ दिन रहने के लिए एक कमरे की फ़रमाईश कर दी। रंजीत नेगी ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार किया और अपने घर में एक कमरा उनको नाममात्र किराये पर दे दिया।

इस गांव में 32 परिवारों के घर थे जो लगभग कच्चे थे। पहाड़ों से पत्थर इकट्ठे कर के, गांव के जोहड़ की

मिट्टी की सहायता से घरों का निर्माण किया गया था।

आनंद ने रंजीत नेगी से पूछा – यहाँ सब उजाड़ सा लग रहा है। घर लगभग खाली से हैं। यहाँ के लोग कहाँ हैं?

नेगी – लोग अपनी जीविकार्जन के लिए दूर शहरों में चले गए हैं।

आनंद – कहाँ?

नेगी – ज़्यादातर लोग दिल्ली, बॉम्बे और कानपुर गए हैं। काफ़ी लोग पंजाब में वेतन के बदले में बड़े किसानों को खेती में मदद करने के लिए गए हैं।

आनंद – क्या वे वापिस आते हैं?

नेगी – कभी–कभी। वह भी यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके घर सुरक्षित हैं या नहीं।

नेगी की सहायता लेकर आनंद ने कुछ घर के मालिकों से संपर्क किया और उनसे भविष्य में वहाँ लौटने की पहल की। नेगी से मंजूरी लेकर उसने अपने कमरे का नवीनीकरण किया इससे उसकी जीवन क्रिया थोड़ी सी आरामदायक हो गई। नेगी से वार्तालाप की कड़ियाँ लंबी होती गईं और आनंद को इससे वहां की जलवायु खान–पान, फल–सब्ज़ियों और रहन–सहन और रिवाज़ों के बारे में काफी जानकारी मिली। गांव के आसपास घने जंगल थे।

आनंद के बैंक खाते में जो बचत थी और उससे जो ब्याज मिलता था, आनंद का जीवन निर्वाह हो रहा था।

आनंद प्रातः देव समय उठता और प्रतिदिन ध्यान में बैठता। बार–बार सोचा कि आखिर मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? जितना भी ज्यादा इस विषय पर सोचता उसके दिमाग़ की गुत्थियां उतनी ही उलझती जाती थी। कभी भी उसको इसका समुचित उत्तर नहीं मिला।

अपने बेचैन, विचलित और भटके मन से, आनंद इधर–उधर भटकने लगा।

इसी दुविधा में और नई जगहों की तलाश में एक दिन भटकते हुए वह लगभग तीन मील दूर एक गांव में पहुँच गया। उसने पाया कि गांव बिलकुल खाली था और वहां पर किसी भी व्यक्ति के रहने के कोई संकेत नज़र नहीं आ रहे थे।

लगभग शाम ढल चली थी, क्षितिज में सूर्य ढलने का आभास हो रहा था। अँधेरे ने जैसे सारे क्षेत्र को डस लिया हो। जैसे ही वह वापिस लौटने के लिए मुड़ा, उसे गांव के आखरी छोर पर एक घर में प्रकाश बिंदु प्रतीत हुए। शायद लालटेन की रौशनी झरोखे से होकर बाहर कुछ तलाश कर रही थी। आनंद उस घर पर पहुँच गया और दरवाज़ा खटखटा दिया।

आप कौन हो? क्या चाहते हो? – अंदर से एक मीठे से स्वर में किसी लड़की की आवाज़ आयी।

आनंद – मैं आनंद हूँ। मैं प्यासा हूँ। मुझे थोड़ा सा पानी चाहिए।

एक बहुत ही सुंदर लड़की, जो पढ़ी–लिखी और सभ्य प्रतीत हो रही थी, ने दरवाज़ा खोला और अंदर आने के लिए कहा – मैंने आपको कभी इस गांव में नहीं देखा है। आनंद के घर में प्रवेश करते ही लड़की ने बेंत की डंडियों से बना हुआ मूढ़ा दे दिया और कहा – कृपया बैठिये। मैं आपके लिए पानी लेकर आती हूँ।

रसोई में रखे कच्चे घड़े से पानी लाकर आनंद को देते हुए और अपना परिचय



करते हुए कहा – मेरे नाम अनुभूति है। यह मेरे माँ बाप द्वारा दिया हुआ नाम है। वैसे प्यार से मेरे पिताजी मुझे अनु बुलाते हैं क्योंकि उन्हें अनुभूति बुलाना थोड़ा सा अटपटा लग रहा था। लेकिन मेरी माँ मुझे खोज के नाम से पुकारती है।

आनंद – (पानी पीते हुए) आपका बहुत धन्यवाद, मुझे बहुत प्यास लगी थी। मैं आजकल नौडी गांव में रह रहा हूँ। वहाँ से यहाँ तक आने में मुझे लगभग एक घंटा लग गया और इस अँधेरे में वापस जाने के लिए मुझे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है। क्या मैं पूछ सकता हूँ यह आपके तीन नाम होने का क्या रहस्य है? और मैं आपको किस नाम से पुकारूँ?

अनु – आप मुझे किसी भी नाम से पुकार सकते हो। मेरी माँ ने पाया कि मैं हर समय अपनी आँखों से और शायद मन की आँखों से भी कुछ न कुछ खोजती रहती हूँ। विशेषकर सूर्य निकलने और शाम ढलने के समय। मैं सूर्य ढलने के बाद अपने घर की छत पर जाकर बैठ जाती और टिमटिमाते तारों, घुमड़ते और गरजते मेघों पर एकटक दृष्टि से देखती रहती और ठंडी समीर जब मेरे शरीर को छूती तो मेरी भावनाओं के तारों को झंकृत कर चली जाती और उसके बाद मैं निरंतर ख्यालों में खो जाती थी। इसलिए मेरी माँ ने मेरा नाम खोज रख दिया। अनेकों बार जब मैं आकाश को निहारती तो मुझे लगता कि आकाश की चादर के ऊपर बहुत कुछ छिपा हुआ है, जिसका अवलोकन मेरी कल्पना शक्ति से बाहर था। इस मुद्रा में ध्यानमग्न होकर मैं अपने जीवन की उद्देश्य ढूंढ़ती लेकिन लाख कोशिश करने पर भी वह मेरे मन की दृष्टि से ओझल ही रहता।

आनंद – आपकी बातें मेरे हृदय की गहराई को छू रही हैं और मुझे यह सब सुनने में बेहद आनंद आ रहा है। इसमें बहुत ही आध्यात्मिक, तात्विक और जीवन का गूढ़ रहस्य छिपा सा लगता है। जीवन का असली अर्थ और उद्देश्य क्या है इसी की खोज में तो मैं दिल्ली छोड़ कर यहाँ चला आया हूँ। लेकिन यहाँ भी भटकने के अतिरिक्त कुछ नहीं मिल पा रहा है। सही मायने में, मैं जीवन और उसके अर्थ की खोज में भटक रहा हूँ। आपका नाम जो खोज है न, वह मेरी वर्तमान स्थिति को बयान करता है।

अनु – ओह! इन बातों में आपसे मैं भूल गई कि क्या आप चाय पियेंगे? बाहर बूंदाबांदी होने लगी है, बादल गरज़ने लगे हैं और तेज़ वर्षा आने के आसार हो चले हैं।

आनंद – धन्यवाद चाय मिलेगी तो बहुत अच्छा महसूस होगा। क्या इस घर में कोई दूसरा व्यक्ति नहीं रहता?

अनु – नहीं, आज मैं अकेली ही हूँ। मेरा जीवन भी बहुत दुखों से भरा हुआ है। मैं ऐसे समय पर इस गांव में आयी हूँ जब मेरे सास–ससुर मेरी दूसरी शादी कराने के मकसद से मेरी माँ के गांव मेरे मामा के पास गए हुए हैं। मेरे माता पिता की ज़िम्मेदारियाँ निभाने के लिए केवल मेरे मामा ही हैं।

शादी के बाद केवल आठ महीने तक ही मैं अपने पति के साथ रह पायी थी। मेरा जीवन साथी जीवन भर तक साथ निभाए बिना ही मुझे छोड़ कर चले गए। 19 फरवरी 2020 को कोरोना के कारण वो मुझे सदा के लिए छोड़ गए। तब मैं केवल पच्चीस वर्ष की थी।

आनंद – यह सुनकर मेरा कलेजा फटा जा रहा है। आपकी बातों से वास्तव में, मैं बहुत दुःख महसूस कर रहा हूँ।

यह पुनर्विवाह की बात कैसे चल रही है? चलनी भी चाहिए आखिर इतनी लम्बी उम्र अकेले कैसे कट सकती है।

अनु – वास्तव में मैं दूसरी शादी नहीं करना चाहती हूँ। यह एक बहुत लम्बी और दुःख भरी कहानी है और इसका वर्णन करने में बहुत समय बीत जायेगा। इसके पीछे बहुत सारी घटनाएं और रहस्य छुपे हुए हैं। अच्छा होगा इस समय हम इस विषय पर चर्चा न करें।

बूंदाबांदी अब वर्षा में बदल चुकी थी। दूर कहीं से बिजली के कड़कने की आवाज़ आ रही थी। बादल घुमड़–घुमड़ कर गरजते हुए किसी अनहोनी घटना का सन्देश दे रहे थे।

ऐसी अवस्था में आनंद ने पूछा – मौसम ख़राब हो रहा है, मुझे भूख भी लगी है। काफी देर हो चली है। बाहर घना अँधेरा छा गया है। कृपया मेरा मार्गदर्शन करें कि कैसे मैं अपने स्थान पर शीघ्र ही सुरक्षित पहुँच पाऊँ?

अनु – आप चिंता मत कीजिये। मैं आपके लिए कुछ पकाती हूँ। समस्या केवल इतनी है कि घर में एक बड़ी सी घीया और कुछ तोरियाँ हैं। इसके अलावा कुछ आलू, प्याज़ और टमाटर भी हैं। बताईये इनमें से आप क्या पसंद करेंगे?

आनंद – मुझे सब सब्जियाँ अच्छी लगती हैं। आप कुछ भी पका सकती हैं लेकिन इसके बदले में आपको मुझसे कुछ पैसे स्वीकार करने होंगे।

अनु – कृपया पैसे देने की बात मत कीजिये। आपको दोनों सब्ज़ियों में से बराबर पसंद हैं तो मैं घीया बना रही हूँ। दिल्ली में ये सब्ज़ियाँ कैमिकल और कृत्रिम खाद से उगाई जाती हैं। यहाँ ऐसा कुछ इस्तेमाल में नहीं लाया जाता है और एक किस्म से यह आर्गेनिक हैं और प्राकृतिक रूप से उगाई जाती हैं।

जब खाना बनकर तैयार हो गया और अनु उसे प्लेट में परोसने वाली थी तो आनंद ने कहा।

आनंद – आप एक बार में ही चपाती बना लो और हम दोनों साथ इकट्ठे बैठकर ही खाएंगे।

अनु – ठीक है मैं पांच चपाती बना रही हूँ – तीन आपके लिए और दो स्वयं के लिए।

इसके पश्चात दोनों मिलकर खाने लगे और आनंद को भोजन बहुत ही स्वादिष्ट लगा।

आनंद – मैंने इतनी स्वादिष्ट घीया की सब्ज़ी कभी नहीं खाई। आपने इसमें क्या रेसिपी इस्तेमाल की है और कौन सा गरम मसाला डाला है जो यह इतनी स्वादिष्ट बन गई।

अनु – घर में न तो गरम मसाला है और न कुछ और मसाले । वास्तव में गरम मसाला, लाल मिर्च और ईमली जैसी खटाई इस घर में प्रयोग में लाई ही नहीं जाती। कुछ कच्ची हल्दी थी हरी प्याज़ थी और हरा धनिया था बस नमक डालकर इन सबके साथ सब्ज़ी बना ली। अब आपको स्वादिष्ट लगी है तो यह आपका जायका और आपकी समझ है।



आनंद – लेकिन फिर इतनी स्वादिष्ट कैसे है?

अनु ने इसका उत्तर नहीं दिया।

भोजन के बाद आनंद ने अनु को कुछ पैसे देने की पेशकश की लेकिन अनु ने साफ़ इंकार कर दिया और पैसे की बात दोबारा करने से साफ़ मना कर दिया।

इसके बाद आनंद ने कहा – कृपया मुझे नौडी गांव का रास्ता बता दीजिये ताकि मैं बारिश शुरू होने से पहले वहाँ पर पहुँच जाऊँ।

अनु – देखिये अभी लगभग रात के साढ़े दस बज रहे हैं। एक ऐसे स्थान के लिए जिसका रास्ता न मुझे मालूम है और न आपको, इस समय जाने का कोई औचित्य नज़र नहीं आता। वैसे भी बहुत अँधेरा हो चला है और किसी भी समय ज़ोर से वर्षा आ सकती है। समझदारी इसी में है कि आप अपने गाँव जाने का विचार भूल जाएं। पड़ोस का घर मेरे चाचा ससुर का है। वहाँ भी कोई नहीं रहता है आप वहाँ पर रात बिता सकते हैं।

जैसे ही अनु ने अपना कथन समाप्त किया। ज़ोर से बारिश होने लगी और दस मिनट के अंदर ही ओलावृष्टि भी होने लगी।

क्रमशः अगले अंक में .....

चल उड़ जा रे पंछी



संजय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)-I
मध्य प्रदेश, भोपाल

उग्रिन ने अपना जर्जर शरीर दाँयी ओर घुमाया। शरीर में इतनी भी शक्ति नहीं बची थी कि हाथ में लोटा पकड़कर पानी पी सके। एक अनंत पीड़ा उनके अंदर तक उतर गई। उन्होंने हाथ का इशारा करके सुखिया से लोटे में पानी देने को कहा। सुखिया आँगन से दौड़कर लोटे में पानी ले आई। फिर माधव के साथ मिलकर धीरे–धीरे उग्रिन को उठाया और पानी पिलाकर फिर तकिए पर लेटा दिया। उग्रिन की आँखें माधव और सुखिया को देखकर डबडबा गईं। दोनों उग्रिन की मंझली बहन कमला के नाती और नतिनी हैं। कमला के देहांत के बाद दोनों के माता–पिता भी जल्द ही भगवान को प्यारे हो गए। तब से इन दोनों को उग्रिन ने ही पालपोस कर बड़ा किया। पास में शीतला भी खड़ी है। एकदम सौम्यता की मूर्ति। शीतला से उग्रिन का कोई रक्त संबंध नहीं है। जब उग्रिन 15 साल पहले साधुओं के जत्थे के साथ सोनपुर के मेले गई थी तो वहाँ वह बच्ची उन्हें शीतला माँ के मंदिर की सीढ़ियों पर रोते हुए मिल गई थी। चार–पाँच साल की उम्र रही होगी शीतला की उस समय। उसी दिन बालिका का नामकरण शीतला माता के नाम पर शीतला हो गया। लोगों ने उग्रिन को बार–बार समझाया कि अन्जान मुसीबत गले में मत बाँधो। इसे या तो अनाथ आश्रम में डाल दो या फिर मंदिर की सीढ़ियों पर पड़ा रहने दो। पर उग्रिन चाहकर भी उस बच्ची को अपने से अलग नहीं कर पाए। अपने गोद से जैसे ही उन्होंने उसे उतारना चाहा तो शीतला ने झट से उग्रिन की छाती में अपना मुँह छिपा लिया और फफक कर रोने लगी। उग्रिन आखिर उसे अपने घर ले आए। घर में शीतला का किसी देवी की तरह स्वागत नहीं हुआ बल्कि हर किसी ने विरोध किया। उग्रिन के पाँच भाई कलकत्ता के सचिवालय में काम करते थे और घर चलाने के लिए हर महीने पैसे गाँव में भेजते थे। सभी ने अपना परिवार गाँव में छोड़ रखा था। उग्रिन से छोटे भाई तिलकधारी की पत्नी उमा तुनककर बोली 'हं! घर में पहले से दो महाजनों को बैठा करके रखा है पर तब भी इनको चैन नहीं है। क्या पैसे पेड़ पर उगते हैं? खुद तो कुछ कमाते नहीं और जो पैसे शहर से आए उसे भी भिखारियों में उड़ा देते हैं। उग्रिन को यह बात एक तीर की तरह चुभी। अभी पाँच साल पहले सत्तर साल की उम्र में भी वह सुबह 4 बजे उठकर वे कुदाल और हल उठाकर खेतों की तरफ निकल जाते और फिर खेतों में पानी पलटाकर ही घर लौटते थे। पर अचानक से उनकी तबियत बिगड़ने लगी और अब उनसे उस तरह से मेहनत नहीं हो पाती थी। उग्रिन के तीसरे भाई दीनानाथ ने जोर देकर कहा 'दादा। अब आप अपने आप को संभालिए। बचपन से आपने सबको संभाला है। हम सबको पालपोस कर बड़ा किया। आदमी बनाया। अपना खेत हम बँटाइदारों को दे देंगे। भगवान की कृपा से हम पाँचों भाई शहर में ठीक–ठाक कमा लेते हैं। क्यों चिंता करते हो?' दीनानाथ की बातों से उग्रिन का मन थोड़ा हल्का हुआ। उस दिन से उन्होंने खेतों की तरफ से सारा ध्यान हटाया और अपना सारा ध्यान ईश्वर चिंतन में लगाया। घर के एक कमरे को

धोकर उसमें सारे देवी–देवताओं की तस्वीर लगाई और शुरू हो गई उनकी भक्ति। पर आज पाँच साल बाद उग्रिन को अपनी असमर्थता का अहसास हुआ। आज अगर वह जवान होते हो क्या कोई इस तरह उन्हें कुछ सुना सकता था? उग्रिन ने अपनी त्यौरियाँ ऊपर चढ़ाई और तिलकधारी की पत्नी को कठोर आवाज में जवाब दिया। 'तिलक की बहुरानी। मुझे यह मत बताओ कि मैं कितना कमाता हूँ। यह मत भूलो की आज मेरी ही बदौलत तुम लोग आराम की जिंदगी जी रहे हो। मैंने अपनी जगह तिलक को शहर में नौकरी ना लगाई होती तो आज तुम इतने तामझाम में नहीं रहती। तुम मुझ पर उँगली उठा रही हो?' उग्रिन के तेवर देख उमा थोड़ा घबरा गई। तब तक दूसरे भाई जनकनंदन की पत्नी सावित्री उमा के पीठ पर उठकर आई और लड़ने की मुद्रा में उग्रिन से बोली 'सच तो कह रही हैं दीदी। यह अनाथ आश्रम है क्या? भले ही आपने इस घर के लिए किया है पर अब हमारे पति और बच्चे शहर में हड्डियाँ गलाते हैं तब जाकर इस घर में चूल्हा चलता है। आप चाहते हैं कि सारी संपत्ति यूँ ही रास्ते पर फेंक दी जाए। पहले ही आपके छोटी बहन के दोनों नातिनों को हम पाल रहे हैं।

उग्रिन का पारा यह सुनते ही चढ़ गया। तुनककर उन्होंने अपनी कमीज की सिलवटों को ऊपर चढ़ाया और बोले 'ऐसा है तो आज ही कर दो इस घर का बँटवारा और साथ–साथ खेतों में भी हिस्सा लगा दो। मुझे मेरा हिस्सा दे दो। मैं इन तीन बच्चों को उसमें ही पाल लूँगा।' बँटवारे का नाम सुनते ही उग्रिन की दोनों भौजाईयों का मुँह सूख गया। इस तरह इस बड़े कुटुंब में शीतला का स्वागत हुआ।

उग्रिन ने अपनी नजरें उठाकर माधव, सुखिया और शीलता को देखा और उनकी आँखों से आँसू की कुछ बूँदें तकिए पर ढुलक गईं। उग्रिन सोच रहे हैं कि उनके जाने के बाद इन तीनों का क्या होगा। सुखिया बेचारी तो बचपन से ही बोल नहीं सकती और माधव वह तो माटी का माधव है। अच्छे बुरे की कोई पहचान नहीं है, रुपया तक गिनना नहीं आता उसे। उग्रिन की नजर इन तीनों से हटकर अपने दालान में पड़े लोगों पर गई। उन्होंने पाया कि सैकड़ों लोगों का हुजुम उठकर उस दालान में आ गया है। हो भी क्यों ना? जब से उग्रिन ने कर्मक्षेत्र से संन्यास लिया और भक्ति में डूबे, तभी से पूरे गाँव में उनकी एक संत के रूप में ख्याति हो गई। वैसे तो उग्रिन के चौथे नंबर के भाई जोगेंद्र नारायण भी साधु के रूप में गाँव भर में विख्यात थे पर वह बाकी के चार भाईयों के साथ शहर में ही काम करते थे।

जब भी गाँव में सास–बहु या किसी भी समस्या को लेकर पंचायत होती तो उग्रिन को ही बुलाया जाता। उग्रिन ने कितने घरों को टूटने से बचाया था। कितने ही सास–बहु में उन्होंने मिलाप करवाया था गाँव के बच्चे प्यार से उग्रिन को बुढ़उ बाबा कहते थे। एक–एक करके सारे लोग चले गए और उग्रिन को नींद आ गई।

'बाबा, ओ बाबा! कैसे हो बाबा?' इन शब्दों के साथ उग्रिन की नींद खुली। सामने देखा तो जयप्रकाश बैठे थे। जयप्रकाश आसपास के 20 गाँवों के मुखिया हैं। समाज में अच्छी पकड़ है उनकी। जयप्रकाश के दादा जागीरदार सिंह उग्रिन से मात्र 10 वर्ष ही बड़े थे। जयप्रकाश को देखते ही उग्रिन पुराने विचारों में खो गए। दूर–दूर तक फैली खेतों की हरियाली। साल शायद 1910 रहा होगा। बड़े–बड़े वृक्ष दूर–दूर तक फैलकर धरा का श्रृंगार स्वयं अपने हाथों से कर रहे थे। उग्रिन की आयु उस समय शायद बारह वर्ष होगी। अपने तीनों छोटे भाईयों के साथ उग्रिन खेतों में दौड़े जा रहे थे। यहाँ दूर–दूर तक सब उनके ही खेत हैं। ना भी तो बीस बीघा से कम नहीं होंगे खेत। थककर सब खेतों में ही लेट गए। उग्रिन की नजर ऊपर उठी तो पाया कि घने–घने बादलों ने पूरे आसमान को घेर लिया है। शायद आज जोरों की बारिश होगी। उग्रिन ने लेटे हुए अपने छोटे भाई मोहन से पूछा 'क्यों रे मोहन, शर्त लगाता है। आज बहुत जोरों की बारिश होगी। मोहन ने कहा, ना दादा, सिर्फ बादल हैं। बारिश नहीं होगी। बाकी के दोनों छोटे भाई अवध और किशन तो इतने छोटे थे कि वह अपने दोनों अग्रजों के मुँह की ओर ही देखते रहे। मोहन ने कहा 'दादा जल्द ही घर चलो। आज बाबूजी आने वाले हैं। हमें घर पर ना देखकर माँ और जमुना को बहुत डाँट सुनने को मिलेगी। उग्रिन ने कहा 'अरे मोहन तू बहुत घबराता है। बाबूजी देर रात से पहले नहीं लौटेंगे।' उग्रिन के बाबूजी रमाकांत भागलपुर रियासत में दरबान थे। हर पखवाड़े अपने गाँव में छुट्टियों में आते थे और दो दिन घर पर रहकर वापस भागलपुर लौट जाते थे। उग्रिन को

लेकर रमाकांत के 5 बच्चे थे। चार लड़के और एक लड़की जमुना। उग्रिन की माँ सरस्वती तो सचमुच की सरस्वती थीं। सुंदर मुखमंडल, चेहरे पर सादगी। सुबह से घर के काम में लगी रहती और रात को जाकर उसको फुर्सत मिलती। जहाँ चारों भाई लेटे थे वहाँ अचानक से किसी चीज के सरसराहट ने सबका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। अवध और किशन तो इतना डर गए थे कि उग्रिन से चिपक गए। उग्रिन ने सबको साहस बँधाया 'डरो मत तुम लोग। तुम्हारे दादा हैं तुम्हारे साथ।' आवाज पेड़ों के पीछे से ही आ रही थी। मोहन ने लाठी उठा ली। सब साँसें थामे पेड़ की तरफ देख रहे थे। अचानक पेड़ों के पीछे से जागीरदार सिंह हाथ में बंदूक लिए निकले। जागीरदार सिंह बहुत बड़े क्रांतिकारी हो गए हैं। उम्र उनकी मात्र 22 वर्ष की होगी लेकिन विचार से खाँटी मार्क्सवादी हैं और अंग्रेजी राज की जंजीरों को उखाड़ फेंकना चाहते हैं। बिहार के इतिहास में यह समय दोतरफा संग्राम का था। एक तरफ तो भुपेंद्रनाथ दत्त और वारींदकुमार घोष ने सशस्त्र क्रांति का उद्घोष किया था। जागीरदार सिंह इसी दल के सदस्य थे। दूसरी तरफ सच्चिदानंद सिन्हा और मजहरुल हक के नेतृत्व में पृथक बिहार प्रांत का आंदोलन भी उफान पर था। गाँधी का पदार्पण तब तक भारतीय राजनीति में नहीं हुआ था। जागीरदार सिंह की नजरें उग्रिन और उसके भाईयों से मिली। उन्होंने राहत की साँस ली। 'अरे मुन्ना तुम हो। हमें तो लगा सिपाही होंगे।' जागीरदार ने अपना बंदूक और थैला उग्रिन के हाथ में दिया। 'मुन्ना इसे रखो। रात को हम तुम्हारे घर आकर ले जाएँगे।' उग्रिन ने पूछा 'दादा यह क्या है?' इस पर जागीरदार सिंह ने जोर से ठहाका मारा और कहा 'बबुआ यह मिठाई है जो हम अंग्रेजों को खिलाते हैं।'

जयप्रकाश को देखते ही उग्रिन को जागीरदार की याद आ गई थी। वही कद काठी, वही चेहरा मोहरा, वहीं हँसी। और फिर अपने तीनों अनुजों के बारे में सोचकर उग्रिन की आँखों से आँसू निकल आए। 1917 का साल उनकी आँखों के सामने घूम गया। जब अगल–बगल के गाँवों में जोरों का हैजा फैला था। उग्रिन के गाँव को भी इसने अपनी चपेट में ले लिया था। मोहन और अवध को रात से उल्टियाँ होनी चालू हो गई थी। सुबह होते–होते किशन की तबियत भी बिगड़ने लगी। उस समय गाँव में प्राथमिक अस्पतालों की बहुत कमी थी। जागीरदार सिंह ने गाँव में मोर्चा संभाल लिया था। सबने फैसला किया था कि बैलगाड़ी से सारे रोगियों को लेकर पटना के अस्पताल पहुँचेंगे। जागीरदार ने मोहन को गोद में उठाया और सरस्वती और उग्रिन ने बाकी दोनों बच्चों को। जमुना बेचारी भी डरी–डरी उन लोगों के पीछे चल रही थी। लेकिन जैसे ही वह लोग गाँव की बाड़ी से बाहर निकले थे तब तक उग्रिन के सारे अनुजों के प्राण पंचतत्व में विलीन हो चुके थे। सरस्वती का तो रो–रोकर बुरा हाल था। वह अपने तीनों बच्चों के शव को पकड़–पकड़ कर रोती थी। उग्रिन उस समय तक तरुण हो चले थे। पर यह अघात उनके हृदय पर भी लगा। उग्रिन बार–बार यह सोचते कि अब इन तीन देवताओं के दर्शन कब होंगे। पर सबसे अधिक आघात तो रमाकांत को लगा था। अपने कलेजे के तीन टुकड़ों को उन्होंने खोया था। इस घटना के बाद रमाकांत ऐसे टूटे कि उन्होंने रियासत की नौकरी छोड़ी और गाँव में ही आकर बस गए। जिस वर्ष की यह घटना थी उस वर्ष सरस्वती गर्भवती थी। 1918 में ही कमला का जन्म हुआ जिसके नाती और नातिन माधव और सुखिया हैं। कमला को देखकर सरस्वती अपने सारे गम भूल गई। कमला उनके अंधेरे जीवन में एक नया उजाला लेकर आई थी।

रमाकांत ने गाँव में अपनी जमीनों पर खेती करना चालू किया। कमला के जन्म के बाद एक–एक कर रमाकांत और सरस्वती को 5 और पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई। अब उग्रिन की उम्र अट्ठाईस वर्ष की हो चली थी। सरस्वती उग्रिन को देखकर फूले ना समाती थी पर अपने तीन दिवंगत पुत्रों के बारें में सोचकर उसकी आँखों से आँसू निकल आते। रमाकांत सरस्वती को ढाँढस बँधाते 'अरे सरसुतिया जाने वालों के साथ कोई थोड़े ही मर जाया करता है। वह तीनों तो देवता हो गए। अब जो परिवार है उसको संभाल। उग्रिन की उमर अब अट्ठाईस साल की हो गई है। उसकी उम्र में तो मेरे चार बच्चे हो गए थे। अब हमें उसके लिए एक अच्छी लड़की की तलाश करनी चाहिए।' उनकी बात सुनते ही सरस्वती बोली 'अरे मैं आपको बताना भूल गई, कल ही

शाम को मिश्रा जी आए थे। बोल रहे थे कि माधोपुर में द्वारकादास जी को अपनी बेटी के लिए एक सुयोग्य वर की तलाश है। ऐ जी पिछले साल मैं जमुनिया की शादी में गई थी न, वहाँ मैंने उस लड़की को देखा था। मुझे तो वह बहुत सुशील लगी। कहिए तो बात चलाऊँ।'

और इस तरह से उग्रिन और राधा परिणयसूत्र में बंध गए थे। उग्रिन को उस दिन ऐसा लगा था कि वह वर्षों से वह अधूरे थे और राधा ने आकर उनके जीवन को एक दिशा दी थी। राधा के साथ उग्रिन को समय का पता ही नहीं चलता था। शादी के कुछ दिनों बाद रमाकांत ने उग्रिन को अपने पास बिठाया और प्यार से समझाया 'देखो बेटा अब तुम्हारी शादी भी हो गई। गाँव में हमारे खेत तो है पर खेती पैसा माँगती है बेटा। कल कलकत्ता से तुम्हारे चाचा की चिट्ठी आई है। उन्होंने लिखा है कि भैय्या कलकत्ता में तो पैसा उड़ रहा है, उसे पकड़ने वाले का दिमाग चाहिए। बेटा तुम तो देख ही रहे हो तुमसे छोटे घर में सात भाई बहन हैं। कुछ उनका ख्याल करो। जमुना का तो अगले साल ब्याह कर देंगे। तुम्हारे भाई सब छोटे–छोटे हैं। उनके बारे में सोचो और शहर का रुख करो। वहाँ से जो पैसा भेजोगे उससे मैं यहाँ गांव में खेती संभालूंगा।' उग्रिन ने अपने दिल पर पत्थर रखा और अगली सुबह अपना सामान बैलगाड़ी में रखा। सुबह 5 बजे की ट्रेन थी। उग्रिन का दिल राधा से जुदाई की कल्पना में सिहर उठता था। ना चाहते हुए भी उग्रिन बैलगाड़ी में बैठे और उसमें से सर निकालकर राधा को देखा। राधा की आँखों में आँसू थे। इस तरह से उग्रिन ने कलकत्ता में कदम रखा। कलकत्ता की चकाचौंध ने उग्रिन को बहुत अधिक आकर्षित किया। कहाँ बिहार में उनका छोटा सा गाँव धानाडीह और कहाँ कलकत्ते जैसे विशाल महानगर। यहाँ हर मोड़ पर बड़ी–बड़ी मोटरगाड़ियाँ दौड़ रही थी। हावड़ा ब्रिज की विशालता ने उग्रिन को आकर्षित किया।

उग्रिन बार–बार पुराने दिनों की याद करते हैं। राधा अभी भी उनकी चेतना में बसी हुई है। वह अभी तक उसे विस्मृत नहीं कर पाए। आँखों से राधा को याद करके आँसू निकल आए। उन्हें याद आता है कि कैसे कलकत्ता में आकर उनका मन हमेशा राधा को याद करता था। यहाँ उग्रिन सचिवालय में दरबान थे। सुबह शाम अंग्रेज बहादुर को सलामी ठोकते थे। अंग्रेज बहादुर खुश होकर उनको कुछ ज्यादा पैसे दे दिया करते थे। यह पैसे उग्रिन की संपत्ति थे जिससे उन्हें राधा और अपनी माँ बाबूजी का ख्याल रखना था। अपने भाईयों को अच्छी परवरिश देनी थी। देखते–देखते 6 महीने बीत गए। एक दिन उग्रिन को अपने नाम एक टेलीग्राम मिला। उन दिनों टेलीग्राम मिलना पद और प्रतिष्ठा की निशानी माने जाते थे। उसमें सरस्वती ने लिखा था 'बिटुआ हमेशा खुश रहो। यहाँ गाँव में सब कुशल मंगल हैं। तुम्हारी बहुत याद आती है। बिटुआ अब तुम यहाँ गाँव में आ जाओ। अगले महीने जमुना का ब्याह तय कर दिया है। अब तुम्हारे बाबूजी स्वस्थ नहीं रहते। तुम्हें एक खुशखबरी देनी थी बेटा। राधा ने पिछले हफ्ते एक चाँद से मुन्ने को जन्म दिया है।' इसे पढ़कर उग्रिन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह जल्द ही गाँव के लिए रवाना हुए। वहाँ पर पहुँचकर उन्होंने माँ बाबूजी के पाँव छुए और फिर जल्द से घर में घुसकर अपने बेटे का माथा चूमा और उसी दिन अपने बेटे का नामकरण किया। अशोक। हमारा बिटुआ दुनिया में सम्राट अशोक की तरह शांति और अहिंसा फैलाएगा। कुछ ही दिनों में जमुना का ब्याह हो गया। और आखिर एक दिन दिल पर पत्थर रखकर उग्रिन को शहर का रुख करना पड़ा। उग्रिन ने अपने परिवार के बारे में ढेर सारे सपने संजो रखे थे। वह खूब मेहनत करते, रात दिन अपने परिवार के लिए सपने संजोते। इस तरह एक वर्ष बीत गया। एक वर्ष के बाद उग्रिन को एक टेलीग्राम मिला। सरस्वती ने उसमें लिखवाया था कि 'बेटा जल्द से घर आ जाओ। जरूरी काम है।' माँ की चिट्ठी थी, इसलिए जल्द से उग्रिन ने ट्रेन की टिकट कटाई। जब वह अपने घर पहुँचे तो सरस्वती ने उग्रिन को पकड़ लिया और फूट–फूट कर रोने लगी। 'बिटुआ हम अनाथ हो गए। पिछले हफ्ते तोर बाबूजी हम लोग को छोड़ कर भगवान के पास चले गए।' उग्रिन के ऊपर तो जैसे वज्रपात हुआ। वहीं वह खटिये पर गिर पड़े। उन्होंने अपने आप को जैसे–तैसे संभाला। उग्रिन की नजरें फिर राधा को खोजने लगी। 'माँ, राधा कहाँ है माँ। सरस्वती यह सुनकर और रोने लगी। 'बिटुआ जब तोरे बाबूजी बीमार पड़े तब से राधा बेचारी उनकी

सेवा में लगी रहती। यह बीमारी तोर बाबूजी के संग–संग राधा और तोर मुन्ना को भी ले गई।' उग्रिन सकते में आ गए। एक पल में उनकी दुनिया उजड़ गई थी। इस सदमे से वह फिर उबर नहीं पाए। एक महीने तक वह रोते रहे।

उग्रिन ने अब फैसला कर लिया था कि अब गाँव और अपनी माँ को छोड़कर नहीं जाएंगे। कलकत्ता से उन्हीं दिनों उग्रिन के चाचा गाँव आए थे। उन्होंने उग्रिन को शहर जाने के लिए बहुत समझाया। पर उग्रिन नहीं माने। उन्होंने कहा 'नहीं काका। हमसे अब शहर में काम नहीं हो पाएगा। यहाँ हमारे ना रहने से इतना बड़ा अनर्थ हो गया। आखिरी समय हम अपने बाबूजी के भी दर्शन नहीं कर पाए। क्या फायदा ऐसी नौकरी का। हाँ आप इतनी जिद कर रहे हैं तो आप तिलक को ले जाइए। तिलक बड़े हो ही गए हैं। यह शहर में रहकर काम संभाले। हम यहाँ गाँव में रहेंगे।' इस तरह तिलकधारी का कलकत्ता में आगमन हुआ। तिलकधारी की कद काठी पूरी तरह से उग्रिन की तरह थी। उग्रिन ने गाँव में खेती की बागडोर संभाली। समय का पहिया रफ्तार पकड़े दौड़ता गया। सारे भाई एक–एक करके बड़े होने लगे। और एक दिन तिलकधारी का विवाह उमा से हो गया। उग्रिन उस दिन बहुत खुश थे। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे तिलक की नहीं उनके अशोक की बारात आई है। शादी में वह जमकर नाचे। मगर जिस दिन से उमा का घर में आगमन हुआ उसी दिन से मानो घर को नजर लग गई। उमा बहुत बड़े घर की बेटी थी। उसका विवाह तिलकधारी से सिर्फ सरकारी नौकरी की बदौलत हुआ था। यह वह समय था जब किसी का सरकारी मुलाजिम होना गर्व और प्रतिष्ठा की बात समझी जाती थी। उमा ने सारे भाईयों की एकता को तोड़ा। पड़ोस की औरतों के साथ बैठकर अपने देवरों को रात दिन ताने मारना उसकी दिनचर्या बन गई थी। ऐसे ही एक दिन जनकनंदन आकर उग्रिन के पास बैठा और बोला 'भैय्या भाभी के ताने अब बर्दाश्त नहीं होते। दिन रात सबको कुछ ना कुछ सुनाती रहती है। आप शहर में काका से बात करके हमको शहर भिजवा दो। यहाँ हमारा दम घुटता है।' उग्रिन को यह बात ठीक लगी। उन्होंने काका से बात की और जनकनंदन को कलकत्ते में भिजवा दिया। एक–एक कर कलकत्ता में उन्होंने सारे भाईयों को रवाना कर दिया और गाँव की खेती का भार उग्रिन ने पूरी तरह से अपने ऊपर उठा लिया। एक–एक करके उग्रिन ने अपनी मंझली बहन कमला और सारे भाईयों का विवाह किया पर उग्रिन के तीसरे नंबर के भाई जोगेंद्र नारायण ने आबाल ब्रह्मचारी रहकर ईश्वर चिंतन करना ही उचित समझा। उग्रिन ने उन्हें बहुत समझाया पर जब वह नहीं माने तो उसे ईश्वर की इच्छा समझकर अपनी जिद को उन्होंने तिलांजली दे दी। सरस्वती के घर में चार–चार बहुरानियाँ आई थी। सरस्वती का मन इन सबको देखकर खुश हो जाया करता था। पर वह उग्रिन को देखकर उदास हो जाती।

एक दिन सरस्वती ने खाना खाने के बाद उग्रिन को अपने पास बिठाया और कहा 'बिटुआ तोहार सारे भाईयों का घर बस गया। तेरे बाबूजी परसों हमारे सपने में आए थे। बोल रहे थे कि सरसुती अब तुम्हारा काम पूरा हुआ। सारे बेटे बेटियों का तुमने विवाह कर दिया। अब मेरे पास आ जाओ। हम बोले नाहीं जी। अभी उग्रिन अकेला है। उसे कैसे छोड़



दें हम। बिटुआ हमारा मन तुम्हारी तरफ से बहुत दुखी रहता है। देख बेटा, मेरी बात मान जा और घर बसा ले। तेरी नई बहुरानी राधा की कमी को पूरा कर देगी।' उग्रिन ने कहा 'नहीं माँ। राधा की कमी को कोई पूरा नहीं कर सकता। और मेरे भाईयों का तो परिवार बस गया है ना माँ। मैं उसे देखकर ही खुश हो जाऊँगा।' सरस्वती के सारे तर्क उग्रिन के सामने परास्त हो चुके थे। उन्होंने उग्रिन के माथे को चूमा और आशीर्वाद दिया। एक वर्ष के भीतर सरस्वती भी परमात्मा में लीन हो गई। उग्रिन उस दिन फूट–फूट कर रोए थे। पर जल्द ही उन्होंने अपने आप को संभाला क्योंकि अब सारे कुटुंब की जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी।

अब उग्रिन की उम्र करीब पचास के आस–पास हो चली थी। उन्होंने सारे परिवार का भार अपने कंधों पर उठाया ताकि उनके भाई सारी चिंताओं से निवृत्त होकर शहर में पैसा कमा सकें। देखते–देखते उग्रिन के सारे भाईयों का परिवार बढ़ने लगा। लेकिन उग्रिन घर के आए दिन के नोंक–झोंक से परेशान रहते। उमा और सावित्री ने घर में तांडव मचा रखा था। हर छोटी–छोटी बात पर घर में क्लेश। अंत में उन्होंने शहर से अपने भाईयों को बुलाया और सबकी सहमति से आंगन और चूल्हे का बँटवारा कर दिया। जिस घर को उन्होंने अपनी मेहनत और प्रेम से जोड़ कर रखा था वह क्षण भर में तिनका–तिनका होकर बिखर चुका था। जहाँ कभी एक चूल्हा जलता था उस जगह पर अब पाँच–पाँच चूल्हे जलने लगे थे। उग्रिन ने घर में दालान में अपनी जगह बनाई जो घर से ठीक बाहर की ओर था। बीच–बीच में उन्हें घर के आंगन से घर की औरतों के लड़ाईयों की आवाज सुनाई देती थी। यह सब देखकर उनका मन और दुखी हो जाता था। पर बीस सालों बाद जब इस घर में सुखिया, माधव और शीतला आए तब से उग्रिन का मन फिर से खुश रहने लगा। वह इन बच्चों के हाथ पकड़कर दूर–दूर खेतों में निकल जाते थे। कभी उन्हें गोद में खिलाते। उन बच्चों की मासूमियत ने वापस से उग्रिन का मन मोह लिया था।

'दादा जी, उठिए दादाजी।' इन शब्दों के साथ शीतला ने उग्रिन को जगाया। उग्रिन ने शीतला को देखा। आह कितनी शांति है इसके मुखमंडल पर। सोच रहे हैं कि उनके भाईयों ने अपने बेटियों और पोतियों का विवाह तो कर दिया पर शीतला और सुखिया के बारे में कुछ नहीं सोचा। कितनी आस थी उग्रिन को कि अपने हाथों से सुखिया और शीतला को डोली में बिठाएंगे लेकिन अब शायद ऐसा ना हो पाए। अब तो ऐसा लगता है कि प्राण किसी भी क्षण परमात्मा में लीन हुए ही समझो। एक हफ्ते पहले तक वह ठीक थे। रात को अचानक से कुत्ते के भौंकने की आवाज से वह उठे और कुत्ते को मारने जा ही रहे थे कि अचानक से उनका पाँव फिसला और वह गिर पड़े। तब से उन्होंने जो बिस्तर को पकड़ा तो फिर उठ नहीं पाए। शीतला को उन्होंने अपने पास बुलाया और कहा 'बेटा, अब मैं चलता हूँ। मेरे बिस्तर के नीचे संदूक में कुछ पैसे रखे हुए हैं। वह सब तेरे और सुखिया के लिए हैं। मैंने यह पैसे तुम दोनों की शादी के लिए बचा कर रखे थे। पर अब लगता है कि परमात्मा को यह मंजूर नहीं। मेरे जाने पर तू रोना मत बेटा। अपने आप को संभालना और सुखिया और माधव को भी देखना।' शीतला इतना सुनते ही फूट–फूट कर रोने लगी। बोली 'नहीं दादा जी आप इस तरह से हमें छोड़कर नहीं जा सकते। शाम तक सारे दादा जी ट्रेन से आ जाएँगे। अभी तो आपको बहुत कुछ करना है दादाजी। गाँव का मंदिर बनवाना है।' उग्रिन ने कहा 'ना बेटा। मेरा समय अब पूरा हो गया। कल रात को माँ और बाबूजी सपने में आए थे। बोले की तूने अपने सारे काम पूरे कर लिए। अब उन्हें मेरी जरूरत है।' फिर पीछे मुड़कर उन्होंने जयप्रकाश को देखा और कहा 'बेटा तुम मुखिया हो। तुम पर कितने गाँवों की जिम्मेदारी है। एक जिम्मेदारी और छोड़े जा रहा हूँ। मैंने कुछ रुपये गाँव के महाजन के पास छोड़ रखे हैं। उससे मेरी दोनों बेटियों का ब्याह कर देना। जयप्रकाश ने हामी भरी। अचानक से उग्रिन की साँसें ऊपर चलने लगीं। जयप्रकाश ने डॉक्टर बुलाने का इशारा किया लेकिन उग्रिन ने उन्हें रोकते हुए कहा 'नहीं बेटा। अब बहुत देर हो चुकी है। वह देखो माँ और बाबूजी आए हैं। साथ में राधा भी है। अब मैं चलता हूँ बेटा।' इतना कहकर उग्रिन ने एक हिचकी ली और उनका सर दाहिनी ओर लुढ़क गया। गाँव के सारे लोग रोने लगे। सुखिया, माधव और शीतला का रो–रोकर बुरा हाल था। पंछी पिंजड़े से आजाद हो चुका था।

आत्मनिर्भर भारत



सुश्री सुमेधा अमर
वरिष्ठ उप महालेखाकार
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
हरियाणा, चंडीगढ़

सुनो आज मेरी जुबानी,
भारत के भविष्य की कहानी,
धरा है यह विरासत की,
साझा शहादत की,
प्रताप, शिवाजी जैसे वीरों की,
लक्ष्मी, अहिल्या जैसी वीरांगनाओं की,
सतत् ब्रह्म, इस पर क्रांति का प्रवाह,
अनेक बलिदानों से होता, जिसका निर्वाह,
आज भी, बाँध सिर पर कफन,
देश की सरहद पर तैनात हैं, अनेक हम वतन,
राष्ट्रधर्म का करते निर्वहन,
भारत के मानचित्र को बनाए रखने का,
करते हर जतन।
चोटियों पर तिरंगा लहराने वाले,
छाती पर गोली खाने वाले,
शत्रु से न डरने वाले,
वो हारे, तो अपनों से,
समझौते की मेजों पर,
जो वीर कारनामों पर करते संदेह,
जो अस्त्रो–शस्त्रों पर व्यय का करते निषेध,
समझाओ उन्हें (राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर')
कि शर में नहीं, बसती है दीप्ति विनय की,
संधि वचन संपूज्य उसी की,
जिसमें शक्ति विजय की।
इसलिए,
भौगोलिक विभिन्नता, क्षेत्रीय विविधता, वाले इस देश के,
सभी के, ना कि एक व्यक्ति विशेष के, उज्ज्वल भविष्य,
सतत्, संतुलित व समेकित विकास,
स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों का देश मनोहर,
हमारी आगे आने वाली पीढ़ियों की, जो है धरोहर,
ऐसे प्राचीन संस्कृति वाले लोकतंत्र,
भारत के लिए, आवश्यक है कि
बुद्धि–विवेक का प्रयोग कर,
तत्पर सदा, आत्ममंथन कर,
अपनी क्षमता पर विश्वास कर,
आलस्य का दमन कर,
करें विकसित एक अनोखा मूलमंत्र,
जिसमें हों, अनेक शक्तिशाली यंत्र,
जैसे,
अर्थव्यवस्था, जो क्वांटम जंप लाए,
ढांचा, जो आधुनिक भारत की पहचान बनाए,
सिस्टम, जो नवीनतम तकनीकी व्यवस्थाएं गढ़ें,
आबादी, जो हमारी ऊर्जा का स्रोत बने,
मांग, जो घरेलू आपूर्ति श्रृंखला का पूर्ण प्रयोग करे।
इससे बने, भारत आत्मनिर्भर,
हो संसाधन समृद्ध, सक्षम व रहे निर्झर,
जिससे याद आए हमें, कुछ पंक्तियाँ खास,
यूनान, मिस्र, रोम, सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात तो है, जो हस्ती मिटती नहीं हमारी।

ग़ज़ल



सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
प्लाट नं. 4–5, सेक्टर–33बी
हरियाणा, चण्डीगढ़–160020

मेरे महबूब ज़रा दिल को कुशादा[1] रखना
वक़्त–ए–रुख़सत[2] में भी मिलने का इरादा रखना

पैरहन[3] कोई पहन लेना बदन पर लेकिन
मन पे मेरी ही मुहब्बत का लबादा[4] रखना

जानती हूँ मैं ज़मीं–ज़र[5] की ज़रूरत क्या है
फिर भी उल्फ़त की कमाई को ज़ियादा रखना

जीत लेना तू सिंकदर की तरह चाहे जहाँ
पर हर इक दिल में मुहब्बत का भी जादा[6] रखना

लुत्फ़ ले लेना ज़माने की हवाओं का मगर
दिल–ए–नादान को हर हाल में सादा रखना

हम निगाहों से पिला कर ही बुझा देंगे प्यास
यार के सामने क्या जाम या बादा[7] रखना

मुझको मालूम है कि तेरी वो क्या लगती थी
सो मेरा नाम तू 'मीरा' नहीं राधा रखना।

बहर : 2122 1122 1122 22 / 112

1. विस्तुत, खुला हुआ 2. आख़िरी या विदाई का वक़्त 3. लिबास 4. भारी और लंबा पहनावा, चोगा 5. सोना 6. मार्ग, रास्ता 7. शराब

एक भारत, श्रेष्ठ भारत

अनुराधा सूद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171003

देश के वीर–सपूतों की, सर्वत्र जय–जयकार हो।
राष्ट्रहित में समर्पित सब का, तन–मन–धन और प्राण हो।।

राहें भले अनेक हो, पर देश का प्रचंड विकास हो।
योद्धाओं का सम्मान हो और स्वदेश से अनुराग हो।।

देश की ऊँची शान हो और विश्व–बंधुत्व, समरसता का भाव हो।
विविध संस्कृतियों से समृद्ध इस देश में, किसी से न कोई अलगाव हो।।

जाति, पंथ, भाषा, प्रांत का भेदभाव भुला कर, परस्पर सम्पर्क संवाद हो।
पंचभूत से रचित इस काया के कण–कण में, देश–प्रेम का मनोभाव हो।।

वसुधैव–कुटुंबकम का ध्येय हो सभी का, हर जन का इस ओर पूर्ण ध्यान हो।
भारत मां के प्रहरी हों हम सब, हम सब इस की ढाल हो।।

अपनी धरोहर की रक्षा का, जारी अथक प्रयास हो।
वो रक्त ही क्या रक्त, जिस में देश–रक्षा का न उबाल हो।।

चाहे जो हो धर्म तुम्हारा, चाहे विचारों में मतभेद हो।
आत्म–निर्भर भारत बनाने में, हर देशवासी का यथा–शक्ति योगदान हो।।

अपनी कर्मठ शक्ति और उत्कृष्ट सांस्कृतिक मूल्यों की सब को सही पहचान हो।
एक भारत श्रेष्ठ भारत बनाने में, सब का सम्मिलित प्रयास हो।।

जीवन – एक सफर



अमित कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
मध्य रेल, मुम्बई–400001

जीवन एक सफर है,
इसमें चलना है, बस चलना है।
रास्ते अनेक मिलेंगे इसमें
पर चलना किस पर, निर्णय यह हमें करना है।।

जब ठान लिया है, चलना है
तो पथ सुगम क्या और दुर्गम क्या।
है कस ली कमर, है प्रण लिया,
मंजिल हासिल अब करना है।।

है कहाँ विश्राम यहाँ,
सफर तो यहाँ निरंतर है।
जो रुक गए, वो चूक गए,
मंजिल उनको नसीब कहाँ।।

राही वही है सच्चा जो बाधा–विघ्नों को पार करे,
चाहे जो हो अंजाम पर झुकना न स्वीकार करे।
करे जो व्यवधानों का सामना डटकर
और सफर के चुनौतियों को सहर्ष अंगीकार करे।।

जीवन के पथ पर तो सबको ही चलना पड़ता है,
चाहे परिस्थितियाँ सम हों या विषम, सफर तय करना पड़ता है।
है जीवन उसी का सफल जिसमें जूझने का साहस है,
है जीवन पथ पर अडिग जो और जिसमें धीरता बहुतायत है।।

नवयोवना



मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)
भूखण्ड 191 (एफ–2) वैशाली
सेक्टर–4, गाजियाबाद, उ.प्र.–201010

मधुमास की शुरूआत थी
प्रकृति की हर कृति को मदिरिल मधुमयी वो सौगात थी
ना जाने क्या इक नवयोवना के मन में आया
वीडियो कॉल पर था नम्बर मेरा उसने मिलाया
जैसे ही मैंने उस कॉल को था उठाया
हौले–हौले अति मंद गति लगी छेड़ने कोकिल तराना
उत्प्रेरकी अहसास था उस उर उठी–सी कुहक में
चाहती थी वो चहकती औ कुहकती जो मुझ को कराना।

देख सम्मुख मनमीत हँसमुख
पा रही थी वो अति नयन सुख
प्रीतवस उस योवना ने
मुखड़ा मधु गीत का मृदु स्वर स्थाई भाव गाया
सुर में सप्तम मुर्कियां ले
अंतरा का सुर लगाया
योवनी उर सुर मधु से मधुरतर
मद था उस में मदिरा से मदिरिल मधु छना
बहती हुई बयार में – तरु–सी तरंगित तरुणा
तनमन हुई – रंग था घना
जा रही थी योवना मन में लिए नव चाह
मधुर मधुलय मधुमयी मधुगीत गाती
ले लेके मदिरिल अंगड़ाइयां थी
कैशोर्य की कांचल छुड़ाती
जोवन ज्वलंत उस आंच में जल जोवना
हुनर की चुनर तज के अनहद मदमदाती जोवन लुभाती
भृकुटियां दो बारी–बारी कभी उठाती कभी गिराती
होके बलिहारी वो बाला कुंवारी सुर संग में भौंहे नचाती
उत्पात ही था उन मधु भावों की उस भंगिमा में
जो जा रही थी – उचकती वो मचाती
दूरदर्शी इक अग्र बल्ब को
वो कभी जलाती कभी बुझाती
जाने जिगर को यूं वो ना जाने क्यूं
जा रही थी बिन खता वो प्रिया
अपने उस सटीक निशाने पे लाती!
छोड़ती विष वाण धनु से जाने जाना
थी लगी तब मंद छंद में मुस्कुराने
आंखें झुका लगी चंचल प्रिया अति मंद गति
अनुराग के प्रिय भाव को मुख पे फैलाने।

कहने लगी – जानती हूं तुम ही हो
वो जन्म जन्मांतर का साथी
आज मेरा ये धड़कता दिल है वादी

दिल है तुम्हारा प्रतिवादी
दे सको तो वचन दो –
फेर के मुंह मुझ से अपना
तोड़ के तमाम वादे
छोड़ के सारे इरादे
तोड़ योवन का ये सपना
नवयोवना का है जो अपना
छोड़ के ये घनेरी छांव लट की पलट तुम ना जाओगे
शब्द नफरत का तीन बारी जुबां पे कभी भी ना लाओगे
नामुराद से उस शब्द को ना ही कभी दोहराओगे।

मैंने भी तब मुंह था अपना ना सिया
आके फिर तो पूरे ताव में था देके उड़ता चुंबन कह दिया –
वादा करो जो सातों जन्म का
छोड़ हर विष वमन का
बांध सेहरा छुपा चेहरा
शुभ घड़ी में घुड़चढ़ी कर बड़ी तड़ी से आऊंगा
सजी डोली में बिठा के
फुलझड़ी को मैं ब्याह के ले जाऊंगा।

उन दो लबों से हो शुरू वो अंग–अंग प्रसरित
जल सप्त सर का हो तरंगित लहराया
थी नैना झुकी दो दोनों हाथों लुकी वो
सब दिया है तो क्या छुपाया
जल तरंग संग उस उर उमंग का सुर मिला
मुख कमल–सा सरसराता वो उर भी खिला
भाग्य दोनों का जगा था
लक्की नम्बर लगा था
दोनों ने उर उमंग संग सुर में सुर को मिलाया
सरफरोशी–सी उस मदहोशी में जन्म–जन्म का गीत गाया
कोमल गंधर्व सुर नासिका से आशिकी में संग गुनगुनाया।



गुलमोहर यादों के



केदार नाथ प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (अ.प्रा.)
संदलपुर, पोस्ट महेन्द्रु
पटना–800006

हो गये बहुत दिन देखे अब
अधरों पर अधरों का कम्पन।
अरुणिल कपोल पर रक्त कमल,
वह तुलसी, अक्षत औ' चन्दन।

रजतिल पूनम का ज्योति कलश,
वह नेह–स्नेह का अभिव्यंजन।
उन्मन अतीत की स्वप्न–सुधा,
सौरभ–पराग से प्रक्षालन।

वह लाल–लाल मोहक बिंदी,
हाथों में मेहंदी का गुंफन।
वाणी में मिसरी घुली हुई,
वह कंगन, पायल, वेणी सुमन।

वह लाल महावर पांवों का,
श्यामल अलकों का नव वितान।
मदिरालस पूरबा का बयार,
लाता मधुमय, मोहक विहान।

पूरबा का वह मदरिल झकोर,
चंदा का नभ में अभिनन्दन।
जूही, गुलाब औ' मौलसिरी,
सुमनों का वंदन आराधन।

तुम गाती थी उत्सुक होकर,
अपने जीवन का मधुर गान।
मुस्काता था नव खिला सुमन,
अर्पित करता शत–शत प्रणाम।

मदभरे तरंगों से बोझिल,
अलकों का मधुरिम आमंत्रण।
वह गीत–गजल, वह चौपाई,
पलकों का अलसित परिरंभण।

चातक के ओठ खुले कब से
स्वाती का मौन हुआ गुंजन।
मुरझे होंगे रक्तिम कपोल,
हो गये मौन स्वर औ' व्यंजन।

माँ



रमेश वर्मा (बनारसी)
645/पी. (KH-292)
वेदांशी विला, सरस्वतीपुरम
जानकीपुरम् एक्सटेंशन, लखनऊ–226021

कल तक तेरे आँचल में,
खेला करता था जो बचपन।

आज तेरे आँचल से क्यों,
छूट गया माँ मेरा बचपन।।

कल तक छोटे हाथों से,
पकड़ा करता था तेरा आँचल।

आज बड़े हाथों से क्यों,
छूट गया तेरा आँचल।।

किस दुनिया में चली गई,
क्यों मुझसे तुम रूठ गई।

आज मेरी बोली भी,
तुमको रोक न पायी।

क्या मेरी बोली आज,
तेरे कानों तक न आयी।।

कल तक मेरी तोतली बोली,
खूब समझती थी माँ।।

मेरे जीवन को रौशन कर,
तुम कहाँ चली गयी माँ।।

गजलें



सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम'
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय
तीसरी मंजिल, ऑडिट भवन, विभूति खण्ड
गोमती नगर, लखनऊ–226010

(1)

हो तमाचे में न आवाज़ असर होता है
मीठी बातों में भी अक्सर ही गदर होता है

पुरसुकूं लहज़ा हो अल्फ़ाज़ में नरमी ज़्यादा
बारहा उनमें छुपा कोई कहर होता है।

हर सदी में यूँ ही होती है कहानी कोई
वक़्त जिसका सदा बलबों में बसर होता है

हाय खामोशियाँ, उलझी सी तबियत उनकी
उनकी हर बात में कुछ गर ओ मगर होता है।

खिड़कियां हो के विकल राह तेरी तकती हैं
तेरी आमद को परेशान ये दर होता है,

झूठ के हाथ में आया है अदलिया जब से
सच का हर वक़्त ही अब दार पे सर होता है।

चल के दो गाम भी मिल जाती है मंज़िल कुछ को
और कुछ को मुकद्दर ही सफर होता है,

तंज आंखों की मेरी खुश्की पे करने वाले
देख जिस वक्त ये सहरा कभी तर होता है,

एक मुद्दत से सुनी ही नहीं आहट उनकी
वक़्त सत्यम का तो यादों में बसर होता है।

(2)

बात खामोशियों को करने दो
लफ्ज़ कागज़ पे अब उतरने दो,

ये जो बिखरा हुआ तख़य्युल है
इसमें एहसास थोड़ा भरने दो,

उनके दर्द की सियाही को
ज़र्द सफहों पे अब उभरने दो,

कोई तस्वीर बन सके शायद
ज़ेहन के रंग तो संवरने दो,

इकदफा इन गुलों को छूलो तुम
रंगे खुशबू ज़रा निखरने दो,

हम ये सजना संवरना क्यों छोड़ें
कोई मरता है उसको मरने दो,

हाल पूछेंगे, बातें भी होंगी
दिल की धड़कन ज़रा ठहरने दो,

कुछ फ़िज़ा है उदास सी 'सत्यम'
कोई नगमा नया बिखरने दो।

(3)

हरेक पैरहन का तार–तार होना है
तेरे जाने पे सबको ज़ार–ज़ार रोना है,

तू मोह माया में उलझा हुआ है क्यों बन्दे
जहां ये कुछ भी नहीं, सिर्फ जादू टोना है,

पलों की याद है कुछ ही पलों के ये मंज़र
रहेगा कुछ भी नहीं, जो भी है वो खोना है,

मिला जो वक़्त उसे खो न यूँ ही सो–सोकर
वो दिन भी आएगा जब लंबी नींद सोना है,

सदा के वास्ते ठहरा है कौन इस जग में
कभी तो टूटेगा मिट्टी का ये खिलौना है।

(4)

रब ने क्या संसार बनाया, हर जर्रे में तिलिस्म रचाया,
कहीं नहीं है किसी को रोटी, और किसी ने छककर खाया।
चारों पहर जिसने तन तोड़ा, उसे निवालों को तरसाया,
कहीं सुकूं के दो पल मुश्किल, किसी ने जम कर ढोल बजाया।
किसी के पथ में पग–पग कंकड़, कहीं गुलों से मार्ग सजाया,
मुफ़लिस के मासूम चित्र ने, धनिकों की बैठक को सजाया।

मुख्यालय में



हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार, मुख्यालय
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में राजभाषा विभाग द्वारा तय प्रेरणा व प्रोत्साहन की नीति के अनुसार निर्धारित कार्यक्रमानुसार राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य प्रगति पर है। इस विभाग के मुख्यालय ने राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा संकल्प, 1968 तथा राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987) के अनुपालन में राजभाषा हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के लिए तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों में प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए परिचालित वार्षिक कार्यक्रमों के दिशानिर्देशों के अनुसार कार्यान्वयन के लिए कुछ ठोस उपाय किए हैं। वार्षिक कार्यक्रमों के अंतर्गत विचारणीय बिन्दुओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़ा अथवा हिन्दी मास के रूप में मनाया जाता है। मुख्यालय में मनाये गये हिन्दी पखवाड़ा की संक्षिप्त झलक 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के स्तंभ ''मुख्यालय में'' के अंतर्गत पाठकों के लिए प्रस्तुत की जाती है। हमारे विभाग के प्रमुख माननीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय तथा अन्य शीर्षस्थ अधिकारियों का प्रेरणादायी मार्गदर्शन हमें हिन्दी में कार्य करने को उत्साहित करता है।

इस वर्ष हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, द्वारा दिनांक 14 सितम्बर, 2022 को राष्ट्रीय स्तर पर गुजरात के शहर सूरत में आयोजित "द्वितीय अखिल भारतीय सम्मेलन" से, भारत के माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में किया गया तथा कार्यक्रम का समापन दिनांक 29.9.2022 को 2.30 बजे मुख्यालय के ऑडिटोरियम हाल में बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। पखवाड़े के दौरान मुख्यालय के पुस्तकालय में पुस्तक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्टाफ/राजभाषा) महोदय ने किया।

प्रधान निदेशक (राजभाषा) की अगुवाई में समारोह के मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक






हिंदी पखवाड़े के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय

के आगमन पर समारोह में उपस्थित अधिकारियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया। मुख्य अतिथि महोदय ने सभी का अभिवादन स्वीकार किया।

तत्पश्चात राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य को नए आयाम देने वाले अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्टाफ/ राजभाषा) महोदय ने मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय तथा उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (एचआर, आईआर एवं समन्वय) महोदया का पुष्प गुच्छ भेंट करके स्वागत किया तथा प्रधान निदेशक (राजभाषा) महोदय ने अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्टाफ एवं राजभाषा) महोदय को पुष्प गुच्छ देकर उनका स्वागत किया।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए मंच संचालिका ने अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्टाफ एवं राजभाषा) महोदय से अनुरोध किया कि वे उपस्थित, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करें। उन्होंने अपने संबोधन में सभी कार्मिकों को हिंदी पखवाड़ा समारोह के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं दी तथा उन्होंने यह प्रसन्नता भी जताई कि सूचना तकनीक के युग में हमारे विभाग में हिंदी में कार्य करने के लिए इसका भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका का ई–संस्करण और ई–ऑफिस



मंच का संचालन करती हुई
सुश्री नेहा यादव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

इसका स्पष्ट उदाहरण है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के आदेशानुसार हिंदी प्रगति के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा रहा है। इसके लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित बैठकों में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय की प्रशंसा की जाती रही है। हमारा कार्यालय इस क्षेत्र में पहले ही अच्छा कार्य कर रहा है और मुझे आशा है कि आगे भी हम इसके लिए प्रयास करते रहेंगे। हिंदी के प्रयोग से हम अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को



कार्मिकों को संबोधित करते हुए अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्टाफ/राजभाषा) महोदय

गौरव प्रदान करने में सहायक होंगे और राजभाषा जगत में अपनी नई पहचान बनाएंगे। ध्यान मग्न श्रोताओं ने उनके संबोधन का करतल ध्वनि से स्वागत किया

अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्टाफ एवं राजभाषा) महोदय के संबोधन के पश्चात मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय एवं उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदया ने हिंदी प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों



हिंदी पखवाड़े के समापन पर सभा का उद्‌बोधन करते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय

को प्रशस्ति–पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया तथा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु पूरे वर्ष में सबसे अधिक हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी पुरस्कृत करके उनका मनोबल बढ़ाया। सभी श्रोताओं ने विजेता प्रतिभागियों का स्वागत करतल ध्वनि से किया।

तत्पश्चात मंच संचालिका ने समारोह के मुख्य अतिथि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय से अनुरोध किया कि उपस्थित कार्मिकों का

उद्‌बोधन करें। अपने उद्‌बोधन में मुख्य अतिथि महोदय ने कहा कि हिंदी बहुत ही सरल, सहज और सुगम भाषा है। हिंदी को बोलना, समझना, लिखना, पढ़ना आसान है इसलिए हिंदी भाषा का ज्ञान न रखने वाले भी इसको आसानी से समझ और बोल सकते हैं। विश्व में भारतीय समुदाय के करोड़ों लोग संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का उपयोग कर रहे हैं। आम आदमी की भाषा के रूप में हिंदी देश की एकता का स्वाभाविक सूत्र है। अतः समय के साथ–साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। भारत के एक बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली हिंदी भाषा की लोकप्रियता की वजह से ही इसे भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि हिंदी भाषा के उपयोग और उसके स्वरूप को निखारने एवं समृद्ध करने में पत्र–पत्रिकाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। मुख्य अतिथि महोदय ने कहा कि मुख्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के स्तर को सुधारने के लिए उनके निरीक्षण और मार्गदर्शन के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों को राजभाषा संबंधी अधिनियम व नियमों की अनुपालना के संबंध में सुझाव भी दिए जाते हैं ताकि वे अधिकाधिक कार्य हिंदी में सुगमता से कर सकें। हिंदी पखवाड़ा, 2022 के समापन समारोह में मुख्य अतिथि द्वारा एक कमेटी बनाने का सुझाव भी दिया गया जो हिंदी की प्रगति के लिए विचार–विमर्श करके अपनी सिफारिशें देगी। उनके प्रेरणादायक उद्‌बोधन का उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने तालियां बजाकर स्वागत किया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय के ओजस्वी, मार्गदर्शी व प्रेरणादायी उद्‌बोधन के पश्चात पखवाड़े का समापन विधि पूर्वक किया गया जिसमें प्रधान निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी पखवाड़े के दौरान सभी कार्मिक जिन्होंने प्रतियोगिता में भाग लिया उनका धन्यवाद करते हुए और बाकी जो प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सके, उनसे विशेष तौर पर आग्रह किया कि ये सभी प्रतियोगिताएं उनके उत्साहवर्धन तथा हिंदी के प्रति सजगता, रूचि बढ़ाने



धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रधान निदेशक (राजभाषा)

के लिए आयोजित की जाती हैं, इसलिए भविष्य में इन प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक भाग लें और अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें। अंत में उन्होंने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने तथा उसे सफल बनाने के लिए सभी विशिष्ट अतिथियों और समारोह में उपस्थित अन्य महानुभावों का विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किया।

प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति–पत्र प्रदान करती हुई उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

















प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति–पत्र प्रदान करती हुई उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

















प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति–पत्र प्रदान करते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

















प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति–पत्र प्रदान करते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक















आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका

'बादाग्री' प्राचीन बंदरगाह : ट्रांस-एटलांटिक अमरीका महाद्वीप के लिए 3 शताब्दियों तक चले गुलाम व्यापार की दर्दनाक दास्तान (लागोस, नाइजीरिया)

भाग-4 (कड़ी जोड़ने के लिये कृपया पिछले 139वें अंक को देखें)



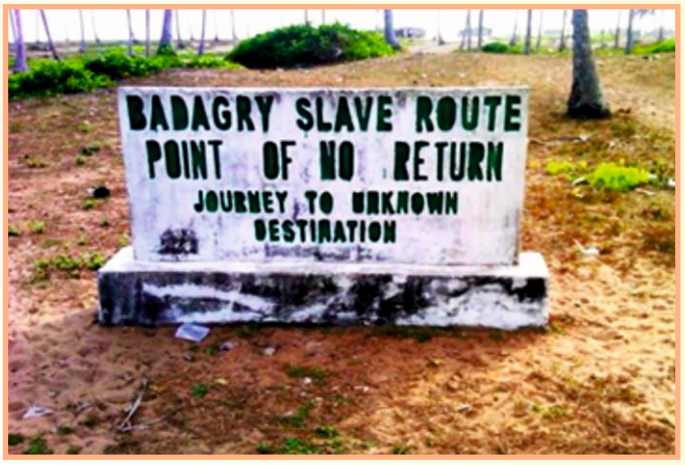
कमलजीत सिंह रामुवालिया
प्रधान निदेशक
रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली

रुखसत का वक्त नजदीक आ रहा था। आज 2 अप्रैल, गुरुवार का दिन आश्चर्यजनक रूप से जल्दी–जल्दी बीत रहा था। छुट्टी होने के कारण 2 और 3 अप्रैल को कार्यालय बंद रहना था। हमने अपना कार्य लगभग पूरा कर लिया था।

अब समय था बाहर निकल कर थोड़ा घूमने का। मुझे लागोस के पश्चिम में लगभग 60–70 किलोमीटर की दूरी पर गुलामों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध एक प्राचीन बंदरगाह – 'बादाग्री' जैसे ऐतिहासिक स्थल को देखने में कुछ दिलचस्पी थी। लेकिन मुझे बताया गया कि वहां देखने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है। सिर्फ एक



बादाग्री गुलाम व्यापार की बंदरगाह पर निशानी गेट।



गुलाम व्यापार के रास्ते बादाग्री बंदरगाह पर यादगारी 'प्वाईंट ऑफ नो रिटर्न' 'एक ना–मालूम मंजिल की ओर यात्रा', वो जगह जिसके बाद गुलाम बनाया शख्स कभी दोबारा अफ्रीका नही लौटता था।

पुराना कमरा है जहां गुलाम व्यापार पर प्रतिबंध लगने से पहले गुलामों को हिरासत में लेकर रखा जाता था और इसके अलावा वहाँ घूमने लायक कुछ भी नहीं है। परन्तु मेरी दिलचस्पी को देखकर मुझे बताया गया कि वहाँ मुझे यह पता लगेगा कि कैसे लोगों को जंगली पशुओं की तरह पकड़ा जाता था, उनका उपभोग की वस्तुओं की तरह सौदा किया जाता था तथा व्यापारिक माल की तरह किसी अनजान दुनिया में भेज दिया जाता था। और वो गुलाम बनाए गए लोग फिर कभी वापिस अफ्रीका की धरती नहीं लौट सकते थे। यह सब इतिहास के एक ऐसे समय में घटित हो रहा था

जब दुनिया के किसी भी देश में नैतिकता के आधार पर इसके उन्मूलन हेतु कोई भी सामूहिक चेतना नहीं थी।

गुलाम व्यापार की दास्तान

16वीं ईस्वी से प्रारंभ होकर अगली तीन शताब्दियों तक फलने–फूलने वाले ट्रांस–एटलांटिक अमरीका और अमरीका महाद्वीप के उपनिवेश के लिए हुए गुलामों के व्यापार की एक झलक वहाँ पर मौजूद एक संग्रहालय में मिलती है।



गुलाम व्यापार में इस तरह के समुद्री जहाजों का इस्तेमाल होता था। इनके तहखाने में गुलामों को बांध कर रखा जाता था।

बादाग्री हैरीटेज म्यूजियम

गबेरेफू समुद्री तट पर स्थित बादाग्री, नाइजीरिया की गुलाम व्यापार की सबसे बड़ी और पुरानी बंदरगाह थी। यहाँ से नाइजीरिया एवं बैनन देशों से गुलामों को पकड़कर पतवारों वाली नौकाओं में भरकर आगे गहरे समुद्र में लंगर डाले गुलाम व्यापार वाले समुद्री जहाजों में ठसाठस भर के अमरीका महाद्वीप ले जाया जाता था। यह एक बहुत ही खौफनाक मंजर होता था।

बंदी बनाए गए गुलामों को जहाज पर पहुँचाने से पहले एक कुएँ से पानी पिलाया जाता था जिसके बारे में कहा जाता है कि उसमें झाड़फूंक करने वालों और



हेनरीएटा मैरी जैसे समुद्री जहाज में गुलामों के पैरों को जंजीरों से बांध कर इस तरह ठूँस–ठूंस कर भरा जाता था।

स्थानीय प्रमुखों द्वारा कुछ जडी–बुटियां डाली जाती थी। इससे बना यह जादुई पानी इतना प्रभावी होता था कि इससे गुलाम बनाये गए लोगों की पिछली याददाश्त खत्म हो जाती थी और इस कारण वो यात्रा के दौरान शांत रहते थे और इसी के असर से, वे खरीद होने के बाद अपने मालिक को ही सब कुछ समझते



पारंपरिक ओझा और प्रमुख इस कुएं में कुछ जंगली जड़ी–बूटियां डालते थे, जिनके बारे में माना जाता था कि इससे गुलामों को जहाजों पर पहुँचने पर पिछले जीवन की याददाश्त भूल जाती थी।

थे। इस कुएँ से लोग अभी भी डरते हैं। कहा जाता है कि इस कुएँ से पिछली एक सदी से ज्यादा समय तक किसी ने पानी नहीं पीया है।

इस गुलाम व्यापार की सदियों तक गवाह रहे, बादाग्री में स्थित संग्रहालय में नौ गैलरियाँ हैं, बहुत सारी पेंटिंग, लेखन, रेखाचित्र, फोटो, मूर्तियां और अन्य संरक्षित ऐतिहासिक अभिलेख हैं, *जो मानवता द्वारा देखे गए निकृष्टतम भेदभाव से गुजरने वाले कई लोगों के दर्दनाक अतीत के साक्ष्य हैं।*



ब्राजीलियन बाराकून यहाँ गुलामों को बेचने से पहले चैनों में बांध के रखा जाता था।

कौन था सरेकी विलियम्स अब्बास

'बादाग्री हैरीटेज म्यूजियम' में रखी गई बहुत सारी ऐतिहासिक वस्तुएं गुलामों के व्यापार के समय, उसके पहले और बाद के समय की हैं। सरेकी विलियम्स अब्बास 19वीं सदी का गुलामों का एक मशहूर व्यापारी था जिसका बादाग्री पर 24 साल तक बोलबाला रहा और वह 1919 में अपनी मृत्यु तक नाइजीरिया में गुलामों के व्यापार का मुख्य स्त्रोत था।

सरेकी विलियम्स अब्बास की बिल्डिंग में 40 ब्राजीलियन बाड़ो जैसी कोठरियां थी उनमें गुलामों को समुद्री जहाज में भेजने से पहले लोहे की जंजीरों से बांध कर रखा जाता था। समुद्री जहाजों में ले जाने का



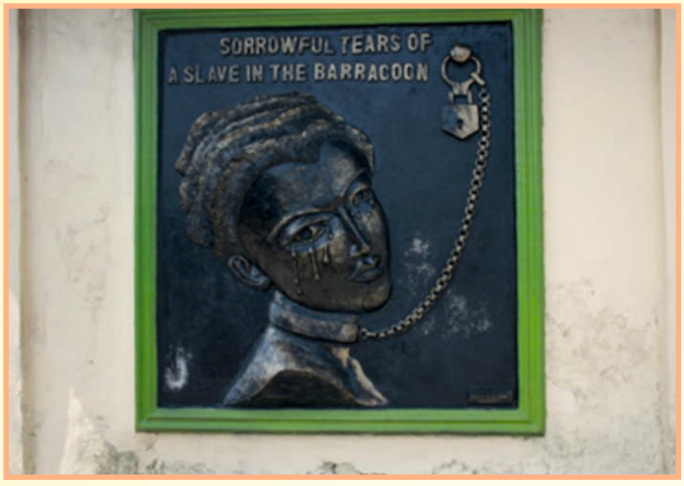
लोहे की जंजीरें जिनसे गुलामों को बंदी बनाया जाता था।

विरोध करने पर कई बार लोहे की जंजीरों से खींचकर भी ले जाया जाता था। उनकी इस रोने–कुरलाने की दुर्दशा को एक महिला गुलाम की करूणामयी चित्रकारी में देखा जा सकता है। ये चित्रकारी गुलाम व्यापार की क्रूरता और डरावनेपन को बखूबी दर्शाती है।

यहाँ पर मैं कालचक्र की उस हकीकत से भी आश्चर्यचकित हूँ कि सरेकी विलियम्स अब्बास के कुछ वंशज अब वर्तमान में इन्हीं कोठरियों में रह रहे हैं। ऐसी ही दो कोठरियों में पर्यटकों के देखने के लिए गुलाम व्यापार संबंधी असली सामान को रखा गया है



सरेकी विलियम्स अब्बास, जो कि 1919 में अपनी मृत्यु तक गुलाम व्यापार का बादाग्री में सरगना रहा।



बाराकून कोठरियों में गुलामों के दुःख भरे आंसुओं को दर्शाती एक कलाकृति।

जिससे पता चलता है कि शराब की एक बोतल की कीमत 10 गुलाम, एक विशेष छतरी की कीमत 40 गुलाम और तोप के लिए कीमत 100 गुलाम थी।

प्वाइंट ऑफ नो रिटर्न

इसके अलावा वहाँ पर अलग–अलग प्रकार की लोहे के संगल और जंजीरें पड़ी हैं जिनसे गुलामों को बांधा जाता था। इन काल कोठरियों के बिल्कुल सामने गबेरेफू सागर तट पर गुलाम व्यापार की बन्दरगाह थी। जिसको 'प्वाइंट ऑफ नो रिटर्न' 'Point of no Return' कहा जाता था, इसका मतलब था जो गुलाम इस जगह से आगे चला गया वह फिर कभी भी जिंदगी भर यहाँ दोबारा अफ्रीका में वापिस नहीं आ पाएगा।

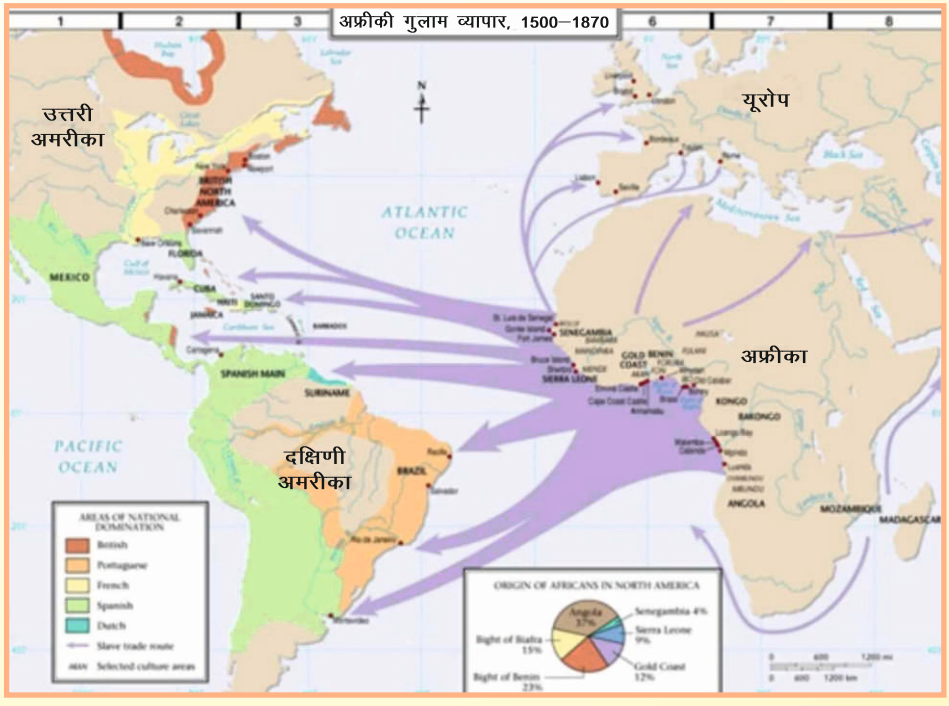
कैसे शुरू हुआ गुलाम व्यापार

बादाग्री पश्चिम अफ्रीका के कई व्यापारिक और परिवहन केंद्रों में से एक था यहां से एक लम्बे समय तक गुलाम खरीदने–बेचने वाले



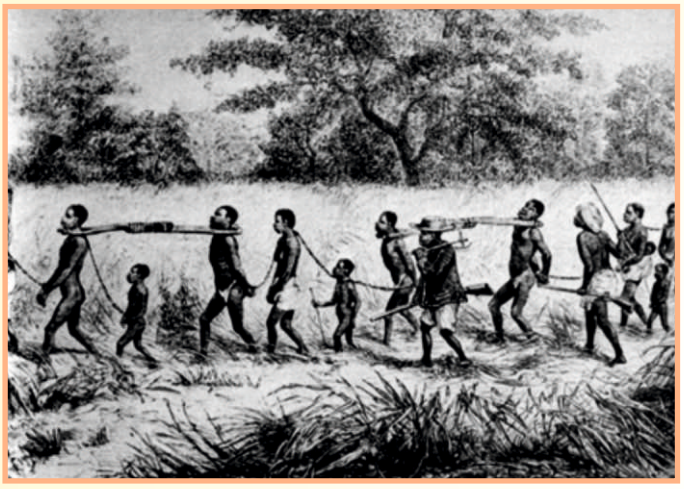
नाइजीरिया की पहली दो मंजिला इमारत यहाँ से प्रशासन चला करता था।

व्यापारियों ने खरीद–फरोख्त की। नाइजीरियाई इतिहासकारों के अनुसार, माना जाता है कि केवल इस द्वीप से 1518 और 1880 के बीच लगभग 50 लाख से ज्यादा गुलामों को अमेरिका भेज दिया गया था। इस प्रक्रिया ने उन्हें बाकी की जिंदगी के लिए एक दयनीय जीवन जीने के लिए पश्चिमी दुनिया में ही हमेशा के लिए मर–खप जाने के लिए भेजा। एक दासतापूर्ण जीवनयापन के लिए ना केवल वो बल्कि आगे उनके बच्चे भी।



1500 से 1870 के बीच हुए गुलाम व्यापार में समुद्री जहाजों का संभावित मार्ग।

सन् 1441 में रियो डी ओरियो से लाये गए 14 नीग्रो गुलामों की पहली खेप पुर्तगाल में प्राप्त हुई थी और 1444 में पुर्तगाल के लागोस में अफ्रीकी गुलामों की पहली सार्वजनिक बिक्री हुई। इस घटना के साथ ही एटलांटिक गुलाम व्यापार की यूरोप एवं पश्चिम अफ्रीका के बीच शुरूआत मानी जाती है। इन गुलामों को केवल घरेलू कार्यों हेतु ही काम पर लगाया जाता था, क्योंकि पश्चिम अफ्रीका से लाए गए इन गुलामों की संख्या बहुत कम होती थी।



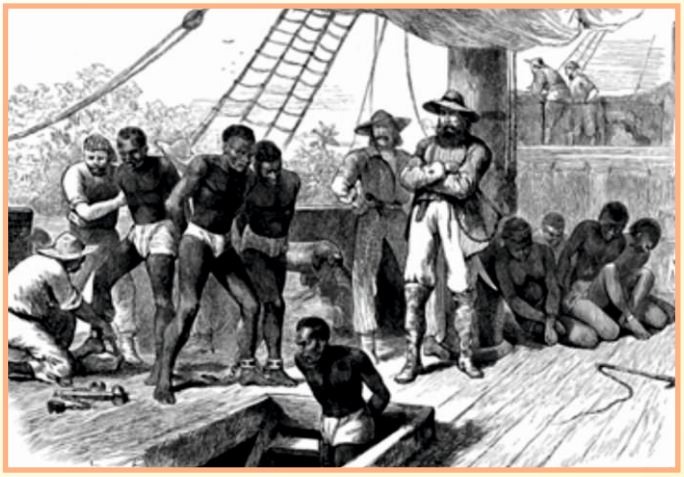
पकड़े हुए अफ्रीकी आदमी, औरतों और बच्चों को गुलाम बनाकर बेचने के लिए ले जाते हुए सौदागर।

नई दुनिया की खोज

सन् 1453 में उस्मानी (ओटोमन) साम्राज्य के हाथों कंसतूतनीया (आधुनिक इस्तांबुल) पर जीत के साथ बाईजन्टाइन साम्राज्य का पतन हो गया। इससे यूरोप–एशिया व्यापार का एतिहासिक 'स्लिक रूट' भी बंद हो गया। इस वजह से कोलंबस और उसके भाई ने इंडीज जाने के लिए समुद्री मार्ग से पश्चिम की तरफ जाने का विचार बनाया। अंततः कोलंबस ने स्पेन के राजा फर्डीनड और रानी इसाबेला के आदेश और आर्थिक सहायता से सन् 1492 में वेस्ट इंडीज, सैंट्रल एवं दक्षिणी अमेरिका की खोज की। जिससे इस 'नई दुनिया' (New World) के लिए समुद्री मार्ग का भी पता लग गया।

इस 'नई दुनिया' की खोज ने गुलामों के व्यापार की प्रकृति ही बदल दी थी और शीघ्र ही स्पेन द्वारा और बाद में अन्य यूरोपियन देशों द्वारा न्यू वर्ल्ड, तम्बाकू और कपास पौधारोपण की खोज की गई। वहाँ सोने और चांदी की खदानें और चीनी की मिलों की स्थापना की गई। अमेरिका के मजदूर 'रेड इंडियन' इन संस्थापनाओं और खदानों में काम करने में असमर्थ थे और फिर यूरोपीय उपनिवेशवादियों को यह ख्याल आया कि पश्चिमी अफ्रीका से गुलाम व्यापार द्वारा श्रमबल की आपूर्ति हो सकती है। तत्पश्चात, पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में न्यू वर्ल्ड यानि अमरीका महाद्वीप में स्पेनिश और पुर्तगालियों के उपनिवेशों में गुलामों की आपूर्ति पर पुर्तगालियों का एकाधिकार हो गया।

सन् 1510 में पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन से वेस्ट इंडीज में तब तक के सर्वाधिक नीग्रो गुलाम लाए गए थे। सन् 1539 में लिस्बन गुलाम व्यापार द्वारा अमेरिका में 10 हजार गुलाम हर साल लाए गए थे और इस तरह यह एक बड़े ट्रांस–एटलांटिक गुलाम व्यापार की शुरूआत थी।



पकड़े हुए गुलामों को जंजीरों और बेड़ियों से बांधते हुए।

सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपियन देशों जैसे फ्रांस, हॉलैण्ड, इंग्लैंड, बाद में स्वीडन, डेनमार्क और ब्रेंडनबर्ग आस्ट्रिया आदि में गुलाम व्यापार आर्थिक तौर

पर काफी महत्वपूर्ण हो गया था और ये तेजी से बढ़ा। इसी शताब्दी में अमेरीका और वेस्ट इंडीज में यूरोपियन उपनिवेशों से इस गुलाम व्यापार में बढ़ोतरी हुई।

ऐसा माना जाता है कि गुलाम व्यापार के 400 वर्षों (1450–1850) में लगभग 2 करोड़ 10 लाख अफ्रीकियों को गुलाम बनाया गया था। श्वेत व्यापारियों के गुलामों से भरे जहाज 1 से 9 महीने में एटलांटिक पार कर लेते थे। ऐसा माना जाता है कि समुद्री यात्रा के दौरान 20 लाख यानि लगभग 20 प्रतिशत से भी ज्यादा गुलामों की मृत्यु हो गई थी। इसके अलावा अफ्रीका की धरती से अफ्रीकी अभिजात वर्ग द्वारा गुलामों को पकड़कर बंदरगाहों तक लाने के कठिन सफर के दौरान संभवतः तीन गुना से अधिक गुलाम (कम से कम 70 लाख) रास्ते में ही मर गए। विशेष रूप से 17वीं और 18वीं शताब्दी में, गुलामों के व्यापारी मालिकों ने इस व्यापार से 135 प्रतिशत तक जबरदस्त मुनाफा कमाया।

गुलाम व्यापार में इस्तेमाल हुए समुद्री जहाज 'हेनरीएटा मैरी' का मलबा

गुलाम व्यापार में इस्तेमाल हुए समुद्री हवाओं के सहारे चलने वाले समुद्री जहाज आज देखने को नही मिलते।



ऐसी बेड़ियों से दो गुलामों की एक–एक टांग को जकड़ दिया जाता था।



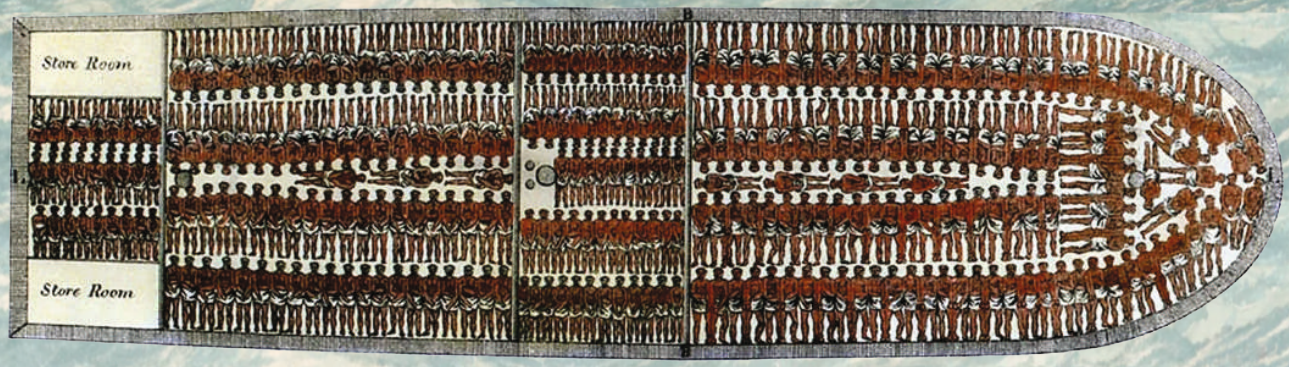
गुलाम व्यापार में इस्तेमाल समुद्री जहाज हेनरीएटा मैरी का मलबा 1972 में अमरीका के फ्लोरिडा की वैस्ट छोर पर मिला था।

फिर भी कभी कभार किसी डूबे हुए जहाज का मलबा मिल जाए तो उस वक्त की असली वस्तुएं दिलचस्पी का सबब होती हैं। सन् 1700 में गर्मियों में एक दिन ब्रतानिया–आधारित एक व्यापारी जहाज 'हेनरीएटा मैरी' 'की वेस्ट', फ्लोरिडा, अमरीका के समुद्री छोर से 35 मील पश्चिम में डूब गया था इसमें कोई भी बच नही पाया था। फ्लोरिडा कीज क्षेत्र में डूबने से पहले, इसने जमैका में अपने कुछ गुलामों को बेचा था।

250 से अधिक वर्षों के बाद इसे 1972 में मेल फिशर द्वारा खोजा गया था, जो डूबे हुए स्पेनिश गैलियन नुएस्ट्रा सेनोरा डी एटोचा की तलाश में थे। पुरातत्वविदों ने 1983 में मलबे की जगह की जांच की। उनको वहाँ पर बेड़ियों का एक सेट मिला। जैसे–जैसे वे मलबे की जगह आगे खोजते गये, उन्हें अतिरिक्त जोड़े मिलते गए। जहाज की घंटी मिलने पर, उन्हें इस जहाज के नाम का ठोस सबूत मिल गया। और जमैका में जो माल बेचा उसके समुद्री रिकॉर्ड की जांच के बाद उस माल की प्रकृति के बारे में भी पता चल गया। जिस माल को उसने वहां उतारा था वह 190 अफ्रीकी बंदी थे।

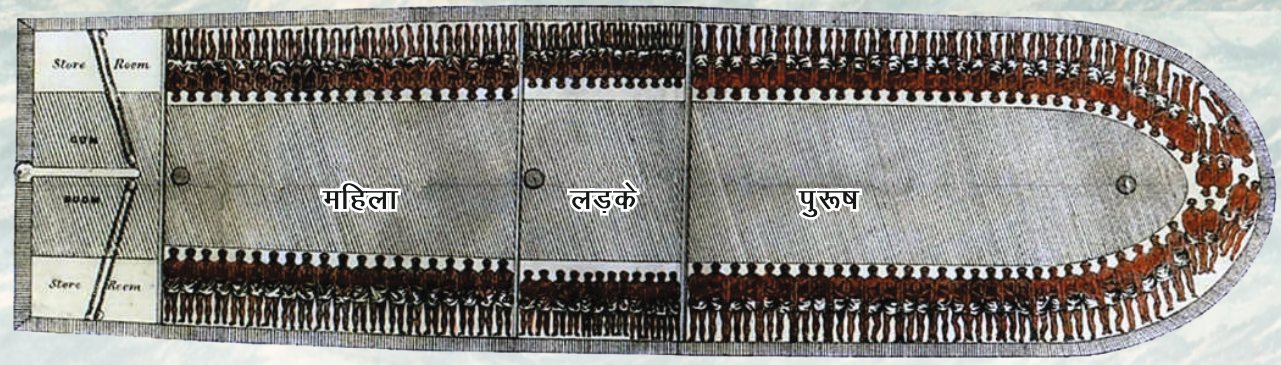
292 गुलामों की निचले स्तर पर लोअर डैक में रखने का तरीका
इनमें से 130 को शैल्फों के नीचे लाद दिया जाता था जैसे कि नीचे चित्र में दर्शाया गया है।

चित्र–2



130 अतिरिक्त गुलामों को रखे जाने का तरीका :
चर्च में गैलरियों की तरह के प्लेटफार्म या शेल्फों पर लोअर डैक के विंग्स और किनारों पर 130 अतिरिक्त गुलामों को रखा जाता था। शैल्फों की ऊंचाई सिर्फ 2 फुट 9 इंच थी जो बीम के नीचे और भी कम होती थी।

चित्र–3



गुलाम व्यापार की महत्वपूर्ण तिथियाँ

1444 – पुर्तगाल के लागोस में अफ्रीकी दासों की पहली सार्वजनिक बिक्री।

1482 – पुर्तगालियों ने एल्मिना, गोल्ड कोस्ट, अब के घाना में पहली स्थायी दास व्यापार पोस्ट का निर्माण शुरू किया।

1502 – नई दुनिया में सबसे पहले अफ्रीकी गुलामों का प्रवेश।

1510 – स्पेन से होते हुए दक्षिण अमेरिका के स्पेनिश उपनिवेशों में पहले दास पहुंचे।

1518 – अफ्रीका से अमेरिका में दासों की पहली सीधी खेप।

1562 – जॉन हॉकिन्स ने अफ्रीका की यात्रा की; गुलाम व्यापार और समुद्री डकैती आपस में जुड़ गए।

1640–1680 – चीनी उत्पादन के लिए ब्रिटिश कैरिबियन में अफ्रीकी श्रमिकों को काम पर लगाना।

1672 – रॉयल अफ्रीकन कंपनी की स्थापना हुई।

1712 – रॉयल अफ्रीकन कंपनी को समाप्त कर दिया गया।

1714 – स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध का अंत। मुक्त व्यापार कानूनी हो गया।

1720–1722 – समुद्री लुटेरों की गतिविधियों के शीर्ष वर्ष।

1729 – समुद्री लुटेरों के दमन अभियान का अंत।

1780 – ट्रांस–अटलांटिक दास व्यापार चरम पर पहुंच गया।

1794 – संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा गुलाम व्यापार पर प्रतिबंध लगाने के लिए पहला अधिनियम पारित किया गया।

1807 – ब्रिटेन ने ब्रिटिश अटलांटिक दास व्यापार को गैरकानूनी घोषित करते हुए दास व्यापार अधिनियम का उन्मूलन पारित किया।

1807 – संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1808 की शुरुआत से प्रभावी दास व्यापार पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून पारित किया।

1820 – गुलाम व्यापार में भाग लेने वाले अमेरिकियों पर समुद्री लुटेरों के रूप में मुकदमा चलाया जा सकता था।

1833 – ब्रिटेन ने गुलामी का उन्मूलन अधिनियम पारित किया, जिसमें सभी ब्रिटिश उपनिवेशों में 'दासता के क्रमिक उन्मूलन' का आदेश दिया गया।

1838 – ब्रिटिश द्वीपों में गुलामी को समाप्त किया गया।

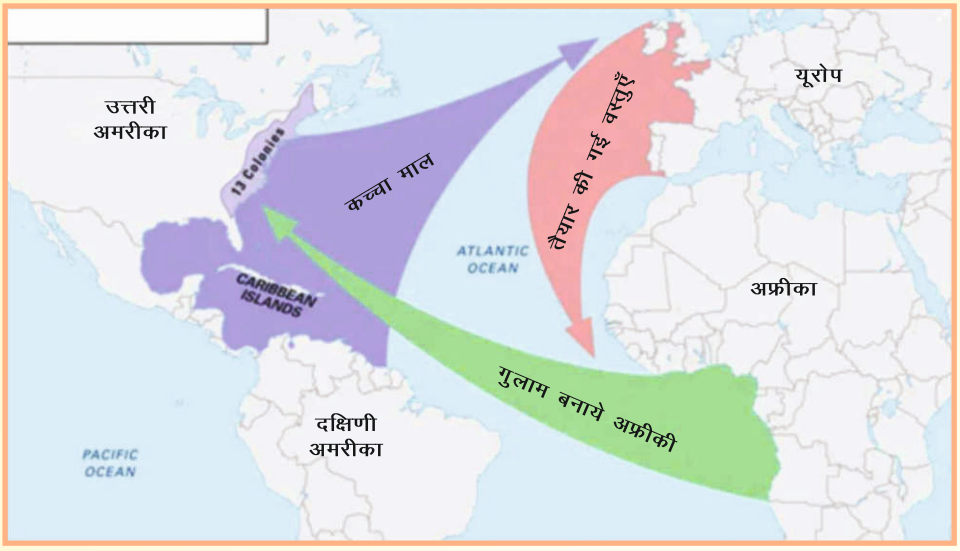
1860 – अमेरिकी नौसेना ने गुलाम व्यापार करने वाले अमेरिकियों को गिरफ्तार करने के लिए क्यूबा भेजा।

1862 – अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने 1 जनवरी, 1863 से दासों की मुक्ति की घोषणा की।

1865 – अमेरिकी संविधान के 13वां संशोधन 1865 ने गुलाम व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया।

1926 – 'लीग ऑफ नेशंस' ने गुलामी को खत्म करने वाले गुलामी कन्वेंशन को अपनाया।

1948 – संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा को अपनाया, जिसमें "किसी को भी गुलामी या दासता में नहीं रखा जाएगा; दासता और दास व्यापार उनके सभी रूपों में प्रतिबंधित किया जाएगा।"



ट्रांस एटलांटिक गुलाम व्यापार का त्रिकोणीय मार्ग

गुलाम व्यापार का खात्मा

ऐसा कहा जाता है कि अगर कभी एटलांटिक महासागर सूख जाये तो इसकी तह पर लाखों नर कंकाल मिलेंगे जो गुलाम व्यापार के समुद्री रास्तों की निशानदेही करते मिलेंगे। जहाजों पर सवार किए गए कुल गुलामों की 20 प्रतिशत से ज्यादा संख्या ट्रांस एटलांटिक समुद्री रास्ते में बीमारी या अन्य कारणों से मर जाते थे और उनकी लाशें समुद्र में फेंक दी जाती थी।

ट्रांस एटलांटिक गुलाम व्यापार मुख्य रूप से (1) यूरोप से अफ्रीका, (2) अफ्रीका से अमेरिका और (3) अमेरिका से वापस यूरोप के लिए एक त्रिकोणीय मार्ग था। पहले चरण में, श्वेत व्यापारियों ने अफ्रीका को चाकू, बंदूकें, गोला–बारूद, सूती कपड़ा, उपकरण और पीतल के बर्तन जैसे माल के निर्यात के बदले में अफ्रीकी गुलामों, सोना, हाथी दांत और मसालों आदि का व्यापार किया। दूसरे चरण में यह व्यापारी गुलाम अफ्रीकियों से लदे समुद्री जहाज अफ्रीका के तटों से एटलांटिक के पार अमेरिका और वेस्ट इंडीज में गुलामों को ले जाने का काम करते थे। इस समुद्री मार्ग को तथाकथित ''मध्य मार्ग'' की यात्रा कहा जाता था। अमेरिका महाद्वीप में गुलामों को नीलामी में बेचने के बाद, तीसरे चरण में अमेरिका महाद्वीप के बागानों में उत्पादित चीनी, चावल, नील, कपास, तंबाकू और रम से लदे समुद्री जहाज यूरोप में बेचने के लिए वापस चले जाते थे।

गुलाम व्यापारी देशों में ग्रेट ब्रिटेन, नीदरलैंड, पुर्तगाल और फ्रांस इत्यादि देश शामिल थे। ब्रिटेन सबसे सफल गुलाम व्यापारी देशों में से एक था। दो देशों – पुर्तगाल और ब्रिटेन का अमेरिका में ले जाने वाले सभी गुलाम अफ्रीकियों का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा था।



जर्मनी के जोहान मोरित्ज़ रगेंडास द्वारा 1830 में बनाई दासता चित्रकला, उस दृश्य पर आधारित है जो उसने अपनी आँखों से अमरीका महाद्वीप (ब्राजील) को जाते हुए एक गुलाम जहाज में देखा था।

भले ही पुर्तगाल ने 1761 में गुलाम व्यापार को समाप्त कर दिया था, लेकिन फिर भी यह जारी रहा। हालाँकि ब्रिटेन ने भी 1807 में गुलाम व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन असल में यह 1833 का गुलामी उन्मूलन अधिनियम था जिसने अंततः ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर गुलामी को समाप्त कर दिया। उधर संयुक्त राज्य अमेरिका में, दक्षिणी राज्यों के दृढ़ संकल्प ने अलगाव और 1861–65 के गृह युद्ध का नेतृत्व किया। और अंततः 18 दिसंबर, 1865 को, तेरहवें संशोधन को संयुक्त राज्य के संविधान के हिस्से के रूप में अपनाया गया था। इस 13वें संशोधन ने आधिकारिक तौर पर गुलामी को समाप्त कर दिया, और केंटकी से डेलावेयर तक 1 लाख से अधिक गुलाम लोगों को तुरंत मुक्त कर दिया गया था।



बादाग्री के गबेरेफू सागर तट पर दो स्तम्भों को गाड़ कर संकेतक के रूप में बनाया हुआ 'वापसी का द्वार'।

इस तरह अलग–अलग चरणों में 19वीं शताब्दी में आधिकारिक तौर पर गुलामी को समाप्त कर दिया गया था, फिर भी अभी तक कई देशों में गुलामी कई तरह के अन्य विभिन्न रूपों में जारी हैं। वर्तमान में गुलामी के बारे में जानकारी के लिए एक उपयोगी स्रोत एंटी– स्लेवरी इंटरनेशनल है, जो लंदन, यूके में स्थित है।

डोर ऑफ रिटर्न

मुझे मालूम हुआ कि अफ्रीका में 'अफ्रीकी पुनर्जागरण' को 2015 से 2024 तक अफ्रीकी मूल के लोगों के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय दशक' के हिस्से के रूप में लिया गया है। जिसमें **'Door of Return initiative' 'डोर आफ रिटर्न इनिशिएटिव'** के तहत अफ्रीकी प्रवासी सदस्यों को महाद्वीप में वापस लाने का प्रयास करना है। इस पहल का नेतृत्व जमायका के एकोमपोंग (Accompong) के एक ऐतिहासिक मैरून समुदाय द्वारा किया जा रहा है जिसमें नाइजीरिया, जिम्बाब्वे और घाना आदि देश सहयोग कर रहे हैं।

इस 'वापसी का द्वार' 'Door of Return' के नाम का संदर्भ 'वापस न आने के द्वार' 'Door of No Return' से है जो ट्रांस–एटलांटिक गुलाम व्यापार की निशानी के तौर पर लगाया गया था। नाइजीरिया ने 24 अगस्त, 2017 को पहला 'वापसी का द्वार' 'Door of Return' स्मारक निशानी के तौर पर स्थापित किया।

इस पहल से यह उम्मीद है कि इससे पर्यटन, इंफ्रास्ट्रक्चर और रिन्यूएबल एनर्जी क्षेत्रों में उन्नति से अफ्रीका में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा और 'वापसी का द्वार' स्मारक बनाने से उम्मीद है कि अंतर महाद्वीप यात्रा को भी बढ़ावा मिलेगा। ये अफ्रीकी प्रवासियों के लिए अफ्रीका के खुलेपन का चिह्न भी है।

अफ्रीका के अन्य देशों जहाँ–जहाँ भी मैं गया वहां पर गुलाम व्यापार कैसा था, उसकी चर्चा इस सफरनामे के आने वाले अध्यायों में करेंगे, जब उन देशों के बारे में बात होगी। वो दास्तानें भी रौंगटे खड़े करने वाली हैं। फिलहाल, नाईजीरिया में आगे क्या हुआ इसका इंतजार अगले अध्याय तक कीजिए।

क्रमशः अगले अंक में ...



अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का
स्वागत करते हुए प्रधान निदेशक (राजभाषा)



समारोह का आनंद उठाते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय समापन समारोह में शामिल होने के लिए आते हुए

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124